نثار تیری چہل پہل پر ہزاروں عیدیں ربیع الاول
سوائے ابلیس کے جہاں میں سبھی تو خوشیاں منا رہے ہیں



अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के **1500 सालह जशने विलादत** के मौक़े पर **"मुहम्मद"** और **"अहमद"** नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिकाने रसूल के लिए एक नायाब तोहफा बनाम

मुहम्मद और अहमद के राज़



SEP.2025

रबीउल अव्वल 1447 हिजरी

मौलाना अबू शफीअ
मुहम्मद **शफीक खान** अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के **1500 सालह जशने विलादत** के मौक़े पर **"मुहम्मद"** और **"अहमद"** नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिकाने रसूल के लिए एक नायाब तोहफा बनाम

मुहम्मद और अहमद के राज़

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत	अल्लाह पाक के3000 नाम
हुज़ूरﷺ के1400 नाम	मुहम्मद ﷺ अल्लाह के मज़हर हैं
अहमद के अलिफ़ की हिक्मत	मुहम्मद के मीम की हिक्मत
नामे मुहम्मद नामे अल्लाह का मज़हर	चार हर्फ़ लाने की हिक्मत
नबी के नाम में कोई नुक़्ता ना होने की हिक्मत	ज़ेर की हरकत ना होने की हिक्मत
मुशद्दद हर्फ़ लाने की हिक्मत	मुशद्दद हर्फ़ को दो बार पढ़ने की हिक्मत
हर्फ़े मीम को ही मुशद्दद लाने की हिक्मत	अल्लाह कहने में होंठ ना मिलने की हिक्मत
मुहम्मद कहने में होंठ मिलने की हिक्मत	मुहम्मद कहने में दो बार होंठ मिलने की हिक्मत
सारी कायनात की कुंजी नामे मुहम्मद	9 की चार अजीब बातें
सिफ़ाते मुहम्मद सिफ़ाते ख़ुदा का मज़हर	अफआले मुहम्मद अफआले ख़ुदा का मज़हर
हर चीज़ में मुहम्मदﷺ का नाम कैसे है ?	ख़साइसे मुस्तफ़ाﷺ कितने हैं ?
अहमद नाम रखने की हिक्मत	मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत
आसमान में अहमद, ज़मीन में मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत	मुहम्मद और अहमद के अदद की हिक्मत
मुहम्मद के हर हर्फ़ की जुदा हिकमतें	मुहम्मद में दो मीम लाने की हिक्मत
मुहम्मदﷺ के दुनिया की जान होने की हिक्मत	शाने मुस्तफा का बयान क़ुरआनो हदीस से
मीलाद नामा	कलामो सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के **1500 सालह जशने विलादत** के मौक़े पर **“मुहम्मद”** और **“अहमद”** नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिकाने रसूल के लिए एक नायाब तोहफा बनाम

मुहम्मद और अहमद के राज़

अल्लाह पाक हमें अपने आखिरी नबी (صلی اللہ علیہ و سلم) की मुहब्बत अता फरमाए

रबीउल अव्वल 1447 हिजरी

SEP 2025 ईसवी

पेज :128 **क़ीमत : 125**

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

फ़ेहरिस्त

तकरीज़े जमील

शैखुल हदीस जमियातुल मदीना फैज़ाने सिद्दीके अकबर आगरा
हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल अज़ीज़ अत्तारी क़ादरी मिस्बाही

दामत बरकतुहुमुल आलिया

बिलाशुब्हा अल्लाहपाक ने इन्सान को अशरफ़ुल मख्लूक़ात बनाया , हुस्ने ज़ाहिर व बातिन का शाहकार बनाया, और ज़ेवरे इल्म व तकवा से मुज़य्यन फ़रमा कर सरों पर फ़ज़ीलत का ताजे ज़र्रीं सजाया और सोने पर सुहागा येह कि बिल उमूम तमाम तर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को इन्सानों में पैदा फ़रमाकर जामेउल फ़ज़ाइल बनाया और बिल ख़ुसूस सय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अफ़ज़लुल ख़लाइक बनाकर मख़लूक़ के अंदर पाए जाने वाले तमाम तर फ़ज़ाइल का मुंतही बनाया, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम तर फ़ज़ाइलो कमाल के ऐसे जामेअ हैं जिनके बहरे फ़ज़ाइल में ग़ोता ज़न होने वाला यूं कहते नज़र आते हैं :

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैरान हूँ मेरे शाह में क्या क्या कहूं तुझे
ला युम्किनुस्सनाउ कमा काना हक़्क़ुहू
बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

फ़ज़ाइले मुस्तफ़ा के अब्वाब तो बहुत वसीअ हैं सिर्फ नामे मुस्तफ़ा पर ग़ौर करें तो अक़्लें हैरान रह जाती हैं कि ख़ालिक़े मुस्तफ़ा ने वाक़ई मुस्तफ़ा को तमाम जिहात से मुस्तफ़ा बनाया है।

ज़ात हुई इंतिख़ाब वस्फ़ हुए लाजवाब
नाम हुआ मुस्तफ़ा तुम पे करोड़ों दुरूद
ग़ायतो इल्लत सबबे बहरे जहां तुम हो सब
तुम से बना तुम बेना तुम पे करोड़ों दुरूद

माशा अल्लाह फ़ाज़िले जलील, मुहिबे गिरामी वक़ार, हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी साहिब ने मुहम्मद और अहमद के राज़ नामी किताब लिख कर वासफ़ीन में अपना नाम दर्ज कराया है। येह किताब काफ़ी मेहनतो जाँ फ़िशानी से मुसन्निफ़ ममदूह ने लिखी है, अल्लाह पाक उनकी मेहनत क़बूल फ़रमा कर और ज़ोरे क़लम अता फ़रमाए और इस शेअर का मिस्दाक़ बनाए:

ख़ुदा ऐसी क़ुव्वत दे मेरे क़लम में
कि बदमज़हबों को सुधारा करूँ मैं

ममदूह एक ज़ी इस्तिदाद कुहना मश्क मुदर्रिस होने के साथ साथ तक़रीबन साठ किताबों के मुसन्निफ़ भी हैं। अल्लाह पाक इनकी काविशों को क़बूल फ़रमाए आमीन

अब्दुल अज़ीज़ अत्तारी क़ादरी मिस्बाही

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सिन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अहमद अ़त्तारी से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और हज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रहमान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में

दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ़ में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविया की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 35 किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईसवी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ :- अल आजिज़ मुह़म्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मुहम्मद और अहमद के राज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۔ (پ۲۶،الفتح ۲۹)

صَدَقَ اللّٰهُ وَ صَدَقَ رَسُوْلُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत

ऐ आशिक़ाने रसूल! इस फ़ितनों वाले दौर में तरह तरह की मुसीबतों, आज़माईशों, तकलीफों ने डेरा जमाया हुआ है जिसकी वजह से हर कोई परेशान है, और एक ही तरफ़ हर एक का ध्यान है कि मैं जो चाहूँ वह हो जाये, जो दुआ करूँ क़बूल हो जाये, जो अपने रब से माँगू मिल जाये। मगर ऐसा होता नहीं। ग़रीब चाहता है मैं अमीर हो जाऊं। अमीर, अमीर होने के बावजूद चाहता है मैं दुनिया का सबसे बड़ा अमीर बन जाऊं। बीमार चाहता है मैं सेहत मंद हो जाऊं। सेहत मंद चाहता है मैं हमेशा सेहत मंद बना रहूं। माँ बाप चाहते हैं हमारे बच्चे हमारे साथ अच्छा सुलूक करें। बच्चे चाहते हैं हमारे माँ बाप हमारी हर ख्वाहिश पूरी करें। शौहर चाहता है मेरी बीवी फ़र्मांबरदार रहे। बीवी चाहती है मेरा शौहर मेरे हुक्म के मुताबिक़ चले। हर किसी की कोई ना कोई ख्वाहिश, कोई ना कोई आरज़ू होती है। और इन्सान उस के लिए दुआ भी करता रहता है मगर उस की ख्वाहिश, उस की आरज़ू पूरी हो कोई ज़रुरी नहीं।

मगर आप से कोई अल्लाह पाक का वली कह दे:**मांग क्या मांगता है?** तो आप सच बताइए आपका दिल उम्मीद से भरेगा या नहीं ? कि यार अल्लाह पाक

के एक वली ने कहा है, नेक बन्दे ने कहा है, जिसको अल्लाह पाक की बारगाह में एक मक़ामो मर्तबा हासिल है, यक़ीनन अब मैं जो मागूँगा मुझे मिलेगा। क्यों ? क्योंकि

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

जब वली की निगाह से लोगों की तक़दीरें बदल जाती हैं तो वली की बात का क्या आलम होगा? वलियों की शान बहुत आलीशान है क्योंकि उनकी शान ख़ुद रब्बे रहमान ने क़ुरआन में बयान फ़रमाई है, इरशाद हुआ

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ (پ۱۱، یونس، ۶۲)

तर्जमा कंज़ुल ईमान:सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर ना कुछ ख़ौफ़ है ना कुछ ग़म।

आईए इसी ज़िम्न में मैं आपको एक वलिये कामिल की ज़बान की तासीर का वाक़िया सुनाता हूँ कि अल्लाह पाक ने उन कि ज़बान पर कैसी तासीर रखी है चुनांचे:

मुश्किल कुशा का दीदार

अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी,हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इलयास अत्तार कादरी अपने रिसाले **“बरेली से मदीना”** के पेज नंबर 8 पर आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह की एक करामत लिखते हैं कि बाज़ इस्लामी भाईयों को बाबुल मदीना के एक मुअम्मर कातिब अब्दुल मजीद बिन अब्दुल मालिक पीली भीती ने यह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ सुनाया:कहते हैं :

मेरी उम्र उस वक़्त 13 साल थी, मेरी सौतेली माँ का ज़ेहनी तवाज़ुन ख़राब हो गया था यानी पागल पन का असर ज़ाहिर हुआ, उन को ज़ंजीरों में जकड़ कर छत पर रखा जाता था, बहुत इलाज करवाया मगर शिफ़ा ना मिली । किसी के मशवरे और कहने पर मैं और मेरे वालिद साहब माँ को ज़ंजीरों में जकड़ कर जूँ तूँ पीलीभीत से बरेली शरीफ़ लाए, मेरी माँ मुसलसल गालियां बके जा रही थीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैह को देखते ही गरज कर कहा: **तुम कौन हो? यहाँ क्यों आए हो?** आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिहाई नरमी से फ़रमाया : **मुहतरमा**

आपकी बेहतरी के लिए हाज़िर हुआ हूँ। माँ बदस्तूर गरज कर बोलीं: **बड़े आए बेहतरी करने वाले,जो चाहती हूँ वह बेहतरी कर दोगे?** आला हज़रत ने फ़रमाया: **इन्शा अल्लाह यानी अगर अल्लाह पाक चाहेगा तो कर दूँगा।** मेरी माँ ने कहा:**''मौला अली मुश्किल कुशा का दीदार करवा दो!''**येह सुनते ही आला हज़रत ने अपने कंधे मुबारक से चादर शरीफ़ उतार कर अपने चेहरए मुबारक पर डाली और फ़ौरन हटा ली। अब हमारी नज़रों के सामने आला हज़रत नहीं बल्कि मौला अली मुश्किल कुशा अपना चेहरा चमकाते खड़े थे। मेरी बूढ़ी माँ निहायत संजीदगी के साथ जलवों में गुम थीं, मैंने और वालिदे मुहतरम ने भी ख़ूब जी भर कर जागती आँखों से मौला अली मुश्किल कुशा की ज़ियारत की। फिर मौला अली मुश्किल कुशा ने अपनी चादर मुबारक अपने चेहरे पर डाल कर हटाई तो अब आला हज़रत हमारे सामने मुस्कराते खड़े थे। फिर आला हज़रत ने एक शीशी में दवा अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया:दो ख़ुराक दवा है, एक ख़ुराक मरीज़ा को देना अगर ज़रूरत महसूस ना हो तो दूसरी ख़ुराक हरगिज़ मत देना। अल्लाह पाक के करम से मेरी माँ सिर्फ एक ख़ुराक (यानीDose) मैं तंदरुस्त हो गईं , जब तक ज़िंदा रहीं कोई दिमागी ख़राबी ना हुई। (बरेली से मदीना सफ़्हा 8. 9)

क़िस्मत में लाख पेच हों सौ बल हज़ार कज
येह सारी गुथ्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

ऐ आशिक़ाने रसूल!अल्लाह पाक ने अपने औलिया को येह ताक़त दी है कि वह जिसको जो चाहें अता करें, जिसकी चाहें झोली भरें, जिसकी चाहें मुरादें पूरी करें। और लोग इसी वजह से अल्लाह के वलियों की बारगाह में जाते भी हैं और अपनी मुरादें पाते भी हैं। अगर ऐसा ना होता तो सैकड़ों साल से मेरे ख़्वाजा के दरबार में मांगने वालों की भीड़ ना लगी रहती। आला हज़रत के भाई जान,मौलाना हसन रज़ा ख़ान,अपने नाअतिया दीवान ''ज़ौक़े नाअत'' में लिखते हैं:

ख़्वाजए हिंद वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

ऐ आशिक़ाने औलिया! एक है ख़ुद उनसे माँगना और एक है ख़ुद उनका

फ़रमाना कि **मांग क्या मांगता है?** दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। आदमी ख़ुद मांगे और उसे मिल जाये ज़रूरी नहीं, मगर अल्लाह का वली ख़ुद उस से कहे **मांग क्या मांगता है?** तो अब ज़रूर उसे मिलेगा। क्यों? क्योंकि अल्लाह पाक के वली ने फ़रमाया है।

अब ज़रा आप मुझे येह बताइए कि जब वलियों का येह मक़ामो मर्तबा है कि जो चाहें जिसे चाहें अता करें तो नबीयों का आलम क्या होगा? जब वली कहे कि मांग तुझे मिलेगा, तो मिल जाये। तो अगर नबी कहे कि मांग तुझे मिलेगा, तो क्या नहीं मिलेगा? यक़ीनन मिलेगा क्योंकि नबी का मर्तबा वली से बड़ा होता है। और अगर नबियों के नबी,अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा दें तो क्या ख़्याल है?

अल्लाहु अकबर! जो महबूबे ख़ुदा हैं, हबीबे किबरिया हैं, शहन्शाहे जूदो सखा हैं। आला हज़रत जिनकी बुलंद शान के बारे में लिखते हैं:

वाह क्या जूदो करम है शहे बत्हा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फ़रेरा तेरा

आसमां ख्वान ज़मीं ख्वान ज़माना मेहमान
साहिबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा

लेकिन अब यहां पर एक सवाल होता है कि अल्लाह के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अब मज़ारे पाक में तशरीफ़ ले गए, दुनिया से पर्दा फ़रमा गए, अब हमें नज़र नहीं आते, अब हमें कौन कहे कि मांग क्या मांगता है?

इस सवाल का जवाब येह है कि ऐ नबी के आशिक़ों परेशान मत हो, तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुमको एक ऐसा वज़ीफ़ा अता किया है अगर उस वज़ीफ़े को करोगे तो जो माँगोगे पाओगे, जो दुआ करोगे क़बूल होगी। और वह

वज़ीफ़ा येह है:

तिर्मिज़ी शरीफ में है हज़रते फुज़ाला बिन उबैद (رضی اللہ عنہ)से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया, उसने नमाज़ पढ़ी और फिर इन कलिमात से दुआ मांगी:**ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा।** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ नमाज़ी तूने जल्दी की। जब तू नमाज़ पढ़ कर बैठे तो पहले अल्लाह पाक की ऐसी हम्द कर जो उस के लाइक़ है, फिर मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ और उस के बाद दुआ मांग।

रावी का बयान है कि इस के बाद एक और शख़्श ने नमाज़ पढ़ी, फिर नमाज़ पढ़ कर अल्लाह पाक की हम्द बयान की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूदे पाक पढ़ा, तो अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: **ऐ नमाज़ी तू दुआ मांग, क़बूल की जाएगी।**

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی جامع الدعوات۔الخ، ۲۹۰/۵، حدیث:۳۴۸۷)

ऐ आशिक़ाने रसूल! बयान की हुई रिवायत से मालूम हुआ कि अगर दुआ मांगने वाला अपनी दुआ को क़बूल करवाना चाहता है तो उसे चाहिए कि दुआ के शुरू में अल्लाह पाक की हम्द करे और अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूदे पाक पढ़े फिर दुआ मांगे, उस की दुआ क़बूल होगी क्योंकि ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह करने वाले से फ़रमाया: **ऐ नमाज़ी तू दुआ माँग, क़बूल की जाएगी।**

बचें बेकार बातों से पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे महबूब पर हर दम दुरूदे पाक हम मौला

ऐ आशिक़ाने रसूल! इस हदीसे पाक से एक और बात मालूम हुई कि जो नमाज़ी नमाज़ के बाद अल्लाह पाक की हम्द बयान करे मिसाल के तौर पर 33 बार **"सुब्हानल्लाह"**, 33 बार **"अल हम्दुलिल्लाह"**, 34 बार **"अल्लाहु अकबर"**, फिर कम से कम 12 बार **"सल्लल्लाहु अला मुहम्मद"** पढ़े,और दुआ मांगे तो उस की जानिब ख़ुद ब ख़ुद अल्लाह के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम मुतवज्जेह होते हैं और जिसकी तरफ़ अल्लाह के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुतवज्जेह हो जाएं तो उस का दोनों जहान में बेड़ा पार है। आला हज़रत के शहज़ादे, हुज़ूर मुफ़तिए आज़म हिंद,मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान नूरी "सामाने बख्शिश" में लिखते हैं:

जो आप हों मेरे पल्ले पे फिर मुझे क्या डर
जिधर निगाहे करम हो ख़ुदा उधर हो जाये

लिहाज़ा नीयत कीजिए कि इंशा अल्लाह अब हर नमाज़ के बाद अल्लाह पाक की हम्दो सना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद पढ़ कर दुआ माँगेंगे।

सल्लू अलल हबीब सल्लल्लाहु अला मुहम्मद

1500 सालह मिलाद

ऐ आशिक़ाने रसूल!1447 हिजरी और 2025 ईसवी में होने वाला हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिलाद आम मिलाद नहीं है बल्कि येह 1500 सालह मिलाद है यानी इस साल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा हुए 1500 साल हो गए, लिहाज़ा इस मिलाद शरीफ़ को बड़े एहतिमाम के साथ और बड़े अच्छे अंदाज़ में मनाने की कोशिश कीजिए, हो सके तो इस साल चाँद नज़र आते ही अपने अपने घरों में 1500 सालह मिलाद की मुनासिबत से 15 झंडे लगाइए लाइटिंग कीजिए, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को पढ़िए।

अल्लाह पाक के करम से 1500 सालह नबीﷺ की मिलाद के मौके पर येह किताब लिखी गई है जिस में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान बयान की गई है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो नाम **अहमद** और **मुहम्मद** के राज़ को बयान किया गया है जिस को पढ़ कर आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा कि अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम में कैसे राज़ रखे हैं। लिहाज़ा इस किताब को खुद भी पढिए और ज़्यादा से ज़्यादा तकसीम कर के दूसरों तक पहुँचाने की नीयत कीजिए, अल्लाह पाक हमें अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैज़ान से मालामाल करे। आमीन

मुहम्मद ﷺ मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का

ऐ आशिक़ाने रसूल! मेरे आक़ा, आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज अलहाफ़िज़ अलकारी अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान अपने नातियाँ दीवान "हदाइक़े बख़्शिश" में लिखते हैं:

मुहम्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का
नज़र आता है इस कसरत में कुछ अंदाज़ वहदत का
मज़हरे हक़ हो तुम्हीं मुज़हिरे हक़ हो तुम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोड़ों दुरूद

इन दोनों शेअरों का मतलब येह है कि हमारे नबी की ज़ात और सिफ़ात यानी खूबियों में अल्लाह पाक के जलवे नज़र आते हैं और हमारे नबी अल्लाह पाक के मक़ामों मर्तबा को लोगों के सामने ज़ाहिर करने वाले हैं।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात और सिफ़ात में अल्लाह पाक के जलवे कैसे नज़र आते हैं ? और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के सामने अल्लाह पाक को कैसे ज़ाहिर करते हैं ? इस चीज़ को जानने के लिए इस किताब को लिखा गया है लिहाज़ा पढ़िए और अपने ईमान को ताज़ा कीजिए ,अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि वह हमें अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी मुहब्बत में जीना मरना नसीब फ़रमाए, और उनकी बरकतों, रहमतों से हम किनार फ़रमाए। आमीन

अल्लाह पाक के तीन हज़ार नाम

ऐ आशिक़ाने रसूल! यूँ तो अल्लाह पाक के **तीन हज़ार नाम** हैं, एक हज़ार नाम **फ़रिश्तों** को बताए गए, एक हज़ार नाम **अंबियाए किराम** को बताए गए, और तीन सौ नाम **तौरात** में हैं, तीन सौ नाम **ज़बूर** में हैं, और तीन सौ नाम **इंजील** में हैं, येह कुल दो हज़ार नौ सौ हुए, और 99 नाम **कुरआने पाक** में हैं, अब कुल नाम 2999 हुए, और एक नाम वह है जिसको सिर्फ़ अल्लाह पाक ही जानता है ।(تفسیر نعیمی جلد اول ص ۴۱)

अल्लाह पाक के तीन नामों में तीन हज़ार नाम

लेकिन **बिस्मिल्लाह** शरीफ में अल्लाह पाक के जो तीन नाम आए हैं : (1) अल्लाह (2) रहमान (3) रहीम। इन तीन में उन तीन हज़ार के मआनी पाए जाते हैं, लिहाज़ा जिसने इन तीन नामों से अल्लाह पाक को याद किया गोया उसने तमाम नामों से उस को याद किया। (تفسیر نعیمی جلد اول ص۴۱)

अल्लाह पाक के मशहूर नाम

लेकिन अल्लाह पाक के तीन हज़ार नामों में से मशहूर नाम 99 हैं, जो कि क़ुरआने पाक में मौजूद हैं, और उन तमाम नामों में लफ़्ज़े **"अल्लाह"** अल्लाह पाक का ज़ाती नाम है, और बाक़ी 2999 अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम हैं।

ज़ाती नाम उसे कहते हैं जो कि सिर्फ ज़ात को बताए, और सिफ़ाती नाम वह कहलाते हैं जो कि ज़ात के साथ सिफ़त यानी खूबी की तरफ़ भी इशारा करें।

हुज़ूर ﷺ के चौदह सौ नाम

इसी तरह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिफ़ाती नाम बे गिनती हैं। अल्लामा अहमद ख़तीब कस्तलानी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाँच सौ सिफ़ाती नाम जमा किये हैं। (المواہب اللدنیہ، الفصل الاول فی ذکر اسمائہ الشریفۃ ...الخ، ۱ / ۳۶۲ملخصًا)

सीरते शामी में तीन सौ और ज़्यादा किए और आला हज़रत का क़ौल मलफ़ूज़ाते आला हज़रत में लिखा है, आला हज़रत फ़रमाते हैं: मैंने छः सौ और मिलाए, कुल चौदह सौ नाम हुए, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम हर तबक़े में मुख़्तलिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं, दरिया में और नाम हैं, पहाड़ों में और हैं। (ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت، ص۹۲)

लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशहूर नाम 99 हैं,और उन में से ज़ाती नाम सिर्फ दो हैं, आसमानों में **अहमद** और ज़मीन में **मुहम्मद** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

अहमद के अलिफ़ की हिक्मत

{अहमद} में पहला हर्फ़ अलिफ़ है, और अलिफ़ का मख़रज हलक़ है जो

कि तमाम मख़ारिज में पहला मख़रज है, पस अहमद का अलिफ़ इस बात की जानिब इशारा कर रहा है कि जिस तरह अलिफ़ का मख़रज तमाम मख़ारिज में पहला मख़रज है इसी तरह अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तमाम मख़लूक़ात में सब से पहले मख़लूक़ हैं जैसा कि हदीसे नूरी में है:

हज़रते जाबिर रज़ी अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि अल्लाह पाक ने सबसे पहले किस चीज़ को पैदा फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया: ऐ जाबिर! वो तेरे नबी का नूर है जिसे अल्लाह पाक ने पैदा फ़रमाया।

(الجزء المفقود من المصنف عبد الرزاق، کتاب الایمان، باب فی تخلیق نور محمد صلی اللہ علیہ وسلم، ص ٦٣، الحدیث:١٨)

पस अलिफ़ का मखरज पहला मखरज है, और अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से पहले मखलूक़ और सब से पहले नबी हैं।

नीज़ अलिफ़' का अदद 1 है और गिन्तियों में पहली गिनती भी 1 है, इस से भी पता चलता है कि जिस तरह 1 तमाम गिन्तियों में पहली गिनती है इसी तरह अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तमाम मखलूक़ात में पहले मखलूक़ और नबियों में सब से पहले नबी हैं।

मुहम्मद के मीम की हिक्मत

मुहम्मद में पहला हर्फ़ मीम है और मीम का मख़रज होंठ है जो कि तमाम मख़ारिज में आख़िरी मख़रज है, पस मुहम्मद की मीम इस बात की जानिब इशारा कर रही है कि जिस तरह मीम का मख़रज तमाम मख़ारिज में आख़िरी मख़रज है इसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दुनिया में आने के ऐतिबार से तमाम नबियों में आख़िरी नबी हैं: जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीसे पाक में है:

اَنَا خَاتَمُ النَّبِیّٖنَ لَا نَبِیَّ بَعْدِی

तर्जमा:मैं आख़िरी नबी हूँ, मेरे बाद कोई नबी नहीं।(ترمذی، ج ٤، ص ٩٣، حدیث:٢٢٢٦)

पस जिस तरह मीम का मखरज आखिरी मखरज है उसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम नबियों में से आखिरी नबी हैं।

नीज़ मीम का अदद 40 है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऐलाने

नुबूव्वत की जानिब इशारा कर रहा है क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी नुबूव्वत का ऐलान उस वक़्त फ़रमाया जब आप की उम्र मुबारक चालीस साल थी।

मुहम्मद और अहमद नाम रखने की हिक्मत

अगर किसी के ज़ेहन में येह सवाल आए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद और अहमद क्यों रखा गया ? तो इस का जवाब येह है कि हम्द यानी अल्लाह पाक की तारीफ हमेशा आख़िर में होती है मिसाल के तौर पर जब हम खा पी कर फ़ारिग़ होते हैं तो अल्लाह पाक की हम्द यानी तारीफ करते हुए **अलहम्दु लिल्लाह** कहते हैं, जब कोई काम ख़त्म करते हैं तो **अलहम्दु लिल्लाह** कहते हैं, इसी तरह जब दुनिया का लम्बा सफ़र ख़त्म कर के जन्नती जन्नत में जाएगें तो कहेंगे:

وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ

اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۷۴﴾ (پ۲۴، الزمر، ۷۴)

:और वो कहेंगे सब खूबियां अल्लाह को जिसने अपना वादा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहाँ चाहें, तो क्या ही अच्छा सवाब काम करने वालों का।

और सूरहए यूनुस की आयत नंबर10 में इरशाद हुआ:

دَعْوٰىهُمْ فِیْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰﴾ (پ۱۱، یونس ۱۰)

तर्जमा: उन की दुआ उस (यानी जन्नत) में येह होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है और उन के मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है और उनकी दुआ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा (ख़ूबियों वाला) अल्लाह जो रब है सारे जहान का।

इसी दस्तूर के मुताबिक़ मुनासिब था कि जब नुबूव्वत और रिसालत का

सिल्सिला ख़त्म हो तो यहाँ भी अल्लाह पाक की हम्द हो, इसी लिए जब अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबूव्वत और रिसालत को ख़त्म फ़रमाया तो उन का नाम मुहम्मद और अहमद रखा जो कि हम्द के लफ़्ज़ से बने हैं ताकि यहाँ पर भी हम्द हो जाये।

मुहम्मदﷺ अल्लाह के मज़हर हैं

अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ज़ात और सिफ़ात दोनों का मज़हर (यानी ज़ाहिर करने वाले) बना कर इन्सान पर अपने पहचान के रास्ते खोल दिए हैं कि जिस को अल्लाह पाक के हुस्नो जमाल और क़ुदरत को देखना हो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देख ले। शायर लिखता हैं :

बे मिस्ल ख़ुदा का तू बे मिस्ल पयम्बर है
ज़ाहिर तेरी हस्ती से अल्लाह की यकताई

बे मिसाल का मज़हर भी बे मिसाल

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की सिफ़ात यानी खूबियों के मज़हर हैं यानी हमारे नबी की खूबियों में अल्लाह पाक की खूबियाँ नज़र आती हैं, और ख़ुदा की सिफ़ात बे मिस्लो बे मिसाल है जैसा कि अल्लाह पाक ने ख़ुद कुरआने पाक में फ़रमाया:

उस के मिस्ल कोई चीज़ नहीं "لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ"

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बे मिस्ल हैं। जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: اَيُّكُمْ مِثْلِيْ तुम में से कौन है मेरे जैसे ?

("صحیح البخاری"، کتاب الصوم، الحدیث:۱۹۶۵، ج۱، ص۶۴۲)

ख़ुदा अपनी ख़ालिक़ीयत(यानी खालिक़ होने) में बे मिसाल है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी अब्दीयत (अल्लाह का बंदा होने) में बे मिसाल हैं।

इमाम बूसीरी फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी खूबियों में शरीक से पाक हैं।

इसी लिए आला हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं:

मज़हरे हक़ हो तुम्हीं मुज़हिरे हक़ हो तुम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोड़ो दुरूद

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक के मज़हर हैं, ज़ात में ,सिफ़ात में, नामों में, कामों में।

ऐ आशिकाने रसूल ! हुज़ूर के 1500 सालह जशने पैदाइश के मौके पर इस किताब में आप इंशा अल्लाह येह जानेगें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक के नामों, अल्लाह पाक की सिफ़ात और अल्लाह के कामों के मज़हर कैसे हैं?

नामे मुहम्मद नामे अल्लाह का मज़हर है

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ाती नाम **मुहम्मद**, अल्लाह पाक के ज़ाती नाम **अल्लाह** का मज़हर है, और येह मज़हर होना कई तरीक़े से है चुनांचे पहला तरीक़ा मुलाहिज़ा हो:

मज़हरीयत का पहला तरीक़ा

मज़हरियत का पहला तरीक़ा येह है कि :

(1) **अल्लाह** में चार हुरूफ़ हैं। अलिफ़, लाम, लाम और ह

(1) इसी तरह **मुहम्मद** में चार हुरूफ़ हैं। मीम, ह, मीम, दाल

चार हर्फ़ होने की हिकमत

और इस चार में अजब लुत्फ़ और राज़ है, चुनांचे मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहि रहमा दीवाने सालिक में लिखते हैं:

रुसुल फ़रिश्ते चार चार कुतुब हैं दीन चार चार
सिलसिले दोनों चार चार लुत्फ़ अजब है चार में
आतिशो आबो ख़ाक बाद इन ही से सब का है सुबात
चार का सारा माजरा ख़त्म है चार यार में

(1) यानी बड़े फ़रिश्ते चार हैं: (1)जिब्राईल, (2)मीकाईल, (3)इसराफ़ील, (4) इज़राईल। अलैहिमुस्सलाम

(2) आसमानी किताबें भी चार हैं: (1)तौरात, (2)ज़बूर, (3)इंजील, (4)क़ुरआन।

(3) शरीअत के सिल्सिले भी चार हैं: (1)हनफ़ी, (2)मालिकी, (3)शाफेई, (4) हम्बली।

(4) तरीक़त के सिल्सिले भी चार हैं: (1)चिश्ती, (2)कादरी, (3)नक़्शबंदी, (4)सोहरवर्दी।

(5) पहले इन्सान हज़रते आदम अलैहिस्सलाम हैं जिनको (1) आग, (2) पानी, (3) हवा और (4) मिट्टी चार चीज़ों से बनाया गया।

(6) हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबूव्वत का ज़माना ख़त्म हो कर विलायत का सिल्सिला बाक़ी रहा इस मुनासिबत से चार यार होने चाहिए थे जो कि (1) हज़रते अबू बक्र, (2) हज़रते उमर, (3) हज़रते उस्मान, (4) हज़रते अली हैं।

(7) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इलावा उलुल अज़्म रसूल भी चार हैं (1) हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम, (2) हज़रते नूह अलैहिस्सलाम, (3) हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम (4) हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम।

(8) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया में आने के वक़्त चार नबी ज़िंदा हैं दो आसमानों में (1) हज़रते इदरीस अलैहिस्सलाम, (2) हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम। दो ज़मीन में (3) हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम, (4) हज़रते इल्यास अलैहिस्सलाम।

(9) क़ुरआन के हुरूफ़ भी चार हैं।

(10) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम में कलिमे भी चार हैं।

(11) ला इलाहा इल लल्लाह में भी चार कलिमे हैं।

(12) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत में उम्दा इबादतें भी चार हैं: (1)नमाज़, (2)रोज़ा, (3) ज़कात, (4) हज।

(13) कुरआने पाक में नामे मुहम्मद भी चार बार आया है।

(14) वुज़ू के फ़राइज़ भी चार हैं: (1) चेहरा धोना (2) कोहनी समेत दोनों हाथ धोना (3) चौथाई सर का मसह करना (4) दोनों पाँव टख़नों समेत धोना।

(15) तमाम मख़लूक़ात की तबीयतें भी चार हैं: (1) हरारत यानी गर्मी (2) बुरूदत यानी ठंडक (3) रुतूबत यानी तरी (4) युबूसत यानी ख़ुश्की।

मज़हरीयत का दूसरा तरीक़ा

मज़हरियत का दूसरा तरीक़ा येह है कि :

(2) अल्लाह में कोई नुक़्ता वाला हर्फ़ नहीं है।

(2) मुहम्मद में भी कोई नुक़्ता वाला हर्फ़ नहीं है।

नुक्ता ना होने की हिकमत

अल्लाह और नबी के नाम में नुक़्ते वाला हर्फ़ क्यों नहीं है ? इस का जवाब येह है कि नुक़्ता ऐब है, और अल्लाह पाक ने जिस तरह अपने नाम को ऐब से दूर रखा इसी तरह अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम को भी ऐब से दूर रखा। शायर कहता लिखता है :

ख़ूब नामे मुहम्मद है ऐ मोमिनों
जिस में नुक़्ता भी रब को गवारा नहीं
निसबते मुस्तफ़ा भी बड़ी चीज़ है
जिस की निसबत नहीं उस की बख्शिश नहीं
ख़ुद ख़ुदा ने नबी से फ़रमा दिया
जो तुम्हारा नहीं वह हमारा नहीं

कलिमए तय्यबा की ख़ुसूसीयात

ऐ आशिक़ाने रसूल! कलमए तय्यबा के दो जुज़ हैं: पहला जुज़ ला इलाहा इल्लाहु। दूसरा जुज़: मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह। इन दोनों जुज़ों में 12,12 हुरूफ़ हैं और सब के सब बिग़ैर नुक़्ते वाले हैं, पहले जुज़ में नुक़्ता ना होने में येह इशारा है कि अल्लाह पाक का कोई शरीक नहीं यहाँ तक कि एक नुक़्ता भी नहीं, और दूसरे जुज़ में इस लिए नुक़्ता नहीं कि यहाँ भी कोई मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सानी यानी उन के जैसा कोई नहीं, नीज़ नुक़्ता का ना होना इस बात की जानिब इशारा करता है कि अगर कोई मुस्लमान ज़रा सा भी अल्लाह और अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में नुक़्ता चीनी करेगा तो वो ईमान और इस्लाम से ख़ारिज हो जाएगा।

कलिमा के 12,12 हर्फ़ों की हिक्मत

कलिमा शरीफ़ के दोनों जुज़ों के12,12 हुरूफ़ हैं जो इस बात की जानिब इशारा करते हैं कि मुस्लमान अपने रोज़ाना के 24 घंटों में से 12 घंटे अल्लाह पाक की रिज़ा के मुताबिक़ गुज़ारे और बाक़ी 12 घंटे अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिज़ा के मुताबिक़ गुज़ारे। नीज़ पहले जुज़ के 12 हर्फ़ की तादाद नबी की पैदाइश की तारीख और दूसरे जुज़ के 12 हर्फों की तादाद नबी की विसाले ज़ाहिरी की तारीख का पता देते हैं।

इसी तरह जब उर्दू में अबू बकर सिद्दीक और उमर इब्नुल ख़त्ताब और उस्मान इब्ने अफ़्फान और अली बिन अबी तालिब लिखिये तो इन में भी 12, 12 हुरूफ़ हैं। अल्लाहु अकबर कैसी मुनासिबत है कलिमा शरीफ़ के दोनों जुज़ों और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के नामों में।

कलिमए तय्यबा की ख़ूबी

ला इलाहा इल्लल्लाह के अंदर एक ऐसी ख़ूबी भी है जो किसी कलिमे में नहीं है और वो येह कि एक मरता हुआ इन्सान जो बीमारी और कमज़ोरी की वजह से अपने होंठों को ना हिला पाता हो, कुछ बोलने की ताक़त ना हो ,वो भी बिग़ैर होंठ हिलाए आसानी से कलिमए तय्यबा पढ़ कर उस की बरकतों से मालामाल हो सकता है क्योंकि **ला इलाहा इल्लल्लाह** कहने में होंठ हिलते ही नहीं।

मज़हरीयत का तीसरा तरीक़ा

मज़हरियत का तीसरा तरीक़ा येह है कि :

(3) अल्लाह में एक तशदीद, दो हरकतें और एक सुकून है।

(3) इसी तरह मुहम्मद में एक तशदीद, दो हरकतें और एक सुकून है।

अल्लाह और मुहम्मद में ज़ेर की हरकत ना होने की हिकमत

ऐ आशिक़ाने मीलाद: अल्लाह में ज़बर और पेश की हरकत है। इसी तरह मुहम्मद में ज़बर और पेश की हरकत है। दोनों नामों में ज़ेर की हरकत नहीं है क्योंकि ज़ेर आजिज़ी, पस्ती और नर्मी का मअना देता है, जब कि ज़बर खुलेपन और अज़मत की निशानी है और पेश वक़ार और बुलंद मक़ाम की निशानी है।

पस अल्लाह पाक ने अपने नाम और अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम को ज़ेर की हरकत से पाक रखा क्योंकि ज़ेर नीचे की हरकत है और अल्लाह व रसूल की ज़ात और नाम दोनों बुलंदो बाला हैं इसी लिए इन दोनों नामों में ज़बर और पेश की हरकत आई है कि येह दोनों हरकत ऊपर आती हैं।

मज़हरीयत का चौथा तरीक़ा

मज़हरियत का चौथा तरीक़ा येह है कि :

(4) अल्लाह में एक हर्फ़ मुशद्दद है।

(4) मुहम्मद में एक हर्फ़ मुशद्दद है।

मुशद्दद हर्फ़ लाने की हिक्मत

और मुहम्मद में मुशद्दद हर्फ़ के लाने में भी बड़ी हिकमतें हैं, मुशद्दद हर्फ़ अपने से बाद वाले हर्फ़ को अपने से पहले वाले हर्फ़ से मिलाता है। मुशद्दद हर्फ़ अपने से पहले वाले हर्फ़ और अपने से बाद वाले हर्फ़ के बीच में राबिता और तअल्लुक़ पैदा करने के लिए होता है।

पस एक तरफ़ अल्लाह की ज़ात है, जिस को समझना मुम्किन नहीं, जिसकी बुलंदी की कोई हद नहीं।और दूसरी तरफ़ मख़लूक़ की ज़ात है, जिसकी पस्ती की कोई हद नहीं। पस मुहम्मद की **ह** से मुराद हलीमे हक़ीक़ी यानी अल्लाह है, और **दाल** से मुराद बंदे हैं। और **मीम** से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात है।

एक तरफ़ बुलंदी दूसरी तरफ़ पस्ती

बन्दा अल्लाह को देख नहीं सकता, अल्लाह को छू नहीं सकता, अल्लाह को समझ नहीं सकता,अल्लाह की पहचान मुश्किल है, एक तरफ़ बुलंदियों में सबसे

बुलंद तर ज़ात, दूसरी तरफ़ पस्तियों में सबसे पस्त तर ज़ात, दोनों का मिलाप हो तो कैसे ? दोनों के दर्मियान राबिता और तअल्लुक़ हो तो कैसे?

इन्सान हैरत में था, ज़बाने हाल से कह रहा था :ऐ अल्लाह! तेरी मारिफ़त यानी पहचान की मंज़िल तक कैसे पहुँचूं ? मैं कमज़ोर हूँ और फिर मुझे बहकाने के लिए क़दम क़दम पर शैतान है। इन्सान परेशान हो कर सोचता था कि कमज़ोर को ताक़तवर से क्या निसबत, कहाँ इन्सान और कहाँ रहमान, ना उस की तजल्लीयों तक इंसान की निगाहें पहुंच सकती हैं, ना उस के दीदार की ताब ला सकता है।

इन्सान इसी कशमकश में था कि

इन्सान इसी कशमकश और सोंच में था कि क़ुदरत ने बर वक़्त उस की दस्तगीरी फ़रमाई और अल्लाह ने बीच में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेज दिया। कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

उधर	अल्लाह	से	वासिल
इधर	मख़लूक़	में	शामिल

पस मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात ख़ालिक़ और मख़लूक़ के बीच वास्ता है, ताकि मख़लूक़ को उस के ख़ालिक़ का फ़ैज़ मिल सके। कि **मीम** से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात है जो ख़ालिक़ और मख़लूक़ दोनों से मिली हुई है, इसी तरह मुहम्मद की **मीम** ह और दाल दोनों से मिली हुई है।

मुशद्दद हर्फ़ को दो बार पढ़े जाने की हिकमत

ऐ आशिक़ाने रसूल! अरबी, फारसी और उर्दू ज़बान में मुशद्दद हर्फ़ को दो बार पढ़ा जाता है, एक बार पहले वाले हर्फ़ से मिला कर और दूसरी बार बाद वाले हर्फ़ से मिला कर, जैसे कि लफ्ज़े **जन्नत** कि नून का तअल्लुक जीम से भी है और नून का तअल्लुक ता से भी है, और बीच में ख़ुद नून है, अगर ता नून के वास्ते के बिगैर जीम से मिलना चाहे तो नहीं मिल सकता, अगर ता को जीम से मिलना है तो नून के वास्ते से मिलना पड़ेगा, पस नून जीम का फ़ैज़ ता तक पहुंचा रहा है, इसी तरह मुहम्मद की मीम का तअल्लुक अल्लाह की ज़ात से भी है और मख़लूक़ से भी है।

पस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात ने मख्लूक़ का रिश्ता उस के खालिक़ से जोड़ दिया क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

उधर	अल्लाह	से	वासिल
इधर	मख्लूक़	में	शामिल

यानी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक से भी मिले हुए हैं और मखलूक़ में भी शामिल हैं।

मुशद्दद हर्फ़ में एक और अजीब बात

मुशद्दद हर्फ़ में एक और अजीब बात है और वह येह कि मुशद्दद हर्फ़ पहली बार साकिन कर के पढ़ा जाता है और साकिन होना मोहताजी है, पस जन्नत का नून, जीम का मोहताज है, और दूसरी बार हरकत दे कर पढ़ा जाता है जिस को मुतहर्रिक कहते हैं और मुतहर्रिक होना ख़ुद मुख़्तार होना है, पस मुहम्मद की हा से मुराद अल्लाह पाक है और मीम से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात है और दाल से मुराद बन्दे हैं, लिहाज़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के मोहताज हैं और अल्लाह के सिवा किसी के मोहताज नहीं और बंदे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोहताज हैं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक से फ़ैज़ लेकर बन्दों को अता फ़रमाते हैं।

मीम हर्फ़ ही को मुशद्दद लाने की हिकमत

ऐ आशिक़ाने रसूल! यहाँ पर एक सवाल पैदा होता है कि मुहम्मद में मीम ही को क्यों मुशद्दद लाया गया? हा को ले आते, या दाल को ले आते, तो क्या क़बाहत और बुराई थी ?

इस का जवाब येह है कि अल्लाह में लाम हर्फ़ मुशद्दद है,और मुहम्मद में मीम हर्फ़ मुशद्दद है, और लाम और मीम के दर्मियान एक ऐसा तअल्लुक़ है जो हा और लाम, हा और दाल के दर्मियान नहीं है, और वह तअल्लुक़ येह कि लाम का आख़िरी हर्फ़ मीम है, पस अगर हा को मुशद्दद लाते तो लाम के साथ हा का कोई तअल्लुक़ नहीं, और अगर दाल को मुशद्दद लाते तब भी लाम के साथ कोई

तअल्लुक़ नहीं, इस लिए मीम ही को मुशद्दद लाया गया क्योंकि लाम और मीम के बीच एक गहरी मुनासिबत और तअल्लुक़ है। **अल्लाहु अकबर!**

मुहम्मद के तीसरे हर्फ़ को मुशद्दद लाने की हिक्मत

इसी तरह एक और सवाल होता है कि मुहम्मद के तीसरे हर्फ़ ही को क्यों मुशद्दद लाया गया ? तो इस सवाल का जवाब येह है कि अल्लाह का दूसरा हर्फ़ मुशद्दद है अगर मुहम्मद के पहले हर्फ़ को मुशद्दद लाते तो मुहम्मद का अल्लाह से बड़ा होना लाज़िम आता, हालाँकि अल्लाह से बड़ा कोई नहीं, और अगर मुहम्मद के दूसरे हर्फ़ को मुशद्दद लाते तो मुहम्मद का अल्लाह से बराबरी हो जाती, हालाँकि अल्लाह का कोई शरीक नहीं, और जो किसी को अल्लाह पाक से बड़ा या बराबर जाने वो काफ़िर है, पस इन दोनों खराबियों से बचने और शाने उलूहिय्यत और शाने रिसालत में फ़र्क़ बतलाने के लिए मुहम्मद के तीसरे हर्फ़ को मुशद्दद लाया गया, जो इस बात की जानिब इशारा है कि मुहम्मद ना तो अल्लाह पाक से बड़े हैं और ना ही अल्लाह के बराबर हैं बल्कि अल्लाह के बंदे और रसूल हैं जिनका मक़ामो मर्तबा अल्लाह पाक के मक़ामो मर्तबा के बाद है।

एक सवाल और हो सकता है और वो येह कि मुहम्मद के चौथे हर्फ़ को मुशद्दद ले आते तो क्या खराबी थी ? इस सवाल का जवाब येह है कि अगर मुहम्मद के चौथे हर्फ़ को मुशद्दद लाते तो अल्लाह और मुहम्मद के बीच फ़ासिला हो जाता कि अल्लाह का दूसरा हर्फ़ मुशद्दद और मुहम्मद का चौथा हर्फ़ मुशद्दद, बीच में तीसरे हर्फ़ का फ़ासिला, जिस से येह वहम होता कि अल्लाह और मुहम्मद के बीच में कोई तीसरा भी है। पस इस वहम को दूर करने के लिए मुहम्मद के तीसरे हर्फ़ को मुशद्दद ला कर येह बता दिया गया कि अल्लाह पाक के बाद अगर किसी का मक़ामो मर्तबा है तो वो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़ामो मर्तबा है।

या साहिबल जमाल व या सैय्यदल बशर
मिन वजहिकल मुनीर लकद नूव्विरल क़मर
ला युमकिनुस्सना कमा काना हक़्क़ुहू
बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

हर पैग़ंबर का ओहदा बड़ा है लेकिन आक़ा का मन्सब जुदा है
वो इमामे सफ़े अन्बिया हैं उन का रुत्बा बड़ों से बड़ा है
कोई लफ़्ज़ों से कैसे बता दे, उनके रुतबे की हद है तो क्या है
हमने अपने बड़ों से सुना है, सिर्फ अल्लाह ही उन से बड़ा है

मुहम्मद के मुशद्दद हर्फ़ को फ़त्हा यानी ज़बर के बाद लाया गया ताकि अल्लाह से मुनासिबत हो जाये क्योंकि अल्लाह का मुशद्दद हर्फ़ भी फ़त्हा यानी ज़बर के बाद आया है। अगर मुहम्मद की ह को मुशद्दद लाया जाता तो येह मुनासिबत बर क़रार ना रहती।

अर्ज़े मुसन्निफ़

ऐ आशिक़ाने रसूल! यक़ीन जानिये इस किताब को लिखने से पहले मुझे भी मुहम्मद और अहमद के इतने राज़ मालूम नहीं थे लेकिन जब इस किताब को लिखना शुरू किया तो 64 पेज पर मुश्तमिल एक रिसाला तरतीब दिया और नीयत थी कि इसी रिसाले को मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की1500 साला जशने विलादत पर छपवा कर आशिकाने रसूल में तकसीम करूँगा, इस रिसाले की तसहीह भी करा ली, हिन्दी में भी टाइप कर के तैयार कर दिया, लेकिन एक इस्लामी भाई ने कहा कि जब आप इस मौज़ू पर लिख रहे हैं तो 64 पेज का रिसाला ही क्यों ? बल्कि एक ज़ख़ीम यानी मोटी किताब लिखिए, वर्ना तो येह रिसाला दीगर किताब में मिल कर गुम हो जाएगा। उनकी येह बात सगे अत्तार के समझ में आई और मज़ीद इस मौज़ू के मुताअल्लिक़ छान बीन शुरू की, मवाद मिलता गया और मैं लिखता गया, कई सारी हिकमतें वो हैं जो लिखने के दौरान मिन जानिबिल्लाह और मिन जानिबिल रसूल ज़ेहन में आईं। अलहम्दु लिल्लाह अला निआमिल्लाह।

मुहम्मद में तशदीद और अहमद में तशदीद ना होने की हिक्मत

ऐ आशिक़ाने रसूल! अहमद और मुहम्मद में जितना ग़ौर करते चले जाईए उतने राज़ खुलते चले जाऐंगे, और ऐसा क्यों ना हो कि येह आम नाम नहीं हैं बल्कि येह वो नाम हैं जिनको ख़ुद अल्लाह पाक ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए पसंद फ़रमाया है।

उन्हीं राज़ों में से एक राज़ येह भी है कि मुहम्मद में तशदीद लाई गई और अहमद में तशदीद नहीं लाई गई, इस में क्या हिक्मत है ?

इस की हिक्मत येह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो नाम ज़ाती हैं मुहम्मद ज़मीन में और अहमद आसमानों में। इन्सान दुनिया में आ कर शैतान के बहकाने पर सीधे रास्ते से हट जाता है उस का रिश्ता अपने रब से कट जाता है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बंदों को उनके रब से मिलाने के लिए आए हैं इसलिए मुहम्मद में तश्दीद लाई गई ताकि येह मिलाने पर दलालत करे और अहमद में तश्दीद नहीं लाई गई क्योंकि अहमद आसमानों का नाम है और आसमान वाले यानी फ़रिश्ते सीधे रास्ते से नहीं बहकते बल्कि वो तो मासूम हैं उनका रिश्ता अपने रब से हमेशा जुड़ा रहता है वो रात दिन अपने रब की इबादत में मसरूफ़ हैं लिहाज़ा उनको मिलाने वाले की कोई ज़रूरत नहीं इसलिए अहमद में तश्दीद नहीं लाई गई।

मुहम्मद के पहले हर्फ़ पर पेश और अहमद के पहले हर्फ़ पर ज़बर होने की हिक्मत

ऐ आशिक़ाने रसूल! मुहम्मद और अहमद के राज़ों में से एक राज़ येह भी है कि मुहम्मद के पहले हर्फ़ पर पेश और अहमद के पहले हर्फ़ पर ज़बर क्यों लाया गया ? उस का उलट कर लिया जाता कि अहमद के पहले हर्फ़ पर पेश और मुहम्मद के पहले हर्फ़ पर ज़बर लाया जाता।

इस का जवाब येह है कि मुहम्मद के पहले हर्फ़ पर पेश लाना और अहमद के पहले हर्फ़ पर ज़बर लाना येह भी हिक्मत से भरा हुआ है और वो हिक्मत येह है कि दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी आने वाले थे जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने जैसा कहेंगे या अपने से कमतर जानेंगे, इसलिए मुहम्मद के पहले हर्फ़ को पेश दिया गया ताकि इस बात की जानिब इशारा हो जाये कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने जैसा या अपने से कमतर ना जानना बल्कि जिस तरह पेश की हरकत ऊपर आती है और वो तमाम हरकात में भारी हरकत है ऐसे ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी सारी मख़लूक़ से बुलंदो बाला हैं और सबसे भारी हैं।

जैसा कि सुनने दारमी की हदीस में है हज़रते अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ी अल्लाह अन्हु से रिवायत है, फ़रमाते हैं मैंने अर्ज़ किया या रसूललल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप ने कैसे जाना कि आप अल्लाह के नबी हैं यहाँ तक कि आपने यक़ीन कर लिया ? तो फ़रमाया: ऐ अबूज़र मेरे पास दो फ़रिश्ते आए जब कि मैं मक्का के बाज़ पथरीले इलाक़ा में था, तो उन में से एक तो ज़मीन की तरफ़ आ गया और दूसरा आसमानो ज़मीन के बीच रहा, उन में से एक ने अपने साथी से कहा क्या येह वो ही हैं ? उसने कहा हाँ! उसने कहा :कि इन्हें एक शख़्स से तौलो, मैं इस से तौला गया तो मैं वज़नी हुआ, फिर उसने कहा कि इन्हें दस से तौलो, तो मैं उन से तौला गया, मैं उन पर वज़नी हुआ, फिर उसने कहा कि इन्हें सौ से तौलो, मैं उन से तौला गया, मैं उन पर भारी हुआ, वो बोला इन्हें हज़ार से तौलो, मैं उन से तौला गया तो मैं उन पर भारी हो गया, गोया मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वो पल्ला हल्का होने की वजह से मुझ पर गिरे पड़ते हैं, तो उन में से एक ने अपने साथी से कहा कि अगर तुम इन्हें इनकी पूरी उम्मत से तौलो, तो भी येह सब पर भारी होंगे।

(مراۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، ج۸ ص۳۳)

अल्लाहु अकबर! क्या शान है हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की।नीज़ मुहम्मद में पेश लाने की एक हिक्मत येह भी है कि पेश का मअना है आगे यानी पेश रौ होना और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पेश रौ हैं जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैं तमाम रसूलों का पेश रौ हूँ और बतौरे फ़ख़र नहीं कहता, मैं तमाम पैग़म्बरों का ख़ातिम हूँ और बतौरे फ़ख़र नहीं कहता और मैं सबसे पहली शफ़ाअत करने वाला और सबसे पहला शफ़ाअत क़बूल किया गया हूँ और बवज्हे फ़ख़र इरशाद नहीं करता।

(سنن الدارمی، حدیث ۵۰، باب ما اعطی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من الفضل دار المحاسن قاہرہ مصر، ۳۱/۱)

लिहाज़ा दुनिया में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने जैसा कहने वाले पैदा होने वाले थे इसलिए मुहम्मद के पहले हर्फ़ को पेश दिया गया लेकिन आसमानों में अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा होने का दावे करने वाला कोई

नहीं क्योंकि आसमान वाले अहमद का मक़ामो मर्तबा जानते हैं इसलिए अहमद में पेश लाने की कोई ज़रूरत नहीं।

इल्मुल आदाद के ऐतिबार से मुमासिलत की हिकमतें

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह और मुहम्मद में कई तरह से मुनासिबत है उन्हीं में से एक येह भी है कि इल्मुल आदाद के ऐतिबार से हुरूफ़े तहज्जी (यानी अलिफ़ से ले कर य तक के हुरूफ़) की कई किस्में हैं मसलन:

हुरूफ़े अहाद: उन हरूफ़े तहज्जी को कहते हैं जिन का अदद 1 से 9 तक आए यानी 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9,

हुरूफ़े अशारात: उन हरूफ़े तहज्जी को कहते हैं जिनका अदद दहाई में आए मसलन: 10, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90,

(1) अल्लाह में दो हर्फ़ अहाद हैं:

(1) अलिफ़ जिसका अदद 1 है। (2) ह जिसका अदद 5 है।

अल्लाह के दोनों हुरूफ़े अहाद के अदद ताक़ हैं 1 और 5

(1) मुहम्मद में भी दो हर्फ़ अहाद हैं:

(1) ह जिसका अदद 8 है। (2) दाल जिसका अदद 4 है।

मुहम्मद के दोनों हुरूफ़े अहाद के अदद जुफ़्त हैं 4 और 8

(2) अल्लाह में दो हर्फ़ अशरात हैं:

(1) लाम जिसका अदद 30 है। (2) लाम जिसका अदद 30 है।

अल्लाह के दोनों हुरूफ़े अशरात के अदद बराबर हैं।

(2) मुहम्मद में भी दो हर्फ़ अशरात हैं:

(1) मीम जिसका अदद 40 है। (2) मीम जिसका अदद 40 है।

मुहम्मद के दोनों हुरूफ़े अशरात के अदद बराबर हैं।

(3) अल्लाह में एक जिन्स के दो हर्फ़ लाम, लाम हैं।

(3) मुहम्मद' में भी एक जिन्स के दो हर्फ़ मीम, मीम हैं।

अल्लाहु अकबर! दोनों नामों में कैसी मुनासिबत है।

(4) अल्लाह के आदाद 66 जुफ़्त हैं।

(4) मुहम्मद के आदाद 92 जुफ़्त हैं।

(5) अल्लाह के आदाद 66 की इकाई 6, 2 पर तक़सीम होती है।

(5) मुहम्मद के आदाद 92 की इकाई 2, भी 2 पर तक़सीम होती है।

(6) अल्लाह के आदाद 66 की दहाई 60, 3 पर तक़सीम होती है।

(6) मुहम्मद के आदाद 92 की दहाई 90, भी 3 पर तक़सीम होती है।

(7) अल्लाह के आदाद 66, की इकाई 6 और दहाई 6, को आपस में ज़र्ब (यानी गुड़ा) कर के हासिले ज़र्ब को जमा कीजिए तो 9 का अदद आएगा मिसाल के तौर पर:6 x 6 =36 पस 36 में 3 और 6 है जब इन को आपस में मिलाया तो 3+6= 9 हुआ।

(7) मुहम्मद के आदाद 92 की इकाई 2 और दहाई 9 को आपस में ज़र्ब (यानी गुड़ा कर के हासिले ज़र्ब को जमा कीजिए तो 9 का अदद आएगा मिसाल के तौर पर:2 x 9 =18 पस 18 में 1 और 8 है जब इन को आपस में मिलाया तो 1+8= 9 हुआ।

9 की4अजीब बातें

ऐ आशिक़ाने रसूल! इस 9 के अदद में कई अजीब बातें हैं कि जो अल्लाह पाक की ज़ात में अपने आप को फ़ना कर देता है वो 9 का अदद बन जाता है जैसा कि मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी रहमतुल्लाह अलैहि अपने कलाम में लिखते हैं:

तेरी ज़ात में जो फ़ना हुआ, वह फ़ना से नौ का अदद बना
जो उसे मिटाए वो ख़ुद मिटे, वो है बाक़ी उस को फ़ना नहीं

ऐ आशिक़ाने रसूल! यहां पर एक सवाल होता है कि जो अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाता है वो नौ का अदद ही क्यों बनता है ?

इस सवाल का जवाब येह है कि वो 9 का अदद इसलिए बनता है कि 9 के अदद में चार बातें अजीब हैं चुनांचे:

पहली अजीब बात

पहली अजीब बात येह कि 1 से 8 तक गिनती लिख लें फिर दोनों किनारों में से एक एक गिनती ले कर जोड़िये तो नौ बन जाएगा मिसाल के तौर पर: एक किनारे से 1 लिया और दूसरे किनारे से 8 लिया और दोनों को जोड़ा तो 1+8= 9 हुआ, फिर एक किनारे से 2 लिया और दूसरे किनारे से 7 लिया और दोनों को जोड़ा तो 2+7=9 हुआ, फिर एक किनारे से 3 लिया और दूसरे किनारे से 6 लिया और दोनों को जोड़ा तो 3+6= 9 हुआ, फिर एक किनारे से 4 लिया और दूसरे किनारे से 5 और दोनों को जोड़ा तो 4+5=9 हुआ।

1 2 3 4 5 6 7 8

(1+8=9) (2+7=9) (3+6=9) (4+5=9)

दूसरी अजीब बात

दूसरी अजीब बात येह कि सारे 9 के पहाड़े में हर जगह 9 बनेगा मिसाल के तौर पर: 9 का पहाड़ा पढ़िए 9 दुना 18, अब 18 के 1 और 8 को जोड़िए तो 1+8=9 हुआ, 9 तिरिक 27, अब 27 के 2 और 7 को आपस में जोड़िए तो 2+7=9 हुआ इसी तरह बाक़ी को कीजिए। मसलन :(9 x 1=9)इस में 9 है ही

(9 x 2=18)1+8 =9 (9 x 3=27)2+7=9 (9 x 4=36)3+6=9

(9 x 5=45)4+5=9 (9 x 6=54)5+4=9 (9 x 7=63)6+3=9

(9 x 8=72)7+2=9 (9 x 9=81)8+1=9 (9x10=90) इस में 9 है ही

तीसरी अजीब बात

तीसरी अजीब बात येह है कि जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करेंगे और उस में आने वाले अदद को आपस में जोड़ेंगे तो जवाब 9 ही आएगा मिसाल के तौर पर:

12 का पहाड़ा 9 बार पढ़ा तो 108 आया अब 108 में आने वाले अदद 1 और 8 को जोड़ा तो 1+8=9 हुआ इसी तरह

13 नौवीं ,117 1+1+7=9

14 नौवीं,126 1+2+6=9

जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करें और हासिल होने वाली गिनती को जब आपस में मिलाएं तो सब में 9 बनेंगे।

चौथी अजीब बात

चौथी अजीब बात येह है कि 9 का अदद किसी अदद के अंदर नहीं मगर सब अदद 9 के अंदर हैं, मिसाल के तौर पर 9 में 8 भी है, 7 भी है, 6 भी है, 5 भी है, 4 भी है, 3 भी है, 2 भी है और 1 भी है। लेकिन 1 में 9 नहीं है, 2 में 9 नहीं है, 3 में 9 नहीं है, 4 में 9 नहीं है, 5 में 9 नहीं है, 6 में 9 नहीं है, 7 में 9 नहीं है, 8 में 9 नहीं है।

1 से 8 तक दुनिया वमा फ़ीहा हैं

ऐसा इसलिए कि 1 से 8 तक दुनिया वमा फ़ीहा (यानी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है) हैं, पस जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो कर 9 का अदद बन गए तो उन के अंदर दुनिया वमा फ़ीहा आ गया, अब अगर किसी को दुनिया की कोई भी चीज़ लेनी है नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए, उनसे मिलेगी, कि जिस तरह 9 के पास 8 भी है, 7 भी है, 6 भी है, 5 भी है, 4 भी है, 3 भी है, 2 भी है, 1 भी है, इसी तरह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास औलाद, दौलत, सर्वत, हुकूमत, सदारत, वज़ारत, इक़्तिदार, इफ़्तिख़ार, जन्नत वग़ैरा दुनिया और आखिरत की हर चीज़ है।

इल्मे जफ़र के ऐतिबार से अल्लाह और मुहम्मद में मुनासिबत

अल्लाह और मुहम्मद में इल्मे जफ़र के ऐतिबार से भी मुनासिबत है चुनांचे: अल्लाह को मलफ़ूज़ी कर के लिखें फिर उस की तल्ख़ीस करें यानी मुकर्रर हर्फ़ निकाल दें, अब बाक़ी बचे हुरूफ़ के आदाद को इल्मे जफ़र के तरीक़े पर बसीत को सग़ीर और सग़ीर को असग़र बनाएँ तो आख़िर में 3 बाक़ी रहेगा मिसाल के तौर पर:

अल्लाह को इस तरह लिखें: **अलिफ़**:अ, ल, फ़, **लाम**: ल, अ, म, **लाम**: ल, अ, म, **हा**: ह, अ।

इस में अ, ल, म, मुकर्रर आए हैं लिहाज़ा इन को हटा दीजिए तो: अ, ल, फ़, म, ह, बाक़ी रहा। अब इन के आदाद येह हुए: 1+30+80+40+5

तल्ख़ीस (यानी जिस में ज़ीरो है उस का ज़ीरो हटा दीजिए) के बाद आदाद कम हो कर 1+3+8+4+5 रह गए। अब सब को आपस में जोड़ दीजिए तो 21 हुआ, अब 21 के 2 को 1 के साथ जमा किया तो 1+2=3 का अदद हासिल हुआ।

बिल्कुल इसी तरह अगर मुहम्मद को इस क़ाएदे से गुज़ारें तो आख़िर में 3 आएगा मिसाल के तौर पर:

मुहम्मद को इस तरह लिखें: **मीम:** म, य, म, **हा:** ह, अ, **मीम:** म, य, म, **दाल:** द, अ, ल,

इस में म, य, अ, मुकर्रर आए हैं, मुकर्रर हर्फ़ों को कम करने के बाद म, य, ह, अ, द, ल, बचे। उनके आदाद हुए: 40+10+8+1+4+30 तल्ख़ीस (यानी जिस में ज़ीरो है उस का ज़ीरो हटा दीजिए) के बाद 4+1+8+1+4+3 बचा, अब इन सब को जोड़िए तो 21 हुआ , फिर 21 के 2 और 1 को जमा किया तो 2+1=3 का अदद हासिल हुआ। अल्लाह में भी 3 आया और मुहम्मद में भी 3 आया।

अल्लाह कहने में होंठ ना मिलने की हिकमत

(1) ला इलाहा इल्लल्लाह कहने में होंठ नहीं मिलते।

(2) और अल्लाह कहने में भी होंठ नहीं मिलते।

ऐसा क्यों? ऐसा इस लिए कि :होंठो का ना मिलना बता रहा है कि अल्लाह की ज़ात सबसे जुदा है, वह किसी की तरह नहीं, उसे कोई देख नहीं सकता, कोई उस से मिल नहीं सकता, पस जिस तरह उस की ज़ात सब से जुदा और अलग है, ऐसे ही उस के नाम में भी होंठ नहीं मिलते बल्कि जुदा रहते हैं, अगर अल्लाह के नाम में होंठ मिलते तो अल्लाह की ज़ात और अल्लाह के नाम में मुनासिबत ना होती।

मुहम्मद कहने में होंठ मिलने की हिकमत

मगर मुहम्मद कहने में दोनों होंठ मिल जाते हैं, इसलिए कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मख़लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाने के लिए आए हैं, अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वास्ता ना हो तो मख़लूक़ ख़ालिक़ से बहुत दूर हो जाए। तभी तो मुफ़्तिए आज़म हिंद अलैहि रहमा लिखते हैं:

येह सीधा रास्ता हक़ का बताने आए हैं
येह हक़ के बन्दों को हक़ से मिलाने आए हैं

और आपको जान कर तअज्जुब होगा, कि मुहम्मद कहने पर होंठ एक बार नहीं बल्कि दो बार आपस में मिलते हैं।

आप कहें मुहम्मद, आप के होंठ पहली बार पहली मीम के वक़्त मिले,और दूसरी बार दूसरी मीम के वक़्त मिले, इस दो बार मिलने में भी हिक्मत है ।

दो बार होंठ मिलने की पहली हिकमत

(1) **पहली हिकमत** तो येह कि: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पहले तो अल्लाह से मिले हुए हैं, और दूसरे मख़लूक़ से भी मिले हुए हैं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तअल्लुक़ ख़ालिक़ से भी है और ख़ालिक़ के मख़लूक़ से भी है, इन दोनों तअल्लुक़ात की बिना पर मुहम्मद कहने पर होंठ दो बार आपस में मिलते हैं, कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम:

उधर अल्लाह से वासिल
इधर मख़लूक़ में शामिल

दो बार होंठ मिलने की दूसरी हिकमत

(2) **दूसरी हिकमत** येह कि : मख़लूक़ ने जब अल्लाह पाक की शान को देखा तो उस के गीत गाने लगी, अल्लाह से मुहब्बत करने लगी, और चाहा कि ऐसे शान वाले को बोसा दिया जाये यानी चूमा जाए, लेकिन कुछ हासिल ना हुआ, क्योंकि अल्लाह को देखा नहीं जा सकता। तो जवाब आया ऐ लोगों अल्लाह जिस्म से पाक है, उस को कोई देख नहीं सकता, उस को कोई छू नहीं सकता, उस को कोई हाथ नहीं लगा सकता, अगर अल्लाह को मुझे चूमने और बोसा देने की आरज़ू हो तो कोई बात नहीं, अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के मज़हर हैं, येह ख्वाहिश उनको चूम कर मिटा लिया करो।

मगर इस ज़माने के लोगों ने अर्ज़ किया:अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो पर्दा फ़रमा गए अब हम उन्हें देख नहीं सकते, हम क्या करें? तो जवाब आया परेशान मत हो, तुम्हें भी ख़ाली हाथ जाने नहीं दिया जाएगा, तुम लोग मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लेकर इस शौक़ को पूरा कर लिया करो, और अपनी बेताबी को बुझा लिया करो। जब तुम अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लोगे तुम्हारे होंठ दो बार आपस में मिलेंगे,

एक बार अल्लाह की ताज़ीम के लिए और दूसरी बार मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम के लिए।

एक बार अल्लाह के शुक्र के लिए और दूसरी बार महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शुक्र के लिए।

मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो शान हैं:

(1) एक शान येह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात का रब्त यानी तअल्लुक़ अल्लाह पाक की ज़ात के साथ भी है।

(2) और दूसरी शान येह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रब्त यानी तअल्लुक़ मख़लूक़ के साथ भी है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्ला अलैह लिखते हैं:

लब पर आ जाता है जब नामे जनाब
मुँह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जां बेताब
अपने लब चूम लिया करते हैं

अपने मौला की है बस शान अज़ीम
जानवर भी करें जिनकी ताज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम
पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं

मज़हरीयत का पाँचवां तरीक़ा

(5) अल्लाह का नाम तो है ही मअना वाला जैसा कि क़ुरआने पाक में है:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۔ (پ٣، البقره ٢٥٥)

तर्जमा: अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह आप ज़िंदा और औरों का क़ाइम रखने वाला।

मगर अल्लाह के नाम से एक एक हर्फ़ हटाते जाइए, फिर भी मअना वाला लफ़्ज़ रहेगा। येह ख़ासीयत किसी और नाम में नहीं है, मसलन:

हर्फ़ों को हटाने के बाद भी मअना

(1) अल्लाह से अलिफ़ हटाइए तो लिल्लाह बचा, जिसका मअना है **अल्लाह के लिए** क़ुरआने पाक में आया: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ(۱) (پ۱، الفاتحہ۱)

तर्जमा: सब खूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का।

(2) अल्लाह से एक लाम हटाइए, और अलिफ़ लगाइये, तो इलाहुन बना, जिसका मअना है माबूद जैसा कि क़ुरआने पाक में है:

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ۠(۱۶۳) ۔(پ۲، البقرہ ۱۶۳)

तर्जमा:और तुम्हारा माबूद एक माबूद है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं मगर वही बड़ी रहमत वाला।

(3) अल्लाह से अलिफ़ और एक लाम को हटाईए, तो लहु बचा, जिसका मअना है **उस के लिए**, और येह भी क़ुरआने पाक में अल्लाह के लिए आया है:

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ۔(پ۳ البقرہ ۲۵۵)

तर्जमा: उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में।

(4) अल्लाह से अलिफ़ और दोनों लाम को हटाईए, तो हु बचा, येह भी अल्लाह का नाम है, जिसका मअना है **तू ही तू** । आला हज़रत के शहज़ादे, मुफ़्तिए आज़म हिंद, मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान अलैहि रहमा सामाने बख़्शिश में लिखते हैं:

क़ल्ब को उसकी रूयत की है आरज़ू
जिसका जल्वा है आलम में हर चार सू
बल्कि ख़ुद नफ़्स में है वह सुब्हानहू
अर्श पर है मगर अर्श को जुस्तुजू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

इसी तरह मुहम्मद तो है ही मअना वाला मगर मुहम्मद से एक एक हर्फ़ हटाते जाईए, फिर भी मअना वाला लफ़्ज़ रहेगा। मसलन:मुहम्मद में मीम ,हा, मीम, दाल चार हर्फ़ हैं अब

(1) मुहम्मद से मीम को हटाईए, तो हम्द बचा, जिसका मअना है तारीफ़।

(2) मुहम्मद से हा को हटाईए, और मीम को लगाइये, तो मुमिद्दुन बना, जिसका मअना है मदद करने वाला।

(3) मुहम्मद से मीम और हा दोनों को हटाईए, तो मद्दुन बचा, जिसका मअना है खींचना, यानी मख़लूक़ को खींच कर ख़ालिक़ तक पहुंचाना।

(4) मुहम्मद से पहली मीम, हा और दूसरी मीम को हटाईए, तो सिर्फ दाल बच्चा, और दाल का मअना है रहनुमाई करने वाला।

ऐ आशिक़ाने रसूल! देखा आपने नामे मुहम्मद से हर्फ़ हटाते हटाते जब आखिर में दाल बचा तो वह अल्लाह की ज़ात की तरफ़ रहनुमाई कर रहा है,और डंके की चोट पर कह रहा है कि अल्लाह है।

कोई तो है जो निज़ामे हस्ती चला रहा है
वही ख़ुदा है वही ख़ुदा है
तलाश उस को ना कर बुतों में
वह है बदलती हुई रुतों में
जो दिन को रात और रात को दिन
बना रहा है वही ख़ुदा है

ऐसी ख़ुसूसीयत किसी और नाम में नहीं

ऐ आशिक़ाने रसूल! जो ख़ुसूसियत अल्लाह पाक ने अपने और अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम में रखी है वह ख़ुसूसियत किसी और नाम में नहीं रखी, मसलन मेरा नाम शफ़ीक़ है, जिसका मअना है शफ़क़त करने वाला, मगर आप इस से श को हटाईए तो फीक बचा, जिसका कोई मअना नहीं, फिर फी को भी हटाईए तो क़ बचा, उस का भी कोई मअना नहीं । **अल्लाहु अकबर!**

मुहम्मद की सिफ़ात अल्लाह की सिफ़ात का मज़हर

ऐ आशिक़ाने रसूल! आप नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में अल्लाह पाक के नाम की मज़हरीयत मुलाहिज़ा कर चुके, अब देखिए कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफ़ात (यानी खूबियों)में अल्लाह पाक की सिफ़ात (यानी खूबियों) की मज़हरीयत कैसी है?

आप क़ुरआने पाक को उठा कर देखिए, क़ुरआने पाक के शुरू में अल्लाह पाक के नाम लिखे होते हैं और क़ुरआने पाक के पीछे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम लिखे होते हैं, उस में आप देखेंगे कि जो सिफ़ाती नाम अल्लाह के हैं वही सिफ़ाती नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भी हैं। चुनांचे:

अल्लाह	रहीम	है	मुहम्मदﷺ	भी	रहीम	हैं
अल्लाह	करीम	है	मुहम्मदﷺ	भी	करीम	हैं
अल्लाह	नासिर	है	मुहम्मदﷺ	भी	नासिर	हैं
अल्लाह	रऊफ़	है	मुहम्मदﷺ	भी	रऊफ़	हैं
अल्लाह	हादी	है	मुहम्मदﷺ	भी	हादी	हैं
अल्लाह	शाफ़ी	है	मुहम्मदﷺ	भी	शाफ़ी	हैं
अल्लाह	मुअमिन	है	मुहम्मदﷺ	भी	मुअमिन	हैं
अल्लाह	अव्वल	है	मुहम्मदﷺ	भी	अव्वल	हैं
अल्लाह	ज़ाहिर	है	मुहम्मदﷺ	भी	ज़ाहिर	हैं
अल्लाह	बातिन	है	मुहम्मदﷺ	भी	बातिन	हैं
अल्लाह	अज़ीज़	है	मुहम्मदﷺ	भी	अज़ीज़	हैं
अल्लाह	शकूर	है	मुहम्मदﷺ	भी	शकूर	हैं

तभी तो आला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत रहमतुल्ला अलैह बरेली की सर ज़मीन से पुकार कर कहते हैं:

मुहम्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का
नज़र आता है इस कसरत में कुछ अंदाज़ वहदत का

और येह बात ज़ेहन में रखें कि मैं इस मुआमले में अपनी तहक़ीक़ नहीं पेश कर रहा, अगर आपको यक़ीन ना हो तो आप क़ुरआने पाक में देख सकते हैं।

अल्लाह पाक ने अपने महबूब को अपने नाम अता फ़रमाए

क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्ला अलैह ने अपनी किताब शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाते हैं: अल्लाह पाक ने अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने नामों में से बहुत नाम अता फ़रमाए। (الشفا، ج۱، ص۲۳۶)

अल्लाह पाक ने अपने महबूब ﷺ को कितने नाम अता फ़रमाए?

अल्लाह पाक ने अपने प्यारे प्यारे नामों में से अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितने नाम अता फ़रमाए? इस के बारे में उलमाए किराम के कई क़ौल हैं, चुनांचे आला हज़रत रहमतुल्ला अलैह के वालिद हज़रत नक़ी अली ख़ान रहमतुल्ला अलैह 67 नाम बयान फ़रमाए जबकि इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई रहमतुल्ला अलैह ने सत्तर70 नाम अता होने का क़ौल इख़तियार फ़रमाया ।(انموذج اللبیب، ص۲۸)

इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी रहमतुल्ला अलैह ने अल्लाह करीम के 99 नाम दलील के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए नक़्ल फ़रमाए ।

(جواہر البحار، ج۱، ص۲۷۵)

ख़ौफ़ है गर कुछ रोज़े जज़ा का
दिल पे जमा कर नाम ख़ुदा का
विर्द करो असमाए मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व वसल्लम

नक़ी अली ख़ान रहमतुल्ला अलैह फ़रमाते हैं: अल्लाह पाक ने अपने नामों में से किसी पैग़ंबर को एक नाम, और किसी को दो, किसी को तीन नाम दिए, मिसाल के तौर पर हज़रते इस्माईल और हज़रते इस्हाक़ को अलीम और हलीम, हज़रते इब्राहीम को हलीम और नूह को शकूर, और हज़रते मूसा को करीम, और हज़रते यूसुफ़ को हफ़ीज़, और हज़रते यहया और हज़रते ईसा को बर फ़रमाया, जबकि हमारे

नबी मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने बरकत वाले नामों में से 67 नाम अता किए जो येह हैं:

(1) हकीम	(2) रहीम	(3) सलाम	(4) मुअमिन
(5) मुहैमिनु	(6) अज़ीज़	(7) जब्बार	(8) फ़त्ताह
(9) अलीम	(10) राफ़ेअ	(11) समीअ	(12) बसीर
(13) अद्ल	(14) ख़बीर	(15) हलीम	(16) अज़ीम
(17) ग़फ़ूर	(18) शकूर	(19) अली	(20) हफ़ीज़
(21) हबीब	(22) करीम	(23) रकीब	(24) मुजीब
(25) वासेअ	(26) हकम	(27) शहीद	(28) हक़
(29) वकील	(30) क़वी	(31) मतीन	(32) वली
(33) हमीद	(34) माजिद	(35) अव्वल	(36) आखिर
(37) ज़ाहिर	(38) बातिन	(39) बर	(40) अफ़ूअ
(41) रऊफ़	(42) मुक़सित	(43) जामेअ	(44) ग़नी
(45) मुअती	(46) नूर	(47) हादी	(48) रशीद
(49) सबूर	(50) क़ाइम	(51) हाफ़िज़	(52)ज़ुलक़ूव्वत
(53) ज़ुलफ़ज़्ल	(54) कफ़ील	(55) शाकिर	(56) क़रीब
(57) मुबीन	(58) बुरहान	(59) मुनीब	(60) काफ़ी
(61) आलिम	(62) नसीर	(63) सादिक़	(64) अहद
(65) मुनीर	(66) वाफ़ी	(67) अकरम	

(سرور القلوب، ص۳۱۸)

सारी कायनात की कुंजी नामे मुहम्मद

ऐ आशिक़ाने रसूल! सारी कायनात की कुंजी यानी चाबी नामे मुहम्मद है और येह ऐसे कि अल्लाह पाक ने सूरहए अनआम की आयत नंबर 59 में इरशाद फ़रमाया:

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ۔ (پ۷، الانعام۵۹)

तर्जमा: और ग़ैब की चाबियाँ उसी के पास हैं।

इसी तरह अल्लाह पाक ने सूरहए ज़ुमर की आयत नंबर 63 में इरशाद फ़रमाया:

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۔ (پ،۲۴،الزمر،۶۳)

तर्जमा: आसमानों और ज़मीनों की चाबियाँ उसी के लिए हैं।

इन दोनों आयतों में मफ़ातीह और मकालीद के लफ़्ज़ हैं जिनके मअना चाबियाँ हैं, अगर मफ़ातीह का पहला और आख़िरी हर्फ़ यानी म और ह और इसी तरह मकालीद का पहला और आख़िरी हर्फ़ यानी म और द लिया जाये तो म ह म द यानी मुहम्मद बनता है। इस से येह बात ज़ाहिर हो जाती है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात सारी कायनात की कुंजी यानी चाबी है।

इन्सान नामे मुहम्मद का नक़्श है

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक ने इन्सान की पैदाइश को बयान करते हुए कुराने पाक में इरशाद फ़रमाया:

وَ التِّيْنِ وَ الزَّيْتُوْنِ ﴿۱﴾ وَ طُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿۲﴾ وَ هٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿۳﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْۤ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿۴﴾ (پ،۳۰،التین،۴،۳،۲،۱)

तर्जमा: इंजीर की क़सम, और ज़ैतून की क़सम, और तूरे सीना की क़सम, और इस अमान वाले शहर की क़सम, बेशक हमने आदमी को अहसने तक़वीम यानी अच्छी सूरत पर बनाया।

इन आयात के मज़मून की क़दरो क़ीमत का अंदाज़ा इस बात से लगाइए कि अल्लाह पाक ने इंजीर की क़सम,ज़ैतून की क़सम, तूरे सीना की क़सम, अमन वाले शहर मक्का की क़सम याद फ़रमाने के बाद इरशाद फ़रमाया: हमने इन्सान की तख्लीक़ अह्सने तक्वीम पर की। येह अह्सने तक्वीम क्या है ? जिसकी ख़ातिर अल्लाह पाक ने तमाम किबरियाइयों, अज़्मतों ,बुलंदीयों और रिफ़अतों का मालिक होने के बावजूद एक, दो, तीन नहीं चार चार कस्में इरशाद फ़रमाईं। येह कस्में अहसने तक़वीम के हुस्नो जमाल, रानाई व ज़ेबाई, इज़्ज़तो शर्फ़, अज़मतो रिफ़अत की दलील हैं। इस बात का सबूत हैं कि अल्लाह पाक के नज़्दीक येह अहसने तक़वीम

बड़ी ही शानो शौकत वाली, बड़ी ही मुअज़्ज़ज़ो मुकर्रम चीज़ है। येह अह्सने तक़वीम क्या है? येह अहसने तक़वीम नामे मुहम्मद का नक़्श है। कि अल्लाह पाक ने बनी आदम को मुकर्रम मख्लूक़ बनाया। और इंसान की करामत येह है कि वो नामे मुहम्मद की शक्ल पर पैदा हुआ। चुनांचे:

इन्सान का गोल सर मुहम्मद की मीम है। और उस के हाथ ह के मानिंद हैं। पेट दूसरी मीम की तरह और उस के दोनों पांव दाल की तरह हैं।

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह सोते वक़्त हाथ के अंगूठे को शहादत की उंगली पर रख लेते ताकि उंगलियों से लफ़्ज़ अल्लाह बन जाये । यूँही आप रहमतुल्लाह अलैह पैर फैला कर कभी ना सोते बल्कि दाहिनी (यानी सीधी) करवट लेट कर दोनों हाथों को मिला कर सर के नीचे रख लेते और पांव मुबारक समेट लेते, इस तरह जिस्म से लफ़्ज़ मुहम्मद बन जाता। (हयाते आला हज़रत जि 1,सफ़हा 99)

येह हैं अल्लाह पाक के चाहने वालों और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे आशिकों की अदाऐं।

नामे ख़ुदा है हाथ में नामे नबी है ज़ात में
मुहरे ग़ुलामी है पड़ी लिखे हुए हैं नाम दो

यूँही नमाज़ मेअराजुल मोअमिनीन यानी मुसलमानों की मेअराज इसलिए है कि इस में अहमद का नक़्शा बनना पड़ता है। क़ियाम अलिफ़ की सूरत है। रुकूअ की हालत में हम ह का नक़्शा पेश करते हैं। जबकि सज्दे की हालत में मीम और काअदा की हालत में दाल का मंज़र होता है। इन तमाम का मजमुआ अहमद हुआ।

यही वजह है कि नमाज़ अगर्चे मुख़्तसर सी इबादत है लेकिन इस में ख़ालिक़े कायनात के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे नामी इस्मे गिरामी अहमद का नक़्शा बनना पड़ता है इसलिए येह तमाम इबादतों की सरताज क़रार पाई। क़ियामत के दिन दुनिया देखेगी कि जहन्नम वालों को दोज़ख़ में दाख़िल करने से पहले उनको इन्सानी शक्ल से महरूम कर दिया जाएगा। उनके सर से अह्सने तक्वीम की चादर उतार कर उनको मैदाने हश्र में ज़लील व रुसवा किया जाएगा।

अफ़्आले मुहम्मदﷺ अफ़्आले ख़ुदा का मज़हर

ऐ आशिक़ाने रसूल! आप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम में अल्लाह के नाम की मज़हरीयत, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफ़ात में अल्लाह पाक की सिफ़ात की मज़हरीयत मुलाहज़ा कर चुके, अब देखिए कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अफ़्आल यानी कामों में अल्लाह के अफ़्आल यानी कामों की मज़हरीयत कैसी है। चुनांचे:

अफ़आल में मज़हरीयत की पहली मिसाल

(1) अल्लाह पाक ने कुरआने पाक के पारा 9 सूरहए अन्फ़ाल की आयत नंबर17 में इरशाद फ़रमाया:

وَ مَا رَمَیۡتَ اِذۡ رَمَیۡتَ وَ لٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی ۔ (پ۹الانفال۱۷)

तर्जमा कंज़ुल ईमान:और ऐ महबूब! वह ख़ाक (मिट्टी) जो तुमने फेंकी तुमने ना फेंकी थी बल्कि अल्लाह ने फेंकी।

इस आयत के शाने नुज़ूल से मुताअल्लिक़ जम्हूर मुफ़स्सिरीन का मुख्तार क़ौल येह है कि जब जंग हुनैन में काफिरों और मुस्लमानों की फ़ौजें एक दूसरे के सामने हुईं तो अल्लाह के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुठ्ठी ख़ाक यानी मिट्टी काफ़िरों के चेहरे पर मारी और फ़रमाया: उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएं।

वह मिट्टी तमाम काफ़िरों की आँखों में पड़ी और सहाबए किराम बढ़ कर उन्हें क़त्ल और गिरफ़्तार करने लगे। इस मौक़ा पर अल्लाह पाक ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। और इरशाद फरमाया :

तर्जमा कंज़ुल ईमान:और ऐ महबूब! वह ख़ाक (मिट्टी) जो तुमने फेंकी तुमने ना फेंकी थी बल्कि अल्लाह ने फेंकी।

इस आयत में गौर तलब बात येह है कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मुठ्ठी में ख़ाक लेकर कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंकी, मगर अल्लाह पाक फ़रमा रहा है ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह ख़ाक जो आपने फेंकी, आपने नहीं फेंकी, बल्कि वह तो अल्लाह ने फेंकी है।

अल्लाहु अकबर! यहां पर काम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है मगर अल्लाह पाक मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके काम को अपना काम इरशाद फ़रमा रहा है।

आला हज़रत रहमतुल्ला अलैह इस वाक़िए की मंज़र कशी करते हुए क्या ख़ूब फ़रमाते हैं:

मैं तेरे हाथों के सदक़े कैसी कंकरियां थीं वह
जिनसे इतने काफ़िरों का दफ़्अतन मुँह फिर गया

अफ़आल में मज़हरीयत की दूसरी मिसाल

(2) अफ़आल यानी कामों में मज़हरीयत की दूसरी मिसाल पारा 26 की सूरहए फ़तह की आयत नंबर 10 है चुनांचे इरशाद हुआ:

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ۚ (پ۲۶،الفتح ۱۰)

तर्जमा:वह जो तुम्हारी बैअत करते हैं वह तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है।

इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि हुदैबिया के मक़ाम पर अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम से बैअत ली थी, जिसको बैअते रिज़वान भी कहा जाता है, पस बैअत लेते वक़्त की मंज़र कशी करते हुए अल्लाह पाक ने फ़रमाया: महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो लोग आप से बैअत करते हैं, वह तो अल्लाह से बैअत करते हैं, यानी महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बैअत करने को अपना बैअत करना बताया, और फिर फ़रमाया: बैअत लेने वालों के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, हालाँकि हाथ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का था, लेकिन फ़रमाया उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है।

क्योंकि रसूल से बैअत करना अल्लाह पाक ही से बैअत करना है जैसा कि रसूल की इताअत अल्लाह पाक की इताअत है। पस इस मक़ाम पर भी अल्लाह पाक ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ेअल यानी काम को अपने फ़ेअल यानी काम का मज़हर क़रार दिया।

अफ़आल में मज़हरीयत की तीसरी मिसाल

(3) अफ़आल में मज़हरीयत की तीसरी मिसाल पारा 27, की सूरहए नज्म की आयत नंबर 3 और 4 है चुनांचे इरशाद हुआ:

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى (۳) اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ يُّوْحٰى (۴)۔(پ۲۷،النجم ۳۔۴)

तर्जमा: और वह कोई बात अपनी ख्वाहिश से नहीं करते। वह तो नहीं मगर वही जो उन्हीं की जाती है।

इस मक़ाम पर अल्लाह पाक ने फ़रमाया:महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप अपनी ख्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं, जो फ़रमाते हैं वह अल्लाह की जानिब से वही होती है और इस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुल्क़े अज़ीम और आपकी आला मंज़िलत का बयान है।

और इस में येह भी इशारा है कि नबी अल्लाह पाक के ज़ातो सिफ़ात और अफ़आल में फ़ना के उस आला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी ना रहा और जो कुछ फ़रमाते हैं वह अल्लाह की वही होती है यानी अल्लाह पाक का कलाम होता है ।

पस इस आयते करीमा में पहले इस बात का इन्कार किया गया कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप अपनी ख्वाहिश से कुछ कहते ही नहीं,हाँ जो भी आप कहते हैं वह तो मेरी वही होती है यानी मेरा कलाम होता है ।अल्लाहु अकबर!

यहां पर भी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काम को अपना काम ठहराया। पस मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक की अज़मतो शान के मज़हरे कामिल और अकमल हैं गोया वहदत के जल्वे कसरत में नज़र आ रहे हैं, क्या शान है महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की। शायर कहता है :

महबूबे ख़ुदा का कोई हम पाया नहीं है
इस शान का मुर्सल तो कोई आया नहीं है
बे मिस्ल ने महबूब को बे मिस्ल बनाया है
वहाँ जिस्म नहीं तो यहाँ साया नहीं है

क्या शाने अहमदी का चमन में ज़हूर है
हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नूर है

तभी तो एक दूसरा शायर कहता है:

तुम ज़ाते ख़ुदा से ना जुदा हो ना ख़ुदा हो
अल्लाह ही को मालूम है क्या जानिए क्या हो

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुदा ना जानो और ख़ुदा से जुदा भी ना जानो, और अगर पूछो कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या हैं? तो सुनो:

अगर ख़ामोश रहूं मैं तो तू ही है सब कुछ
अगर कुछ कहा तो तेरा हुस्न हो गया महदूद

हर चीज़ में मुहम्मद ﷺ का नूर है

पस हर फूल, हर दरख्त, बल्कि दुनिया की हर चीज़ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नूर है, और शाने अहमदी का ज़हूर है। येह बातें हक़ीक़त हैं, लेकिन येह सारी चीज़ें उस को दिखाई देती हैं जो रूहानी आँख वाला है, और रूहानी आँख से मुराद ज़ाहिरी आँख की रोशनी नहीं बल्कि दिल की रोशनी है, डाक्टर इक़बाल कहता है:

दिले बीना भी तलब कर ख़ुदा से
आँख का नूर दिल का नूर नहीं होता

और दूसरा शायर कहता है:

आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदए कोर को क्या नज़र आए क्या देखे

येह राह ही अलग है, इस का दस्तूर ही जुदा है, क्यों? इस लिए कि येह दुनिया का मुआमला नहीं है, बल्कि अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुआमला है। दुनिया का मुआमला तो येह है कि तराज़ू का पलड़ा भारी हो तो वह नीचे को आता है ,और क़ियामत में मीज़ान का नेकी वाला पलड़ा भारी होगा तो वह ऊपर को उठेगा।

उल्टी ही चाल चलते हैं दीवान गाने इश्क़

ऐ आशिक़ाने रसूल! दुनिया में किसी को देखने और इस की ज़ियारत करने के लिए आँखों को खोलना पड़ता है, जबकि अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जल्वों को देखने के लिए आँखों को बंद करना पड़ता है।

उल्टी ही चाल चलते हैं दीवान गाने इश्क़
आँखों को बंद करते हैं दीदार के लिए

तो येह देखने की बात है जो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जल्वे देख लेता है तो वह यूं कहता है:

ना कोई माह वश तुम सा ना कोई महजबीं तुम सा
हसीनों में हो तुम ऐसे कि महबूबे ख़ुदा तुम हो
मैं सदक़े अबिंया के यूं तो महबूब हैं लेकिन
जो सब प्यारों से प्यारा है वह महबूबे ख़ुदा तुम हो
हसीनों में तुम्हीं तुम हो नबियों में तुम्हीं तुम हो
कि महबूबे ख़ुदा तुम हो नबीयुल अंबिया तुम हो
तुम्हारे हुस्ने रंगीं की झलक है सब हसीनो में
बहारों की बहारों में बहारे जाँ फ़िज़ा तुम हो
ज़मीं में है चमक किस की फ़लक पर है झलक किस की
महे ख़ुर्शीद सय्यारों सितारों की ज़िया तुम हो
वह ला सानी हो तुम आक़ा नहीं सानी कोई जिसका
अगर है दूसरा कोई तो अपना दूसरा तुम हो

जब तक देखा ना था

जब हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अज़ीज़े मिस्र ने बाज़ारे मिस्र से ख़रीद कर घर लाया, और हज़रत ज़ुलेख़ा ने जब हुस्ने यूसुफ़ी को देखा तो फ़रेफ़्ता हो गईं, इस पर अशराफ़े मिस्र की औरतों ने ज़ुलेख़ा को ताना दिया कि इतनी हसीनो जमील होने के बावजूद एक ग़ुलाम को दिल दे बैठी, भला ग़ुलाम को भी दिल दिया जाता है। जब ज़ुलेख़ा ने सुना कि अशराफ़े मिस्र की औरतें उसे हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

की मुहब्बत पर मलामत करती हैं तो उस ने चाहा कि वह अपना उज़्र उनके सामने ज़ाहिर कर दें । चुनांचे उस के लिए ज़ुलेख़ा ने एक दावत का एहतिमाम किया और इस दावत में अशराफ़े मिस्र की चालीस औरतों को दावत दिया, उन में वह सब औरतें भी थीं जिन्होंने ज़ुलेखा पर मलामत की थी, ज़ुलेख़ा ने इन औरतों को बहुत इज़्ज़तो एहतिराम के साथ मेहमान बनाया और उन के लिए निहायत पुर तकल्लुफ़ नशिस्तें तैयार कर दीं, ताकि उन पर वह बहुत इज़्ज़तो आराम से तकिए लगा कर बैठें, दस्तरख्वान बिछाए गए और तरह तरह के खाने और मेवे उस पर रख दिए गए। फिर ज़ुलेख़ा ने उन में से हर एक को एक एक छुरी दे दी ताकि वह इस से खाने के लिए गोश्त काटें और मेवे तराश लें, उस के बाद ज़ुलेख़ा ने हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की कि आप इन औरतों के सामने निकल आईए। पहले तो आप अलैहिस्सलाम ने इस से इनकार किया लेकिन जब इसरारो ताकीद ज़्यादा हुई तो तशरीफ़ ले आए, जब औरतों ने हज़रते यूसुफ अलैहिस्सलाम को देखा तो उन की बड़ाई पुकार उठीं क्योंकि उन्होंने इस आलम अफ़रोज़ जमाल के साथ नबुव्वतो रिसालत के अनवार, आजिज़ी व इन्किसारी के आसार, शाहाना हैबतो इक़्तिदार और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ों और हसीनों जमील सूरतों की तरफ़ से बेनियाज़ी की शान देखी तो तअज्जुब में आ गईं और आप की अज़मतो हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि इन औरतों को ख़ुद से फ़रामोशी हो गई यानी अपने आप को भूल गईं और उनके हुस्नो जमाल में गुम हो कर फल काटते हुए अपने हाथ काट लिए और हाथ कटने की तकलीफ़ का भी बिल्कुल एहसास ना हुआ। वह पुकार उठीं सुब्हानल्लाह! येह कोई इन्सान नहीं है कि ऐसा हुस्नो जमाल इन्सानों में देखा ही नहीं गया बल्कि येह तो नहीं मगर कोई फ़रिश्ता।

(خازن، یوسف، تحت الآیۃ:۳۱، ۳/ ۱۸\ا، تفسیر کبیر، یوسف، تحت الآیۃ:۳۱، ۶/ ۴۴۸، ملتقطاً)

अल्लाहु अकबर! जब तक देखा ना था तो ग़ुलाम ग़ुलाम की रट थी और अब जब देख लिया तो बशर यानी इंसान होने का ही इन्कार कर दिया, कि येह कोई बशर यानी इंसान है ही नहीं बल्कि येह तो कोई फ़रिश्ता है ।

जिन्होंने देखा और जिन्होंने नहीं देखा

(1) इसी तरह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान जिन्होंने देखी नहीं, उन्होंने कहा: मुहम्मद बशर हैं और जिन्हों ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकी शानो अज़मत को देखा, उन्होंने कहा:

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं येह
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान येह कहता है मरी जान हैं येह

(2) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान जिन्होंने देखी नहीं, उन्होंने कहा हमारे जैसे हैं, और जिन्होंने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान देखी तो उन्होंने कहा:

आक़ाओं के आक़ा से बंदों को हो क्या निस्बत
तुम अपने जैसा कहते हो,अपना बड़ा भाई कहते हो,अल्लाह की पनाह
आक़ाओं के आक़ा से बंदों को हो क्या निस्बत
अहमक़ है जो कहता है आक़ा को बड़ा भाई
बे मिस्ल ख़ुदा का तू बे मिस्ल पयम्बर है
ज़ाहिर तेरी हस्ती से अल्लाह की यकताई

(3) शाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्होंने देखी नहीं, उन्होंने कहा: मर कर मिट्टी में मिल गए। अल्लाह की पनाह और जिन्होनें देखा, उन्होंने कहा:

तू ज़िंदा है वल्लाह तू ज़िंदा है वल्लाह
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

(4) शाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्होंने देखी नहीं, उन्होंने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात में, सिफ़ात में, औसाफ़ में, कमालात में, तसर्रुफ़ात में, ऐब निकाले, तन्क़ीसे शान की हर मुम्किन कोशिशें कीं। लेकिन जिन्होंने ज़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जल्वे देखें, औसाफ़ो कमालात के समंदर देखे, हुस्नो जमाल के दरख़्शिंदा चांद देखे, वह ज़िंदगी भर कहते रहे:

वह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्मा है कि धुवां नहीं

{वह कमाले हुस्ने हुज़ूर है}कमाल के माना हैं पूरा होना कंपलीट होना, यानी मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुस्न यानी ख़ूबसूरती ऐसी कामिलो अकमल है कि इस में ख़ामी होना तो कुजा इस में तो ख़ामी का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और दुनिया में जितनी भी शम्आ यानी चिराग हैं सब में धुवां होता है और यही धूवां उस शम्आ यानी चिराग का ऐब है कि अगर कोई भी चमकदार कपड़ा इस धुएं के क़रीब हो तो थोड़ी ही देर में इस पर काला धब्बा आ जाएगा। यूँही फूल के इर्द गिर्द कांटे होते हैं जो अपने छूने वाले को नुक़्सान भी पहुंचा सकते हैं, लेकिन क़ुर्बान जाएं मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह शम्आ यानी चिराग हैं जिस में कोई धुवां नहीं और वह फूल हैं कि जिस में कोई कांटा नहीं। अपने तो अपने दुश्मन भी करम से हिस्सा पाते हैं।

गालियां देता है कोई तो दुआ देते हैं
दुश्मन आ जाये तो चादर भी बिछा देते हैं

(5) जिनकी आँखें अंधी हैं जिसकी वजह से तसर्रुफ़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हुकूमते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा नहीं, उन्होंने कहा जिसका नाम मुहम्मद या अहमद हो वह किसी चीज़ का मालिको मुख्तार नहीं होता। और जिन्होंने तसर्रुफ़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमऔर हुकूमते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नज़्ज़ारे किए, उन्होंने कहा:

तुम्हीं हाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अताया
तुम्हीं दाफ़ऐ बलाया तुम्हीं शाफ़ऐ ख़ताया
कोई तुम सा कौन आया

(6) शाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्होंने देखी नहीं, उन्होंने कहा अल्लाह पाक की शान के आगे अंबियाए किराम चमार से भी ज़लील हैं। (अल्लाह की पनाह) और जिन्होंने देखा, उन्होंने कहा:

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद
मुहम्मद बराए जनाबे इलाही
जनाबे इलाही बराए मुहम्मद
ख़ुदा उन को किस प्यार से देखता है
जो आँखें हैं महवे लिक़ाए मुहम्मद

तुम कहते हो कि अल्लाह की बारगाह में अंबियाए किराम की शानो मर्तबा एक चमार के मिस्ल है (अल्लाह की पनाह) देखो!आँखें खोल कर देखो सारी मख्लूक़ अल्लाह की रज़ा चाहती है, लेकिन अल्लाह मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रज़ा चाहता है।

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद

बात ख़त्म होने का नाम नहीं ले रही

अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल! बात ख़त्म होने का नाम नहीं ले रही, किताब में इतनी गुंजाइश भी नहीं, वर्ना दिल तो करता है कि बस यहीं घूमते रहो, शानो अज़मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नज़्ज़ारे करते रहो, और अपने क़ल्बो जिगर को तसकीन देते रहो।

अल्लाहु अकबर!जब तक देखा ना था तो ग़ुलाम ग़ुलाम की रट थी और अब जब देख लिया तो बशर होने का ही इन्कार कर दिया, कि येह कोई बशर है ही नहीं बल्कि येह तो कोई फ़रिश्ता है।

आला हज़रत ने कमाल कर दिया

ऐ आशिक़ाने रसूल! जब हुस्ने यूसुफ़ का हाल येह है तो हुस्ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और जमाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आलम क्या होगा। आला हज़रत इस वाक़िअे की तरफ़ इशारा कर के बड़े हसीन अंदाज़ में शाने मुस्तफ़ाई सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पर मर्दाने अरब

आला हज़रत अलैहि रहमा ने अपने इस शेअर में कमाल कर दिया, और कहते हैं हुस्ने यूसुफ़ को मिस्र की औरतों ने देखा तो बे इख़्तियार हो कर बिग़ैर इरादे के अपनी उंगलियां काट बैठीं, ऐ मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप के हुस्नो जमाल का आलम क्या होगा, जबकि आपका नामे नामी इस्मे गिरामी ही ऐसा है कि अरब के जवान आपके नाम पर अपने सर कटा रहे हैं, और ता क़यामत कटाते रहेंगे।

दोनों में मुक़ाबला कितना हसीन है

आला हज़रत अलैहि रहमा का येह शेअर बड़ा ही फ़साहतो बलाग़त की जान है, ज़रा हुस्ने यूसुफ़ और नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में मुक़ाबला मुलाहज़ा फ़रमाएं:

(1) उधर सरापा यूसुफ़ है। इधर सिर्फ नामे मुहम्मद ﷺ है
(2) उधर बिला इरादा कटना है। इधर इरादे से कटाना है
(3) उधर मिस्र की औरतें हैं। इधर अरब के मर्द हैं
(4) उधर सिर्फ़ उंगलियां हैं। इधर पूरा सर है
(5) उधर सिर्फ एक बार है। इधर हर वक़्त बल्कि क़ियामत तक है

अल्लाहु अकबर! कैसा तक़ाबुल है

सुब्हानल्लाह, मा अजमला का, मा अहसना का, मा अकमला का
किथे महर अली किथे तेरी सना गुस्ताख अखीं किथे जा लड़ियाँ

हुस्ने यूसुफ़ और हुस्ने मुहम्मद ﷺ में फ़र्क़

अल्लामा अहमद सावी अलैहि रहमा फ़रमाते हैं हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हुस्न का एक हिस्सा अता किया गया था और उनका हुस्न ज़ाहिर था कि अल्लाह पाक ने उनके हुस्न को अपने जलाल के पर्दों में नहीं छुपाया, इसी लिए आप के हुस्न का नज़ारा कर के औरतें फ़ित्ने में मुब्तला हो गईं, जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कामिल हुस्न अता किया गया है लेकिन अल्लाह पाक ने अपने हबीब

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाल को अपने जलाल के पर्दों में छुपा दिया है, जिसकी वजह से आपका हुस्ने कामिल देख कर भी कोई औरत फ़ित्ने में मुब्तला नहीं हुई।

यही वजह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरापा अक़्दस यानी जिस्मे मुबारक की तफ़्सीलात बड़े सहाबए किराम से मर्वी नहीं बल्कि छोटे सहाबा से मन्क़ूल हैं, क्योंकि बड़े सहाबए किराम के दिलों में आप की हैबतो जलाल इस क़दर थी कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकी तरफ़ नज़र ना उठा सकते थे।

(صاوی، یوسف، تحت الآیة: ۱۹، ۳/ ۹۴۸، ملخصاً)

आला हज़रत से एक सवाल

ऐ आशिक़ाने रसूल! येह बात आपने बारहा सुनी होगी कि अल्लाह पाक ने सारी दुनिया को अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े में बनाई है, आला हज़रत अलैहि रहमा से एक सवाल हुआ कि अल्लाह पाक फ़रमाता है ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर आप ना होते तो ज़रूर मैं अफ़्लाक को पैदा ना फ़रमाता। (कश्फ़ु ख़िफ़ा, हदीस1212,जिल्द 2, पेज 148)

इस हदीसे क़ुदसी को उलमाए दीन हमेशा से महफ़िले मीलाद शरीफ़ में बयान करते आए और अब भी बयान करते हैं और अक्सर उलमाए दीन ने मजलिस में इस हदीस को बतलाया कि येह हदीस क़ुदसी है और बहुत सी उर्दू मीलाद की किताबों में यही लिखा है और तमाम दुनिया के मीलाद ख़्वाँ इस को पढ़ते हैं मगर किसी आलिम ने कभी उस हदीस की निस्बत कुछ ऐतिराज़ ना किया और मौलाना ग़ुलाम इमाम शहीद के मीलाद शरीफ़ शहीदी में यही हाशिया पर लिखा है कि हदीसे क़ुदसी है, इसी तरह बहुत सी उर्दू की मीलाद की किताबों में है, और लुगाते किशवरी में भी लिखा है कि हदीसे क़ुदसी है, बर अक्स इस के मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब ने इस हदीस के बारे में बयान किया है कि येह हदीसे क़ुदसी नहीं है और ना किसी हदीस में है, और येह भी कहते हैं कि हमने अक्सर बुज़ुर्गाने दीन पूछा तो मालूम हुआ कि बेशक येह कोई हदीस नहीं है बल्कि उस के मअना सही हैं। इस हदीस की निस्बत जो कुछ हुक्मे ख़ुदा व रसूल का हो बयान फ़रमाएं।

आला हज़रत का जवाब

आला हज़रत अलैहि रहमा ने इस सवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाया: येह ज़रूर सही है कि अल्लाह पाक ने तमाम जहान हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बनाया, अगर हुज़ूर ﷺ ना होते कुछ ना होता। येह मज़मून बहुत सारी अहादीस से साबित है जिन का बयान हमारे रिसाला में है और इन्ही लफ़्ज़ों के साथ शाह वलीउल्लाह अलैहि रहमा मुहद्दिसे देहलवी ने अपनी बाज़ तसानीफ़ में लिखा, मगर सनद के साथ येह लफ़्ज़ साबित हैं:

خَلَقْتُ الدُّنْيَا وَاَهْلَهَا لِاُعَرِّفُهُمْ كَرَامَتَكَ وَمَنْزِلَتَكَ عِنْدِى وَلَوْلَاكَ يَا مُحَمَّدُ مَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا (تاریخ دمشق الکبیر ذکر عروجہ الی السماء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۲۹۷)

तर्जमा: अल्लाह पाक अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाता है: कि मैंने दुनिया और दुनिया वालों को इसलिए बनाया कि तुम्हारी इज़्ज़त और मर्तबा जो मेरी बारगाह में है उन पर ज़ाहिर करूँ, ऐ मुहम्मद अगर तुम ना होते, मैं दुनिया को ना बनाता।

दुनिया में अफ़्लाक व ज़मीन सब कुछ है

आला हज़रत अलैहि रहमा मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं: उस हदीस में तो सिर्फ अफ़्लाक का लफ़्ज़ था इस में सारी दुनिया को फ़रमाया, जिसमें अफ़्लाक, ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है सब दाख़िल हैं। (फतावा रज़वियह जिल्द 29,पेज 15,16)

सारी चीज़ें मुस्तफ़ा ﷺ के सदक़े में बनीं

ऐ आशिक़ाने रसूल! पता चला कि अगर मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ना होते, तो ना फ़लक को सजाया जाता, ना किसी चीज़ का साया होता, ना अर्शो कुर्सी होते, ना चांद और तारे होते, शबो रोज़ होते ना होते नज़्ज़ारे, शायर बड़े ख़ूबसूरत अंदाज़ में लिखता है:

फ़लक ख़ूबसूरत सजाया ना होता
किसी चीज़ का याँ साया ना होता

ना अर्शो कुर्सी ना चांद और सितारे
शबो रोज़ होते ना होते नज़्ज़ारे
ना जिन्नो बशर ना कोई परिंदा
हयाती ममाती ना मुर्दा ना ज़िंदा
ना हूर ना आदम ना हव्वा की बातें
ना याक़ूब यूसुफ़ ज़ुलेखा की बातें
ना तख़्त और ताजों के सुल्तान होते
महल्लों के वाली ना दरबान होते
ना मिलती किसी को यहां ज़िंदगानी
हवा येह ना होती ना होता येह पानी
नबी ना वली ग़ौस अब्दाल होते
ना होते महीने ना येह साल होते
सना ख़्वाँ ना होते ना येह ख़ुश बयानी
ना मीलाद होते ना येह नात ख्वानी

फिर शायर कहता है:

ना अर्शी ना फ़र्शी ना ख़ाकी ना नूरी
ज़माने में कुछ भी ना होता ज़हूरी

बल्कि हक़ येह है कि

ना क़ुरआँ हदीसो हवाला ना होता
जो पैदा मेरा शाहे वाला ना होता

तभी तो आला हज़रत अलैहि रहमा इश्क़ो मुहब्बत में डूब कर दुनिया वालों को येह पैग़ाम दे रहे हैं कि ऐ दुनिया वालो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने जैसा मत कहना कि:

वो जो ना थे तो कुछ ना था वो जो ना हों तो कुछ ना हो
जान हैं वो जहान की जान है तो जहान है

हर चीज़ में मुहम्मद का नाम है

जब मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की येह शान दुनिया वालों ने देखी कि आसमान का शामियाना जो हमारे ऊपर है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े में है ,ज़मीन का बिछौना जो हमें अता हुआ वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े अता हुआ, चांद की चांदनी, सूरज की रौशनी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के होने से है, हवा का चलना, पानी का बहना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के वजूदे मसऊद से है, बल्कि दुनिया का ज़र्रा ज़र्रा मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, उसी की जानिब शायर इशारा करते हुए आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में अर्ज़ करके दुनिया वालों को येह पैग़ाम दे रहा है:

सुल्ताने जहाँ महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना
हर शै पे लिखा है नाम तेरा तेरी डिग्री की रिफ़अत क्या कहना

जब मैंने इस शेअर पर ग़ौर किया, कि शायर कहता है, हर चीज़ पर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी लिखा हुआ है, तो मैंने हर चीज़ को गहरी निगाह से देखने लगा, हर चीज़ को जांचने लगा, कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे पाक कहाँ है ? मगर आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के बजाये कंपनी का नाम पाया, जिस चीज़ को देखता कंपनी का नाम दिखाई देता, मैंने सोचा, अगर इस शेअर को दुनिया वालों ने देखा, तो ऐतिराज़ पर ऐतिराज़ करना शुरू कर देंगे, कि शायर ने तो येह दावा किया है कि हर चीज़ में मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लिखा है, हालाँकि चीज़ों पर कंपनी का नाम लिखा हुआ है, येह तो मसला खड़ा हो जाएगा, मैं इसी सोचो फ़िक्र में डूबा हुआ था, कि अब करूँ तो क्या करूँ ? इतने में अचानक मेरे ज़ेहन में कबीर दास का एक दोहा आया, गोया कि कबीर दास ने कहा: ऐ आशिक़ किस सोच में डूबा है ? गम क्या है ? क्यों मुताहय्यर नज़र आता है ? किस मुसीबत में गिरफ़्तार है ? सदमा क्या है ? क्यों है बे ताब ? येह बेचैनी का रोना क्या है ? बे कसी कैसी है ? ज़रा बता तुझ पे गुज़रा क्या है ? मैंने कहा: इक मसला है, जो मुझे दरपेश है, सोच रहा हूँ कि इस का हल क्या है? कबीर दास ने कहा: ज़रा बता मुझे वो मसअला क्या है ?

मैंने कहा वो मसअला येह है कि शायर ने कहा है कि दुनिया की हर चीज़ पर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम है, लेकिन मैं इस को ऐसा नहीं पा रहा, अगर लोग मुझ से इस के बारे में सवाल करेंगे तो मैं इस का क्या जवाब दूँगा?

हर चीज़ पर आक़ा ﷺ का नाम लिखा है की दलील

कबीर दास ने कहा: फ़िक्र ना कर, ग़म मत खा, मैं तुझे ऐसा जवाब बताता हूँ कि जब तुझ से कोई इस के बारे में सवाल करे तो, तू दलील के तौर पर इस को पेश कर देना, हर चीज़ में सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आएगा, मैंने कहा जल्द बता, इस में वक़्फ़ा क्या है ? कबीर दास ने कहा सुन वो ज़ाब्ता येह है:

किसी चीज़ की गिनती गिन लो चौगुन कर लो वाए
दो मिलाकर पंज गुन कर लो बीस से भाग लगाए
बाक़ी बचे को नौ गुन कर लो आख़िर में दो देव मिलाए
क़हत कबीर सुन भाई साधव नाम मुहम्मद आए

दोहे की मिसाल

मिसाल के तौर पर आप किसी भी चीज़ के नाम के हुरूफ़ शुमार कर लें यानी गिन लें, जैसे मस्जिद में 4 हर्फ़ हैं, फिर 4 को चार गुना कर लें यानी गुणा कर दें तो 16 हुए, फिर 16 में 2 मिलाया तो 18 हुए, फिर 18 को पाँच गुना कर लें, तो 90 हुए, इस के बाद 90 को 20 से भाग दे दें, तो 80 बराबर बराबर कट जाऐंगे और 10 बचेगा, फिर 10 को नौ गुना कर लें तो 90 हुए, और आख़िर में 2 और मिला दें तो 92 हुए, और 92 मुहम्मद का अदद है, इसी अंदाज़ से आप किसी भी चीज़ के हुरूफ़ गिन कर के दोहे में दिए हुए क़ाएदे के मुताबिक़ अमल करेंगे तो आख़िर में 92 का अदद हासिल होगा। लिहाज़ा पता चला कि हर चीज़ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बनाई गई है।

सुल्ताने जहाँ महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना
हर शै पे लिखा है नाम तेरा तेरी डिग्री की रिफ़अत क्या कहना

इस का एक तरीक़ा और भी है और वो येह कि किसी भी चीज़ के नाम के आदाद निकालें और इसी क़ाएदे के मुताबिक़ अमल करें तो आख़िर में 92 का अदद आएगा मसलन:

आसमान के अदद 152 हैं, इस को चार में गुड़ा करें, तो 608 हुआ, अब इस में 2 मिला दें तो 610 हुआ, अब 610 को पाँच में गुड़ा करें तो 3050 हुआ, फिर 3050 को 20 से भाग दे दें तो 3040 बराबर बराबर कट जाएगा और आख़िर में 10 बचेगा, लिहाज़ा अब 10 को नौ गुना कर लें तो 90 हुआ, अब आख़िर में 2 मिला दें तो 92 का अदद आ जाएगा।

ख़साइसे मुस्तफ़ा ﷺ

ऐ आशिक़ाने रसूल! अब आपके सामने ख़साइसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ कुछ बातें बयान करना चाहूँगा ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो चुनांचे:

अल्लाह पाक ने अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे बेशुमार औसाफ़ और खूबियां अता फ़रमाई हैं जो किसी और के हिस्से में नहीं आईं, उन औसाफ़ और ख़ूबीयों को ख़साइसे मुस्तफ़ा कहा जाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरते के मुख़्तलिफ़ पहलूओं की तरह उलमाए किराम ने इस मौज़ू पर भी बहुत सारी किताबें तसनीफ़ फ़रमाई हैं, मसलन इस्लामी तारीख़ के अज़ीम मुहद्दिस इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ई (साले वफ़ात 911हिज्री) ने 20 साल तक बड़ी मेहनत से हदीस वग़ैरा की किताबों से ख़साइसे मुस्तफ़ा तलाश किए, फिर **ख़साइसुल कुबरा** नामी ला जवाब किताब तसनीफ़ फ़रमाई जिस में सरकारे नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक हज़ार से ज़्यादा ख़साइस नक़्ल फ़रमाए। इसी तरह आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा ने इस मौज़ू पर एक रिसाला तसनीफ़ फ़रमाया।

ख़साइसे मुस्तफ़ा ﷺ कितने हैं?

ख़साइसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी तादाद तो देने वाला अल्लाह पाक जानता है या लेने वाले रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। आला

हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं उनके फ़ज़ाइल ना मक़सूर और ख़साइस ना महसूर (यानी आपके फ़ज़ाइल में कोई कमी नहीं और ख़साइस इस क़दर हैं कि शुमार में नहीं आ सकते), बल्कि हक़ीक़त येह है कि हर कमाल, हर फ़ज़्ल, हर ख़ूबी में सब से अफ़ज़ल हैं और अल्लाह पाक की तमाम मख़लूक़ पर हर तरह की बरतरी हासिल है कि जो किसी को मिला वह सब उन्हीं से मिला और जो उन्हें मिला वह किसी को ना मिला।(فتاویٰ رضویہ،ج۲۲،ص۶۱۴)

इसे तू जाने या ख़ुदा जाने
पेशे हक़ रुतबा क्या हुआ तेरा

और उन ख़साइस में से कुछ ख़साइस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे मुबारक के मुताल्लिक़ भी हैं उनमें से बाज़ येह हैं:

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ रब की तरफ़ से नाम

(1) सब के नाम उनके माँ बाप रखते हैं, लक़ब क़ौम देती है, ख़िताब हुकूमत से मिलता है, मगर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम, लक़ब और ख़िताब सब अल्लाह पाक की तरफ़ से हैं कि अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रिश्ते की बिशारत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद रखा।

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ पैदाइश से पहले नाम

(2) दूसरों के नाम पैदाइश के सातवें दिन रखे जाते हैं, मगर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम दुनिया की पैदाइश से पहले अर्शे आज़म पर लिखा गया था और हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से तक़रीबन 600 साल पहले अपनी क़ौम को फ़रमाया: उन का नामे पाक अहमद है। (پ۲۸،الصف۶) और पिछली कौमें हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम की बरकत से दुआएं माँगती थीं।

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ नाम में तारीफ़

(3) कोई शख़्स हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुहम्मद कह कर बुरा नहीं कह सकता, अगर कहेगा तो ख़ुद अपने मुँह से झूठा होगा कि उन्हें कहता तो है मुहम्मद है जिस का माना है वह ज़ात जो तारीफ के लाइक़ हो, और करता है

बुराईयां, इसी लिए मक्का के काफिरों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुज़म्मम रख कर आप की शाने अक़्दस में बकवास बकी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि देखो मुझ को मेरे अल्लाह ने इन काफिरों की गालियों से कैसे बचाया, येह लोग मुज़म्मम को बुरा कहते हैं, होगा कोई मुज़म्मम मैं तो मुहम्मद हूँ।

(بخاری، کتاب المناقب، باب ماجاء فی اسماء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۴/ ۴۸۴، حدیث: ۳۵۳۳)

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ नाम में फ़ज़ाइल

(4) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद बहुत जामेअ है, जिस में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेशुमार फ़ज़ाइल बयान हो गए हैं, आदम के मअना हैं मिट्टी से पैदा होने वाले, इब्राहीम के मअना हैं मेहरबान बाप, नूह के मअना हैं ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या वज़ारी करने वाले, ईसा के मअना हैं बहुत शरीफ़ुन्नफ़्स, इन तमाम नामों में एक एक खूबी की तरफ़ इशारा है, मगर मुहम्मद के मअना हैं हर तरह, हर खूबी में बेहद तारीफ़ किए हुए, इस में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ला तादाद कमालात और ख़ूबियों की तरफ़ इशारा हो गया।

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ नाम में ग़ैबी ख़बर

(5) लफ़्ज़े मुहम्मद में ग़ैबी ख़बर भी है कि हमेशा यानी दुनिया और आख़िरत में उनकी हर जगह, हर तरह हम्दो सना यानी तारीफो तौसीफ़ हुआ करेगी, इस ख़बर की सदाक़त यानी सच्चाई हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि आज भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर किसी की तारीफ़ नहीं होती, बल्कि जो हुज़ूर से वाबस्ता हो गए उनकी भी तारीफ़ हो गई, फ़र्श पर उनकी धूम, अर्श पर उनके चर्चे, आला हज़रत ने क्या खूब फ़रमाया:

अर्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श में तुर्फ़ा धूम धाम
कान जिधर लगाइए तेरी ही दास्तान है

ख़ुसूसीयते मुस्तफ़ा ﷺ नाम रखने की बरकत

(6) जो अपने बेटे का नाम मुहब्बत में मुहम्मद रखे, अल्लाह पाक उस पर रहम फ़रमाएगा कि मुझे ऐसे शख़्स को अज़ाब देते हया आती है जिसने मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखा है।

(تفسیر نعیمی جلد ۴ ص ۲۲۰ ملخصًا)

हुज़ूरﷺ के चार नाम हम्द से बने हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार नाम ऐसे रखे जिनका मस्दर एक ही है और वह है लफ़्ज़े हम्द और हम्द का मअना है तारीफ़ करना, और वह चार नाम येह हैं:

(1) हम्द से हामिद है जिस का मअना तारीफ़ करने वाला है । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम हामिद भी है।

(2) हम्द से महमूद है जिस का मअना तारीफ़ किया हुआ है । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम महमूद भी है।

(3) हम्द से अहमद है जिस का मअना बहुत तारीफ़ करने वाला। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम अहमद भी है।

(4) हम्द से मुहम्मद है जिस का मअना बहुत तारीफ़ किया हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद भी है।

हामिदो महमूद और मुहम्मद दो जग का सरदार
जान से प्यारा राज दुलारा रहमत की सरकार
नबी जी अल्लाह अल्लाह अल्लाहू ला इलाहा इल्ला हू
प्यारी सूरत हँसता चेहरा मुँह से झड़ते फूल
नूर का पुतला चाँद सा मुखड़ा हक़ का प्यारा रसूल
नबी जी अल्लाह अल्लाह अल्लाहू ला इलाहा इल्ला हू

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार नाम लफ़्ज़े हम्द से बने हैं, हामिद, महमूद, मुहम्मद, और अहमद ।

मुस्तफ़ाﷺ हामिद हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हामिद हैं, किस के ? अपने रब के, कि हामिद का मअना तारीफ़ करने वाला, तो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की तारीफ़ करने वाले हैं और अल्लाह महमूद, कि अल्लाह की तारीफ़ हो रही है। और कायनात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इलावा और भी

हामिद हैं कि वह भी अल्लाह की तारीफ़ कर रहे हैं,जैसे फिरिश्ते जो कि हर वक़्त अल्लाह की तारीफ़ में मशग़ूलो मसरूफ़ हैं बल्कि उनकी ग़िज़ा ही हम्द करना है, मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरह हामिद नहीं हो सकते।

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महमूद भी हैं, कि महमूद का मअना है जिसकी तारीफ़ की जाये, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किस ने तारीफ़ की? अल्लाह ने की, लिहाज़ा अब अल्लाह हामिद और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महमूद हुआ, और इस नाम में भी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा कायनात में कोई महमूद नहीं। क्योंकि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हामिद अल्लाह पाक है।

हामिद के होते हुए अहमद नाम क्यों रखा गया

यहां पर सवाल होता है कि जब **हामिद** का मअना तारीफ़ करने वाला है और यही मअना **अहमद** का भी है, इसी तरह जो मअना **महमूद** का है तारीफ़ किया हुआ वही मअना **मुहम्मद** का भी है। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामों में से हामिद होता और महमूद होता, अहमद और मुहम्मद नाम रखने की क्या ज़रूरत?

अहमद नाम रखने की हिकमत

इस सवाल का जवाब येह है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सिर्फ हामिद होता और अहमद ना होता तो लोग मिस्लियते मुस्तफ़ाﷺ को साबित करते यानी मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको अपने जैसा या किसी और के जैसा कहने लगते।

अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सिर्फ महमूद होता और मुहम्मद ना होता तो लोग मिस्लियते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साबित करते। और कहते:

कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क्या ख़ुसूसीयत जैसे वह अल्लाह के हामिद, वैसे ही हम भी अल्लाह के हामिद, हम भी हामिद और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हामिद।

जब लोगों से इस बात का इम्कान था कि कहीं वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हामिदीयत में मिस्लियत ना साबित कर बैठें और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने जैसा हामिद ना कह बैठें, तो रब ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम हामिद के साथ साथ अहमद रख दिया, और अहमद का मअना है बहुत तारीफ़ करने वाला, सब से ज़्यादा तारीफ़ करने वाला, लिहाज़ा मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब सिर्फ हामिद ना रहे बल्कि हामिद से तरक़्क़ी कर के अहमद बने, और अहमद का मअना है अहमदुल हामिदीन(तारीफ़ करने वालों में से सब से ज़्यादा तारीफ़ करने वाला) अहमद उस ज़ात को कहते हैं जो सब लोगों से ज़्यादा अपने रब की हम्द करने वाला हो

मुस्तफ़ा ﷺ अहमदुल हामिदीन हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! सुनों कोई हामिद हो तो हुआ करे, मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहमदुल हामिदीन हैं, जैसे रब अहकमुल हाकिमान,और अर्हमुर्राहमीन है ऐसे ही मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अकमलुल कामिलीन अफ़्ज़लुल फ़ाज़िलीन और अहमदुल हामिदीन हैं।

महमूद के होते हुए मुहम्मद नाम रखने की वजह

ऐसे ही अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सिर्फ महमूद होता, और मुहम्मद ना होता, तो लोग मिस्लियते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साबित करते और कहते कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क्या ख़ुसूसीयत जैसे वह महमूद यानी तारीफ़ किए हुए, वैसे ही मेरा बेटा महमूद, मेरा बाप महमूद, मेरा उस्ताद महमूद, मेरा पीर महमूद, कि उनकी भी तारीफ़ की जाती है, पस मेरा बेटा, बाप, उस्ताद और पीर भी महमूद और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमभी महमूद। अल्लाहु अकबर!

मुहम्मद नाम रखने की हिकमत

तो प्यारो सुनों! किसी का बेटा महमूद हो, तो हुआ करे,किसी का बाप महमूद हो,तो हुआ करे, किसी का उस्ताद महमूद हो, तो हुआ करे, किसी का पीर महमूद हो, तो हुआ करे, मेरे मस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहम्मद हैं।

जब लोगों से इस बात का इम्कान था कि कहीं वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महमूदियत में मिस्लियत ना साबित कर बैठें और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने बेटे, बाप, उस्ताद और पीर जैसा महमूद ना कह बैठें, तो रब ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम महमूद के साथ साथ मुहम्मद रख दिया, और मुहम्मद का मअना है हर तरह तारीफ़ किया हुआ, हर वक़्त, हर ज़माना, हर ज़बान में तारीफ़ किया हुआ।

हर वक़्त तारीफ़ हो रही है

नबी की हर वक़्त तारीफ़ हो रही है,सुबह भी तारीफ़ हो रही है, शाम में भी तारीफ़ हो रही है, दिन में भी तारीफ़ हो रही है, रात में भी तारीफ़ हो रही है, फ़ज्र में भी तारीफ़ हो रही है, ज़ोहर में भी तारीफ़ हो रही है, अस्र में भी तारीफ़ हो रही है, मग़रिब में भी तारीफ़ हो रही है, इशा में भी तारीफ़ हो रही है,कौन सा ऐसा वक़्त है जिसमें मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ ना हो रही हो? हर वक़्त जिसकी तारीफ़ हो, उस ज़ात को मुहम्मद कहते हैं।

हर ज़माने में तारीफ़ हो रही है

फिर हर ज़माने में तारीफ़ हो रही है, हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक हर ज़माने में तारीफ़ हुई, फिर सहाबा के ज़माने में तारीफ़ हो रही है, ताबेईन के ज़माने में हो रही है, तबा ताबेईन के ज़माने में तारीफ हो रही है,ग़ौसो ख़्वाजा के ज़माना में तारीफ हो रही है, आज तक नबी की तारीफ हो रही है, सुब्हे क़ियामत तक तारीफ होती रहेगी, गुज़रे हुए ज़माने में तारीफ़ हुई, मौजूदा ज़माने में हो रही है,और आने वाले ज़माने में तारीफ़ होती रहेगी।कोई ज़माना जिसकी तारीफ़ से ख़ाली ना हो ऐसी ज़ात को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं।

हर ज़बान में तारीफ़ हो रही है

फिर हर ज़बान में जिसकी तारीफ़ हो उसे मुहम्मद कहते हैं,अरबी में भी तारीफ़ हो रही है,उर्दू में भी तारीफ़ हो रही है, फ़ारसी में भी तारीफ़ हो रही है, हिन्दी में भी तारीफ़ हो रही है, इंग्लिश में भी तारीफ़ हो रही है, गुजराती, पंजाबी, मराठी, बंगाली में भी तारीफ़ हो रही है, दुनिया की कोई ऐसी ज़बान नहीं जिस में मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ ना हुई हो,तो मुहम्मद कहते ही उस ज़ात को हैं जिसकी तारीफ़ हर ज़बान में हो। अल्लाह अकबर!

पस मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब सिर्फ महमूद ना रहे बल्कि महमूद से तरक़्क़ी कर के मुहम्मद बनें, और मुहम्मद का मअना है मुहम्मदुल महमूदून तारीफ़ किए हुओं में सब से ज़्यादा तारीफ़ किए हुए।

मुस्तफ़ाﷺ की महमूदियत ला महदूद

किसी का बेटा कब तक महमूद होगा? जब तक उस का बाप ज़िंदा है,किसी का बाप महमूद कब तक होगा? जब तक उस का बेटा ज़िंदा है,किसी का उस्ताद कब तक महमूद होगा? जब तक उस का शागिर्द ज़िंदा है,किसी का पीर कब तक महमूद होगा? जब तक उस का मुरीद ज़िंदा है, मरने के बाद तो कोई किसी की तारीफ़ नहीं करता, ख़ुद अपने आमाल की सज़ा व जज़ा में फंस कर रह जाता है। तो जूंही उनके हामिदीन यानी तारीफ करने वालों ने दम तोड़ा उनका महमूद होना भी दम तोड़ गया, उनका महमूद होना भी ख़त्म हो गया। लेकिन मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कायनात की पहली सुब्ह से लेकर क़ियामत की आख़िरी शाम तक, बल्कि उस के बाद भी महमूद हैं, मुहम्मद हैं, क्योंकि उनका हामिद दो जहाँ का ख़ालिक़ यानी अल्लाह पाक है जिस कभी मौत नहीं आएगी वह हमेशा से ज़िंदा है और हमेशा ज़िंदा रहेगा।

मिस्लियत को ख़त्म करने के लिए

मिस्लियत और बराबरी को ख़त्म करने के लिए अल्लाह पाक ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हामिद से अहमद बनाया।

मिस्लियत और बराबरी को ख़त्म करने के लिए अल्लाह पाक ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को महमूद से मुहम्मद बनाया।

जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीन करते और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी तरह कहते हैं उनके रद्द के लिए कोई कुरआनी दलील की हाजत नहीं, बल्कि रद्द और तरदीद के लिए सिर्फ मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम, नामे मुहम्मद और अहमद ही काफ़ी है।

आसमान में अहमद ज़मीन में मुहम्मद नाम रखने की हिकमत

ऐ आशिक़ाने रसूल! मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो नाम ज़ाती हैं आसमानों में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम **अहमद** है,और ज़मीन में **मुहम्मद** है, अब एक सवाल और पैदा होता है कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आसमानों में अहमद, और ज़मीन में मुहम्मद क्यों रखा गया ? इस का उल्टा कर लेते, कि ज़मीन में अहमद और आसमानों में मुहम्मद, लेकिन नहीं, आसमानों में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहमद हैं, और ज़मीन में मुहम्मद हैं। इस का जवाब येह है कि आसमानों में अहमद और ज़मीन में मुहम्मद नाम रखना बद मज़हबों का रद्द है,कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई मिस्लियत साबित ना कर पाये, अपने जैसा ना कह पाये।

आसमान वाले मुस्तफ़ा ﷺ का मर्तबा जानते हैं

वह यूं कि आसमान वाले (यानी फिरिश्तें) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़ामो मर्तबा जानते हैं, और वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिस्ल(यानी जैसा) होने का दावे करने से रहे कि वह मासूम हैं, बल्कि फिरिश्तों के सरदार जिबरीले अमीन का क़ौल आला हज़रत शेअर की सूरत में पेश करते हैं।

यही बोले सिदरा वाले चमने जहां के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाए का ना पाया
तुझे यक ने यक बनाया

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आसमानों में अहमद है,पस आसमान वाले ख़ुद को अहमद कहने का दावे नहीं करते,अगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम दुनिया में अहमद होता, तो ना जाने कितने अहमद होने का दावे कर देते, तो ज़मीन में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर होने का दावे करने का इम्कान था,लिहाज़ा अल्लाह पाक ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम ज़मीन में अहमद ना रखा बल्कि मुहम्मद रखा,कि ज़मीन वालों में से कोई उल्टी छलांगें भी लगा ले तब भी मुहम्मद नहीं हो सकता। क्योंकि मुहम्मद वह होता है जिसकी बार बार तारीफ़ की जाये, हर ज़माने में की जाये, हर तबक़े में की जाये, हर

ज़बान में की जाये, करने के बाद फिर तारीफ़ की जाये, जिसकी तारीफ़ ख़त्म ना हो, उस ज़ात का नाम मुहम्मद है। कि

ज़िंदगियां ख़त्म हुईं और क़लम टूट गए
पर तेरे औसाफ़ का इक बाब भी पूरा ना हुआ

इमामुल कलाम कलामुल इमाम के अंदाज़ में मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैराँ हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूँ तुझे
कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वाँ की ख़ामोशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूँ तुझे
लेकिन रज़ा ने ख़त्म सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़लक़ का आक़ा कहूँ तुझे

तारीफ़ करने वाले मख्लूक़ ही हैं

दूसरी बात येह कि सबकी तारीफ़ो तौसीफ़ करने वाले उन्हीं के जैसे लोग होंगे, मख्लूक़ात में से होंगे, मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ो तौसीफ़ करने वाली ज़ात, मख्लूक़ात का ख़ालिक़ है, ख़ुद रब्बे ज़ुल जलाल है फ़रमाया:

سورۂ الشرح: اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

तर्जमा कंज़ुल ईमान:क्या हम ने तुम्हारे लिए सीना कुशादा ना किया। और हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया।

سورۂ ضحی: وَ الضُّحٰى ۝١ وَ الَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَ مَا قَلٰى ۝٣ وَ لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝٤ وَ لَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝٥

तर्जमा कंज़ुल ईमान:चाश्त की क़सम। और रात की जब पर्दा डाले। कि तुम्हें तुम्हारे रब ने ना छोड़ा और ना मकरूह जाना। और बेशक पिछली घड़ी तुम्हारे लिए पहली घड़ी से बेहतर है। और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

سورۂ بلد: لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝٢ وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ ۝٣

तर्जमा कंज़ुल ईमान:मुझे इस शहर की क़सम। कि ऐ महबूब! तुम इस शहर में तशरीफ़ फरमा हो। और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उसकी औलाद की कि तुम हो।

سورۂ مدثر: يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴿۱﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ﴿۲﴾ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ﴿۳﴾ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرْ﴿۴﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान:ऐ बाला पोश ओड़ने वाले। खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ। और अपने रब ही की बड़ाई बोलो। और अपने कपड़े पाक रखो।

سورۂ مزمل: يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ﴿۱﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا﴿۳﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान:ऐ झुरमुट मारने वाले। रात में क़ियाम फरमा सिवा कुछ रात के। आधी रात या उस से कुछ कम करो।

سورۂ قلم: نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا يَسْطُرُوْنَ﴿۱﴾ مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ﴿۳﴾ وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ﴿۴﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान:क़लम और उसके लिखने की क़सम। तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं। और ज़रूर तुम्हारे लिए बे इंतिहा सवाब है। और बेशक तुम यक़ीनन अज़ीम अखलाक़ पर हो।

سورۂ رحمن: اَلرَّحْمٰنُ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ﴿۴﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान:रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया। इंसानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया। मा काना वमा यकून का बयान उन्हें सिखाया।

سورۂ نجم: وَ النَّجْمِ اِذَا هَوٰى﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَ مَا غَوٰى﴿۲﴾ وَ مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى﴿۴﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान:उस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब येह मेअराज से उतरे। तुम्हारे साहिब ना बहके ना बे राह चले। और वह कोई बात अपनी ख्वाहिश से नहीं कहते। वह तो नहीं मगर वही जो उन्हें की जाती है।

سورۂ يس: يٰسٓ﴿۱﴾ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ﴿۳﴾ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ﴿۴﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान: हिकमत वाले कुरआन की क़सम। बेशक तुम सीधी राह पर भेजे गए हो।

पहले अल्लाह फिर मुहम्मद का नाम लेने की हिक्मत

ऐ आशिक़ाने रसूल! ज़रा देखिए तो सही, अज़ान हो, ख़ुत्बा हो, कलिमा हो, ग़र्ज़ हर जगह पहले अल्लाह पाक का ज़िक्र आता है, फिर मुहम्मद का ज़िक्र आता है, इस में हिक्मत क्या है ? इस में हिक्मत येह है कि ज़बान से पहले अल्लाह पाक का ज़िक्र हो, और अल्लाह पाक के ज़िक्र से ज़बान पाक हो जाये, फिर पाक ज़बान से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लिया जाये।

ईसा अलैहिस्सलाम के अहमद नाम लेने की हिक्मत

अल्लाह पाक कुराने पाक में इरशाद फ़रमाता है:

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۶﴾ (پ۲۸، الصف،۶)

तर्जमा: और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा: ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ अपने से पहली किताब तौरेत की तसदीक़ करता हुआ, और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएँगे उन का नाम अहमद है।

यहाँ सवाल पैदा हो सकता है कि ज़मीन में हुज़ूर का नाम मुहम्मद और आसमान पर अहमद है और हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर की आमद की ख़बर ज़मीन में रह कर ज़मीन वालों को सुनाई थी ना कि आसमान वालों को, उन्हें इस मौक़ा पर ज़मीन वाला नाम मुहम्मद का ज़िक्र करना चाहिए था ना कि आसमान वाला नाम अहमद का।

इस सवाल का मुख़्तसर जवाब येह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़मीन पर पैदा हुए, ज़मीन वालों में रहे और यहीं ज़िंदगी बसर की, मगर हक़ीक़त में उनकी

पैदाइश से लेकर आसमानों में उठाए जाने तक उनके बहुत से मुआमलात आसमान वालों की तरह थे। उनकी पैदाइश इंसानों में राइज इन्सानी तरीक़े से हट कर हुई यानी बिग़ैर बाप के। फिर मुख़्तसर ज़मीनी ज़िंदगी बसर करने के बाद दोबारा उनका आसमान पर जाना, गोया शुरू और इख़्तिताम के ऐतिबार से उनकी ज़िंदगी आसमानी मख़लूक़ से मुशाबहत रखती है इसी बिना पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हुज़ूर के उस नाम से आगाह थे जिस से हुज़ूर को आसमानों पर पुकारा जाता था। येह आसमानी दुनिया से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वाक़िफ़ीयत और उनकी अल्लाह पाक की जानिब से ग़ैर मामूली ख़ल्क़त की ज़बरदस्त गवाही है। नीज़ इस में ग़ैबी ख़बर भी है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आसमानों वाला नाम लेकर इस बात की जानिब इशारा किया कि मैं अनक़रीब आसमानों में जाने वाला हूँ।

मुहम्मद और अहमद के अदद की हिक्मतें

(1) ऐलाने नुबूव्वत के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में ज़ाहिरी तौर पर 23 साल रहे और कुरआने पाक में मुहम्मद 4 बार आया है, अब अगर 23 को 4 में गुड़ा करें तो 92 का अदद आएगा और 92 मुहम्मद का अदद है।

(2) मुहम्मद के अदद 92 हैं, और अहमद के अदद 53 हैं, अगर 92 में 53 को घटाऐं तो 39 बचेगा और लफ़्ज़े नूर के अदद 256 हैं अब 256 में आए हुए 2, 5, 6, को जोड़ें 2+5+6 तो 13 होगा, फिर13 को मुहम्मद, अहमद, नूर की तादाद यानी 3 से गुड़ा कर दीजिए तो 39 आएगा, और मुहम्मद के 92 और अहमद के 53 के दर्मियान भी 39 अदद का फ़ासिला है लिहाज़ा येह इस बात की जानिब इशारा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नूर हैं।

(3) मुहम्मद के अदद 92 हैं जिस में 9 और 2 है इनको आपस में मिलायें 9+2 तो 11 हुआ, और 11 में दो बार 1 आता है जो अल्लाह के एक होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक होने को बता रहा है। क्योंकि एक वहदत का अदद है।

(4) सूरहए मुहम्मद कुराने पाक की 47 वीं सूरत है और 47 में 4 और 7 है इन को आपस में मिलायें 4+7 तो 11 का अदद आता है येह भी अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक होने को बता रहा है।

(5) अहमद के अदद 53 हैं और 53 प्राइम नंबर कहलाता है क्योंकि प्राइम नंबर वो होता है जिसको कोई गिनती ना तक़सीम कर सके और ना काट सके, और ना वो किसी की मुहताज हो, पस अहमद को भी ना कोई काट सकता है और ना वो मख्लूक़ात में से किसी के मुहताज । हाँ 53 को 1 काट देगा, और एक से मुराद अल्लाह पाक है लिहाज़ा एक के काटने में इस बात की जानिब इशारा है कि अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हक़ीक़त सिर्फ और सिर्फ अल्लाह पाक जानता है अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता।

(6) मुहम्मद के अदद 92 और अहमद के अदद 53 के दर्मियान 39 का फ़र्क़ है यानी 92 में 53 घटाऐं तो 39 का अदद आता है और 39 में 3 और 9 है 3+9 जिनको आपस में जोड़ने से12 बनता है जिस से साल के 12 महीनों की जानिब इशारा है नीज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश और ज़ाहिरी विसाल की तारीख़ की जानिब भी इशारा है।

(7) मुहम्मद के अदद 92 और अहमद के अदद 53 के दर्मियान 39 का फ़र्क़ है यानी 92 में 53 घटाऐं तो 39 का अदद आता है और 39 में 3 और 9 है, अब 3 का 9 में गुड़ा कीजिए तो 27 का अदद आएगा जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेअराज की तारीख़ और शबे क़दर की तारीख़ की जानिब इशारा है।

(8) मुहम्मद के अदद 92 के अवामिल (Fectors) यानी काटने वाली गिन्तियाँ 1, 2, 4, 23, 46, 92 हैं जिनकी तादाद 6 है पस 6 को नबीﷺ की पैदाइश और विसाले ज़ाहिरी की मुनासिबत से 2 से गुड़ा कीजिए 6x2 तो 12 का अदद आता है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश और विसाले ज़ाहिरी की तारीख़ की जानिब इशारा करता है।

(9) 12 के अवामिल (Fectors) यानी काटने वाली गिन्तियाँ 1, 2, 3, 4, 6, 12 हैं जिनकी तादाद भी 6 है लिहाज़ा 12 और 92 के दर्मियान एक गहरी

मुनासिबत है। नीज़ 12 के 1 को 2 के साथ मिलायें 1+2=3 हुआ, अब 3 को 6 के बाद रख दीजिए तो 63 हुआ और येह 63 हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुन्यवी ज़ाहिरी ज़िंदगी की जानिब इशारा कर रहा है।

(10) इल्मुल आदाद (Numerology) के लिहाज़ से अगर किसी के नाम का अदद 92 हो तो उस के अंदर येह खूबियाँ देखी जा सकती हैं:

(1)क़ियादत (2)रहम दिली (3)इल्म (4)रूहानियत (5)दूसरों की ख़िदमत का जज़्बा (6)अमन (7)तवाज़ुन (8)इरफ़ान (9)क़ुर्बे इलाही और येह सारी खूबियाँ हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में पाई जाती हैं।

(11) इल्मुल बसीत के ऐतिबार से मुहम्मद के अदद 314 बनते हैं मिसाल के तौर पर: म, य, म, ह, अ, म, य, म, म, य, म, द, अ, ल, इन सब हुरूफ़ के अदद 314 हैं और हमारे नबी को मिला कर रसूलों की तादाद भी 314 है पस इस में इशारा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन सारे रसूलों के औसाफ़, कमालात, बुलंद मक़ामात और ख़ूबीयों के जामेअ हैं।

लफ्ज़े मुहम्मद के हर हर्फ़ की हिक्मतें

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्यारा नाम मुहम्मद बहुत ही निराला Unique) है। इस के हर हर हर्फ़ में जुदा जुदा हिक्मतें हैं। एक मर्तबा ख़्वाजा कमरुद्दीन सियालवी रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ फ़रमा थे और नाअत ख़वानी हो रही थी, इस दौरान एक नातख़वाँ ने येह शेअर पढ़ा:

अस्सलाम ऐ मीम, हा और मीम दाल
अस्सलाम ऐ बेनज़ीरो बेमिसाल

इस पर एक शख़्स ने अर्ज़ किया हुज़ूर इस शेअर में प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे पाक को तोड़ कर पढ़ा गया है, येह तो गुस्ताख़ी है ? ख़्वाजा कमरुद्दीन सियालवी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया नहीं .. ! ! येह गुस्ताख़ी नहीं है क्योंकि नामे मुहम्मद के हर हर हर्फ़ की बेशुमार बरकात हैं, इसलिए आशिक़ हर हर हर्फ़ की जुदा जुदा बरकतें लेने के लिए उनको जुदा जुदा भी पढ़ते हैं। फिर आपने अरबी का एक शेअर पढ़ा:

मुहम्मदुन मीमुहू मौतुन लिल कुफ़री
हयातुल क़ल्बी लिल मुअमिनी बिजाहिन
व मीमुन सानी मौजुल मवाहिबि
व दालु खैरिन दालुन ला इश्तिबाहिन

यानी लफ़्ज़े मुहम्मद की पहली मीम कुफ्र के लिए मौत है और इस की हा में मुस्लमानों के दिल की हयात यानी ज़िंदगी है, इस की दूसरी मीम मवाहिब यानी आप की इनायात और अताओं की मौज यानी लहर है और इस की दाल हर भलाई की दाल यानी राहनुमा है। इस में कोई शक की गुंजाइश नहीं।

(انوارِ قمریہ، صفحہ:۱۰۶ابتغیر قلیل)

दोनों जहाँ में दुनिया व दीं में
है इक वसीला नामे मुहम्मद
मोमिन को क्यों हो ख़तरा कहीं पर
दिल पर है कन्दा नामे मुहम्मद

मुहम्मद में दो मीम लाने की हिक्मत

सुब्हानल्लाह! क्या प्यारा नाम है, इस के हर हर हर्फ़ में हिक्मतें पोशीदा यानी छुपी हुई हैं। दरूदे पाक की मशहूरो मारूफ़ किताब दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ में है लफ़्ज़े मुहम्मद की दोनों मीमों का मतलब है मुल्क यानी बादशाही, हा का मतलब है रहमत और दाल का मतलब है दवाम यानी हमेशगी। मतलब येह है कि मुल्क यानी बादशाहतें दो हैं:

(1) एक दुनिया की बादशाही और **(2)** दूसरी आख़िरत की बादशाही। लिहाज़ा लफ़्ज़े मुहम्मद के इन 4 हुरूफ़ में इशारा है कि अल्लाह पाक ने दोनों जहानों की रहमत भरी, शफ़क़तो इनायत भरी बादशाही हमेशा के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अता फ़रमा दी है। पस पहली मीम दुनिया की बादशाहत की जानिब और दूसरी मीम आख़िरत की बादशाहत की जानिब इशारा कर रही है।

मीम मए तौहीद पिलाए, और हा हक़ से आ कर मिलाए
दूसरी मीम मुराद दिलाए, और येह दाले मुहम्मद यारो

दूर करे आलाम, शहद से मीठा मुहम्मद नाम

मीम से है हर दुख का मदावा, हा है हामिए हर बेचारा
दूसरी मीम यतीम की मलजा, दाल बचा कर दोज़ख़ से
फ़िर्दौस का दे पैग़ाम, शहद से मीठा मुहम्मद नाम

मीम से हैं महबूब वो रब के, हा से हाकिम अरबो अजम के
दूसरी मीम से मालिक सब के, दाल से दाता दोनों जहां के
जूद है उनका आम, शहद से मीठा मुहम्मद नाम

मुहम्मद ﷺ की खूबियां कभी ख़त्म नहीं होतीं

ऐ आशिक़ाने रसूल! मअना (Meaning) के लिहाज़ से प्यारे प्यारे नामे मुहम्मद की एक और ख़ुसूसीयत है। ग़ौर फ़रमाईए! जिस बंदे की खूबियां महदूद यानी (Limited) हों, उस की तारीफ़ भी महदूद होगी, मिसाल के तौर पर एक बंदे की 100 खूबियाँ हैं, अब उस की तारीफ़ शुरू करें, एक ख़ूबी बयान हुई, दूसरी बयान हुई, तीसरी बयान हुई, आख़िर 100 की 100 खूबियाँ बयान हो जाएंगी तो तारीफ़ भी ख़त्म हो जाएगी, इसी तरह किसी की लाख खूबियाँ हों, उस की तारीफ़ शुरू करें, आख़िर वो तारीफ़ भी ख़त्म हो जाएगी।

मगर क़ुर्बान जाईए हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्यारा नाम मुहम्मद है, जिसका माना है वो ज़ात जिस की बस तारीफ़ ही तारीफ़ की जाये। मतलब येह कि मुहम्मद वो ज़ात है कि जब से ज़मीन बनी, जब से आसमान बना, जब से येह चाँद, सितारे, सूरज बने, जब से इन्सान, जिन और फ़रिश्ते बनें, इस से भी हज़ारों साल पहले से उन की तारीफ़ की जा रही है और क़ियामत तक होती ही चली जाएगी, यानी येह वो ज़ात हैं कि जिनकी तारीफ़ का कोई इख्तिताम (यानी End) नहीं है जब तारीफ़ का कोई इख्तिताम नहीं तो पता चला उनकी ख़ूबियों का भी कोई इख्तिताम (यानी End) नहीं है।

अगर समंदर स्याही बन जाएं तो भी..!!

अल्लाह पाक कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है:

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَ لَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ

مَدَدًا (۱۰۹) (پارہ:١٦، الکہف:١٠٩)

तर्जमा: तुम फ़रमा दो अगर समंदर मेरे रब की बातों के लिए स्याही हो जाता तो ज़रूर समंदर ख़त्म हो जाता और मेरे रब की बातें ख़त्म ना होतीं, अगर्चे हम उस की मदद के लिए इसी समंदर जैसा और ले आते।

इस आयते करीमा में लफ़्ज़े कलिमात से क्या मुराद है ? इस बारे में क़ुरआन की तफ़सीर करने वाले मुफ़स्सिरीने किराम के मुख़्तलिफ़ कौल हैं, शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं अहले तहक़ीक़ (Researchers) के नज़्दीक अल्लाह पाक के कलिमात से मुराद हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, अब आयते करीमा का मतलब येह बनेगा कि अगर समंदर का पानी स्याही बन जाये और दुनिया भर के लिखने वाले क़लम लेकर इस पानी के ज़रीये मुस्तफ़ा के औसाफ यानी खूबियाँ लिखना शुरू करें, अगर्चे इस समंदर के बराबर इतना ही पानी मज़ीद इस में शामिल कर दिया जाये, फिर भी वो स्याही (Ink) ख़त्म हो जाएगी मगर महबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के औसाफो कमालात ख़त्म नहीं होंगे।

(مدارِجُ النبوہ، باب سوم، دربیان فضل وشرافت، جز:١، صفحہ:٧٣ ملتقطًا)

इसी लिए आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में कितनी प्यारी बात कह गए:

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैरा हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे

वज़ाहत: किसी चीज़ की तारीफ़ का ख़त्म हो जाना भी एक तरह ऐब होता है। अल्लाह पाक ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हर ऐब से पाक रखा है, तो आला हज़रत अलैहि रहमा अर्ज़ कर रहे हैं ऐ प्यारे महबूब! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके वस्फ़, आपकी खूबियाँ ख़त्म हो जाने के ऐब से भी पाक हैं मैं हैरान हूँ कि आपकी क्या क्या खूबियां बयान करूँ।

शाने मुस्तफ़ा ﷺ ब ज़बाने क़ुरआन

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक की बारगाहे अज़ीम में सारी मख्लूक़ात में से हज़रते इन्सान मुअज़्ज़ज़ व मुकर्रम है, फिर सारी इन्सानियत में औलियाए किराम का दर्जा है, और औलियाए किराम से बड़ा मक़ामो मर्तबा अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का है, और सारे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम में से अल्लाह पाक की बारगाह में हमारे नबी, सच्चे नबी, आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़ामो मर्तबा है, और इसी को आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा शेअर की सूरत में कुछ यूं नग़मा सरां होते हैं:

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी

अल्लाह पाक ने कुरआने अज़ीम में जा बजा अंबिया व मुर्सलीन को उनके नामों से मुख़ातब फ़रमाया है, चुनांचे:

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को मुख़ातब कर के रब्बे कायनात का इरशाद होता है:

وَ قُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ (پ١،البقرة٣٥)

तर्जमा: और हमने फ़रमाया: ऐ आदम! तू और तेरी बीवी इस जन्नत में रहो।

हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ (پ١٢،ہود،٤٦)

तर्जमा: फ़रमाया ऐ नूह वो तेरे घर वालों में नहीं।

हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا (پ١٢،الھود٧٦)

तर्जमा:ऐ इब्राहीम इस ख़्याल में ना पड़।

हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَ بِكَلَامِىْ (پ٩،الاعراف،١٤٤)

तर्जमा: फ़रमाया ऐ मूसा मैंने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से।

हज़रते दाउद अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ (پ۲۳، ص، ۲۶)

तर्जमा:ऐ दाउद बेशक हमने तुझे ज़मीन में नाइब किया।

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِىْ عَلَيْكَ (پ۷، المائدہ، ۱۱۰)

तर्जमा: ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एहसान अपने ऊपर।

हज़रते ज़करिया अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى (پ۱۶، مریم، ۷)

तर्जमा:ऐ ज़करिया हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यहया है।

हज़रते यहया अलैहिस्सलाम से अल्लाह पाक का ख़िताब कुछ यूं हुआ:

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿۱۲﴾ (پ۱۶، مریم، ۷)

तर्जमा:ऐ यहया किताब मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नुबूव्वत दी।

ऐ आशिकाने रसूल! सारे अंबिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलाम अल्लाह पाक ने उनका नाम लेकर ख़िताब फ़रमाया लेकिन हमारे और आपके नबी मक्की मदनी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह पाक ने नाम से नहीं बल्कि सिफ़ात के मुख़ातब फ़रमाया है, चुनांचे:

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ (پ۶ المائدہ ۶۷)

तर्जमा:ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा, तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ ۔ (پ۱۰ الانفال ۶۴)

तर्जमा:ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ (پ۲۹، المزمل، ۱)

तर्जमा:ऐ झुरमुट मारने वाले।

يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ(پ۲۹،المدثر،۱)

तर्जमा:ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले।

ऐ आशिक़ाने रसूल! शाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम देखिए कि ख़ुद अल्लाह पाक ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके अलक़ाबात और सिफ़ात से मुख़ातब फ़रमाया, और लोगों को भी हुक्म दिया कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अदब के साथ पुकारा करो, चुनांचे इरशाद बारी तआला है:

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا(پ۱۸،النور۶۳)

तर्जमा:रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा ना ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।

ऐसा क्यों ? क्योंकि मेरा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आम इन्सानों की तरह नहीं है बल्कि मेरे:

महबूब का चेहरा:	**वज़्ज़ुहा** है।
उनकी ज़ुल्फ़ें:	**वल लैलि इज़ा सजा** हैं।
उनका सीना:	**अलम नशरह लका सदरक** है।
उनका कलाम:	**मा यन्तिकु अनिल हवा** है।
उनका शहर:	**ला उक्सिमु बिहाज़ल बलद** है।
उनका अमर:	**अमरुल्लाह** है।
उनकी ज़बान:	**लिसानुल्लाह** है।
उनका हाथ:	**यदुल्लाह** है।
उनका चेहरा:	**वजहुल्लाह** है।

सर से लेकर पांव तक सारे का सारा वुजूद **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

वो ख़ुदा ने है मर्तबा तुझको दिया, ना किसी को मिले ना किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा, तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम

ख़लील और हबीब में फ़र्क़

ऐ आशिक़ाने रसूल! अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के मरातिब जुदागाना हैं बाज़ हज़रात बाज़ हज़रात से अफ़ज़ल हैं अगरचे नुबूव्वत में कोई फ़र्क नहीं, नुबूव्वत की खूबी में सब शरीक हैं मगर ख़साइस और कमालात में सब के दर्जे जुदा जुदा हैं जैसा कि अल्लाह पाक कुराने पाक के तीसरे पारे के शुरू में फ़रमाता है:

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَ رَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ (پ۳، البقرہ، ۲۵۳)

तर्जमा: येह रसूल हैं कि हमने उन में एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया, उनमें किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और कोई वो है जिसे सब पर दर्जों बुलंद किया।

इसी लिए मुफ़्ती अहमद यार ख़ान अलैहि रहमा मिरातुल मनाजीह की जिल्द नंबर 8 पेज नंबर 22 में लिखते हैं: ख़्याल रहे कि ख़लील और हबीब में चंद तरह का फ़र्क़ है:

(1) ख़लील बना है ख़ुल्लत से जिस का माना हाजत है, हबीब बना है हुब से यानी मुहिब और महबूब। पस ख़लील वो जो रब से मुहब्बत करे हाजत से, हबीब वो जो रब से मुहब्बत करे बिग़ैर किसी हाजत के यानी तालिब ज़ात हो।

(2) ख़लील वो जो मुरीद हो तालिब हो, हबीब वो जो मुराद हो, मतलूब हो।

(3) ख़लील वो जो रब की रिज़ा चाहे, हबीब वो कि रब तआला उस की रिज़ा चाहे।

(4) ख़लील वो जो रब की मग़फ़िरत और रहमत का उम्मीदवार हो, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा था: मैं चाहता हूँ कि वो मुझे बख्श दे ।

हबीब वो कि रब तआला उसे अपनी रहमत का यक़ीन दिलाए और फरमाए: आप के सदके आप के अगले पिछले की बख्शिश है ।

(5) ख़लील वो जो अपना ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखने की दुआ करे, हबीब वो जिस का ज़िक्र रब तआला बुलंद करे। और अपने नाम के साथ उनका नाम मिलाए।

(6) ख़लील वो जो रब से जन्नत मांगे, हबीब वो जिसे रब जन्नत दोज़ख़ बल्कि सारे आलम का मालिक बना दे।

(7) ख़लील वो जो बाहर का दोस्त हो, हबीब वो जो अंदर का दोस्त हो।

तुम तो हो मग्ज़ और पोस्त और हैं बाहर के दोस्त
तुम हो दरूने सरा तुम पे करोड़ों दुरूद

कलीम और हबीब में फ़र्क़

जिस तरह ख़लील और हबीब में फ़र्क़ है इसी तरह कलीम और हबीब में भी फ़र्क़ है चुनांचे:

(8) कलीम वो जो रब से कलाम करने तूर के पहाड़ पर जाये, हबीब वो जिसे रब कलाम करने के लिए अर्श पर बुलाए।

(9) कलीम वो जो सिफ़ात की तजल्ली की झलक की ताब ना लाए, हबीब वो जो ऐने ज़ाते किबरिया देखे और मुस्कुराए।

(10) कलीम वो जिस की राज़ दाराना गुफ़्तगु महबूब को सुना दी जाएं, हबीब वो जिस से हम कलामी की बातें किसी को ना बताई जाएं।

(11) कलीम वो जिसका असा (लाठी) ग़ज़ब का अज़दहा हो, हबीब वो जिसका असा (लाठी) गिरतों का सहारा हो

असाए कलीम अज़्दहाये ग़ज़ब था
गिरतों का सहारा असाए मुहम्मद

(12) कलीमुल्लाह वो जो रब से अर्ज़ करे: मुझे अपना आप दिखा, हबीबुल्लाह वो जिसे रब तक़ाज़ों से बुलाए, अपना दीदार कराए, उनको या मुहम्मद फ़रमाए।

रूहुल्लाह और हबीबुल्लाह में फ़र्क़

ऐसे ही रूहुल्लाह और हबीबुल्लाह में भी फ़र्क़ है चुनांचे:

(13) रूहुल्लाह वो कि जब उस की पाक माँ को तोहमत लगे तो उस के बचपन शरीफ़ की मीठी प्यारी बातों के ज़रीये इस तय्यिबा ताहिरा की इस्मत

(यानी पाकी) बयान की जाये यानी उस का गवाह बच्चा हो, हबीबुल्लाह वो कि जब उस की ज़ौजा तय्यिबा ताहिरा को तोहमत लगे तो ख़ुद ख़ालिक़ गवाही दे।

(14) रूहुल्लाह वो जिसका दम बे जान जिस्मों को चंद रोज़ आरिज़ी ज़िंदगी बख़्शे मगर हबीबुल्लाह वो जिसका नाम बे जान मुर्दा दिलों को दाइमी (हमेशगी की) ज़िंदगी बख़्शे और उस का येह फ़ैज़ क़ियामत तक जारी रहे।

(15) रूहुल्लाह वो जो मरे हुए इन्सानों हैवानों को ज़िंदा करे, हबीबुल्लाह वो जो ख़ुश्क यानी सूखी लकड़ियों, कंकरों को ज़िंदगी और गोयाई यानी बोलने की ताक़त बख्श कर उनसे अपना कलिमा पढ़वाऐ।

सफ़ीयुल्लाह और हबीबुल्लाह में फ़र्क़

अब सफ़ीयुल्लाह और हबीबुल्लाह के फ़र्क़ को मुलाहिज़ा कीजिए:

(16) सफ़ीयुल्लाह वो जिन्हें एक बार फ़रिश्ते सज्दा करें, हबीबुल्लाह वो जिन पर हमेशा अल्लाह पाक और फ़रिश्ते दुरूद भेजें।

(17) सफ़ीयुल्लाह वो जो जिस्मों के वालिद हैं, हबीबुल्लाह वो जो रूहों के वालिद हैं।

(18) सफ़ीयुल्लाह वो जो सारे इन्सानों के वालिद हैं, हबीबुल्लाह वो जो सारे आलम की अस्ल हैं जिनके नूर से अर्श, फ़र्श, लौह, क़लम वग़ैरा बनें।

(19) सफ़ीयुल्लाह वो जिन्हें अल्लाह पाक ने चीज़ों का नाम सिखाया, हबीबुल्लाह वो जिसे रहमान ने क़ुरआन सिखाया।

शाने मुस्तफ़ा ब ज़बाने जिब्राईल

अब फ़रिश्तों के सरदार, हज़रते जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम से शाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते हैं, चुनांचे आप बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं:

قَلَّبْتُ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَلَمْ اَجِدْ رَجُلًا اَفْضَلَ مِنْ مُحَمَّدٍ۔

यानी मैंने ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब छान डाले मगर मुहम्मद से अफ़ज़ल किसी को ना पाया।

(المعجم الاوسط،۴/۳۷۳،حدیث:۶۲۸۵)

इसी बात की तरफ़ इशारा करते हुए सरकारे आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमातुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं:

यही बोले सिदरा वाले चमने जहां के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाये का ना पाया
तुझे यक ने यक बनाया

मुहम्मद दुनिया की जान हैं। कैसे ?

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारी मख्लूक़ात में अफ़ज़ल किया, और जो कमालात दीगर अंबिया व रसुल को फ़र्दन फ़र्दन अता किए वो सब और बहुत कुछ अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अता किया जिनमें किसी का कोई हिस्सा नहीं, सारी कायनात को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए बनाया गया, उन्हीं के लिए सजाया गया, यहां तक कि हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की भी जान हैं आला हज़रत रहमातुल्लाह अलैह हदाइक़े बख्शिश में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान बयान करते हुए लिखते हैं:

वो जो ना थे तो कुछ ना था वो जो ना हों तो कुछ ना हो
जान हैं वो जहाँ की जान है तो जहान है

इस शेअर को आपने पहले भी कई मर्तबा सुना होगा, लेकिन इस शेअर पर कभी ग़ौर ना किया होगा, अगर ग़ौर करते तो ज़रूर आपके ज़ेहन में पाँच सवाल उभर कर सामने आते, और वो सवाल येह हैं:

पाँच सवाल

(1) **पहला सवाल** येह है कि आला हज़रत ने इस शेअर में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया की जान कहा है, कि {जान हैं वो जहाँ की}और जान एक ऐसी चीज़ है जो दिखाई नहीं देती, जब कि आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो दिखाई देते हैं, और लोगों ने देखा तभी तो देखने वाले लोग सहाबी बने, और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ना देखते तो सहाबी ना बनते, पस अगर

आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की जान हैं तो उन्हें भी जान की तरह दिखाई नहीं देना चाहिए।

(2) **दूसरा सवाल** येह है कि जान के लिए सारा जिस्म होता है, लिहाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए दुनिया की हर चीज़ होनी चाहिए।

(3) **तीसरा सवाल** येह है कि जिस तरह जान की हुकूमत जिस्म के हर उज़्व यानी अंग पर होती है कि जान अगर हाथ को उठाना चाहे तो वो उठ जाता है, पैर को चलने का हुक्म करे तो पैर चलने लगता है, दिमाग़ को ग़ौरो फ़िक्र करने को कहे तो वो ग़ौरो फ़िक्र करने लग जाता है, तो क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भी इस दुनिया पर हुकूमत है कि दुनिया की जिस चीज़ को जो हुक्म करें वो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ करने लगे।

(4) **चौथा सवाल** येह है कि जान को जिस्म से पहले पैदा किया गया है तो क्या सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी दुनिया से पहले पैदा किया गया है या नहीं ?

(5) **पांचवां सवाल** येह है कि जब जान जिस्म से जुदा हो जाती है तो जिस्म मर जाता है अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की जान हैं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस दुनिया से जाने के बाद इस दुनिया को मर जाना चाहिए यानी ख़त्म हो जाना चाहिए हालाँकि दुनिया ख़त्म नहीं हुई बल्कि चल रही है

इन सवालात के जवाबात क्या होंगे ?

लिहाज़ा इस शेअर में येह पाँच सवालात हुए, अब उनके जवाबात क्या होंगे ? तो आईए चलते हैं उसी इमाम के पास जो 55 से ज़ाइद उलूम का जामेअ है, हर फ़न मौला है, उसी की बारगाह में अरीज़ा पेश करते हैं और अर्ज़ करते हैं: ऐ इमामे अहले सुन्नत, आप के शेअर पर होने वाले इन पाँच सवालात के जवाबात क्या होंगे ? तो गोया कि बारगाहे आला हज़रत अलैहि रहमा से जवाब आया इन पांचों सवालात के जवाबात हदाइक़े बख़्शिश में मौजूद हैं।

जब मैंने उनकी हदाइक़े बख्शिश को पढ़ना शुरू किया तो अलहम्दु लिल्लाह मुझे इन तमाम सवालात के जवाबात मिल गए।

आप सोच रहे होंगे कि वो जवाबात क्या हैं ? तो लीजिए आप भी सुनिए:

पहले सवाल का जवाब

(1) पहला जवाब: जान दिखाई नहीं देती मगर साहिबे बसीरत को दिखाई दे जाती है। पस इसी तरह मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिखाई नहीं देते मगर साहिबे बसीरत को दिखाई देते हैं बे बसीरत को मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिखाई नहीं देते। सिद्दीक़े अकबर, फ़ारूक़े आज़म, उसमाने गनी और अली को दिखते हैं,अबू जहल और दीगर कुफ़्फ़ार को नहीं दिखाई देते, हिजरत की रात मक्का के काफिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर को घेरे हुए हैं कि निकलें तो हमला करें, मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निकल कर तशरीफ़ ले गए, कुफ़्फ़ारे मक्का मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ना देख सकें, आला हज़रत अलैहि रहमा हदाइक़े बख्शिश में इसी वाक़िया की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

जान हैं जान क्या नज़र आए
क्यों अदू गिर्दे ग़ार फिरते हैं
लाखों कुदसी हैं काम ख़िदमत पर
लाखों गिर्दे मज़ार फिरते हैं

ग़ारे सौर का वाक़िया

ग़ारे सौर में जब कुफ़्फ़ार की आहट पा कर आशिक़े अकबर हज़रते सिद्दीक़ अकबर रज़ी अल्लाहु अन्हु कुछ घबरा गए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब दुश्मन हमारे इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वो अपने क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا۔ (پ۱۰، التوبۃ:۴۰)

तर्जमा: गम ना खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

आला हज़रत,इमामे इशक़ो मुहब्बत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस मोजज़ए आलीशान और दुश्मन की नाकामी को बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

जान हैं जान क्या नज़र आए
क्यों अदू गिर्दे ग़ार फिरते हैं

कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जान हैं और जान दिखती नहीं तो तुम्हें कैसे दिखेगी।

दूसरे सवाल का जवाब

(2) दूसरा जवाब: जान के लिए जिस्म का हर उज़्व यानी अंग होता है, और मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुनिया की जान हैं, लिहाज़ा दुनिया की हर चीज़ मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, और येह एक दुनिया ही क्या बल्कि जितनी भी दुनिया हैं वो सब मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हैं। आला हज़रत फ़रमाते हैं:

ज़मीनो ज़माँ तुम्हारे लिए मकीनो मकान तुम्हारे लिए
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिए बने दो जहाँ तुम्हारे लिए

आला हज़रत फ़रमाते हैं येह दुनिया ही क्या बल्कि तेरा जिस्म और तेरे जिस्म का एक एक रूंगटा और तेरी जान सब कुछ मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है, फ़रमाते हैं:

दहन में ज़बां तुम्हारे लिए बदन में है जां तुम्हारे लिए
हम आए यहां तुम्हारे लिए उठें भी वहां तुम्हारे लिए

पस आला हज़रत ने येह बात ज़ाहिर कर दी कि तुम्हारा जिस्म और जान ही नहीं बल्कि तुम्हारा इस दुनिया में आना मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, और क़ियामत में उठना मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, और क़ियामत बरपा ही इसलिए होगी कि सारे लोग मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़ाम देख लें, मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान देख लें। आला हज़रत के भाई जान, मौलाना हसन रज़ा ख़ान अलैहि रहमा अपने दीवान में लिखते हैं:

दिखाई जाएगी मह्शर में शाने महबूबी
कि आप ही की ख़ुशी आपका कहा होगा
ख़ुदाए पाक की चाहेंगे अगले पिछले ख़ुशी
ख़ुदाए पाक ख़ुशी उनकी चाहता होगा

और दूसरे शेअर में लिखते हैं:

फ़क़त इतना सबब है इनअिकादे बज़्मे मह्शर का
कि उनकी शाने महबूबी दिखाई जाने वाली है

तीसरे सवाल का जवाब

(3) तीसरा जवाब: जैसे जान की हुकूमत जिस्म पर होती है वैसे ही मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हुकूमत दुनिया, चांद, सूरज बल्कि हर उस चीज़ पर जारी है जिसको मेरे रब ने पैदा किया है। आला हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं:

इसालते कुल इमामते कुल सियादते कुल इमारते कुल
हुकूमते कुल विलायते कुल ख़ुदा के यहां तुम्हारे लिए
तुम्हारी चमक तुम्हारी दमक तुम्हारी झलक तुम्हारी महक
ज़मीनो फ़लक सिमाको समक में सिक्का निशाँ तुम्हारे लिए
क्यों ना ज़ेबा हो तुझे ताजवरी, तेरे ही दम की है सब जल्वागरी
मलको जिन्नो बशर हूरो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं

इख़्तियाराते मुस्तफ़ा ﷺ

अस्ल में इख़्तियारात की दो किस्में हैं:

(1) इख्तियारे तक्वीनी यानी दुनिया का इख़तियार। यानी जो चाहें जिसे चाहें अता फ़रमाएं, और जो चाहें जिस से चाहें वापिस ले लें।

(2) इख्तियारे तशरीई यानी शरीअत का इख्तियार। यानी हलालो हराम के अहकाम।

और अल्लाह पाक ने दोनों तरह के इख़्तियारात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ब्ज़े में कर दिए हैं कि जिस पर जो चाहें हराम फ़रमा दें और जिसके लिए जो चाहें हलाल कर दें और जो फ़र्ज़ चाहें मुआफ़ फ़रमा दें। और जिस को चाहें ग़नी

कर दें। इख़्तियाराते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तफ़सीली बयान सगे अत्तार की किताब **आसान फ़र्ज़ उलूम** से पढ़ा जा सकता है।

चौथे सवाल का जवाब

(4) चौथा जवाब: जिस तरह जान को जिस्म से पहले पैदा किया गया है ऐसे ही मेरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी मेरे अल्लाह ने दुनिया से पहले बल्कि हर चीज़ से पहले अपने नूर से पैदा फ़रमाया है, आला हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं:

ना रुहे अमीं ना अर्शे बरीं, ना लौहे मुबीं कोई भी कहीं
ख़बर ही नहीं जो रम्ज़ें खुलीं, अज़ल की निहां तुम्हारे लिए

है उन्हीं के दम क़दम की बागे आलम में बहार
वो ना थे आलम ना था गर वो ना हों आलम नहीं

बरात का सारा मजमा दूल्हा के दम से होता है, हदीस में है:

لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاك

तर्जमा: ऐ महबूब! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ना होते तो आसमान पैदा ना होते।

तो दुनिया में जो कुछ है वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दम क़दम से है। मज़ीद हदीसे नूरी पीछे गुज़र चुकी है जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللهُ نُوْرَ نَبِيِّكَ يَا جَابِرُ!

तर्जमा: ऐ जाबिर! अल्लाह पाक ने सबसे पहले तेरे नबी के नूर को पैदा फ़रमाया।

(کشف الخفاء، حرف الهمزة مع الواو، ۱/۲۳۷)

ख़ल्क़त के वो दूल्हा हैं महफ़िल येह उन्ही की है
है उन ही के दम से येह सब अंजुमन आराई

पांचवें सवाल का जवाब

(5) पांचवां जवाब: सवाल येह था कि जब जान जिस्म से जुदा हो जाती है तो जिस्म मर जाता है अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की जान हैं तो

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस दुनिया से जाने के बाद इस दुनिया को मर जाना चाहिए यानी ख़त्म हो जाना चाहिए हालाँकि दुनिया ख़त्म नहीं हुई बल्कि चल रही है।

इस सवाल का जवाब येह है कि यक़ीनन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की जान हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने से दुनिया रुक जाती है जैसे जान के निकलने से जिस्म की हरकत और सांस रुक जाती है, इस की दलील मेअराज का सफ़र है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए वहां अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की इमामत फ़रमाई। और फिर हमारे आक़ा बैतुल मुक़द्दस से आसमानों पर तशरीफ़ ले गए। अल्लाह पाक के कुर्ब का वो मर्तबा पाया कि कभी किसी इन्सान या फ़रिश्ते, नबी या रसूल ने ना पाया था। ख़ुदावन्दे आलम का जमाले पाक अपनी मुबारक आँखों से देखा, कलामे इलाही सुना, और फिर हमारे आक़ा ने आसमान और ज़मीन के तमाम मुल्क मुलाहिज़ा फ़रमाए, जन्नतों की सैर की, दोज़ख का मुआइना फ़रमाया, यहां तक कि जब मेरे मुस्तफ़ा इतना लम्बा सफ़र कर के वापस हुए तो आप का बिस्तर मुबारक गर्म और दरवाज़ की कुंडी हिल रही थी जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छोड़कर गए थे। इतने लंबे अर्से में ज़मीन पर एक लम्हा भी नहीं गुज़रा। जब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़मीन से आसमानों पर तशरीफ़ ले गए तो ज़मीन का निज़ाम रुक गया जिस तरह जान के निकलने से जिस्म का निज़ाम रुक जाता है।

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल फ़रमाने से येह मत समझो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए हैं बल्कि वो दुनिया में ही मौजूद हैं तभी दुनिया चल रही है अगर दुनिया से तशरीफ़ ले जाते तो दुनिया रुक जाती, ख़त्म हो जाती। पस दुनिया का ना रुकना और ख़त्म ना होना इस बात की दलील है कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में मौजूद हैं।

ख़ल्क़त के वो दूल्हा हैं महफ़िल येह उन्ही की है
है उन ही के दम से येह सब अंजुमन आराई

मुहम्मद ﷺ पर होने वाले ऐतिराज़ात के जवाबात अल्लाह ने दिए

ऐ आशिक़ाने रसूल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्मतों के क्या कहने जितना बयान करो कम है कि उनके औसाफ़ो कमालात बेइंतिहा हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अज़मत के बाब में सीरत रसूल अरबी के पेज नंबर 580 में लिखा है, नबी करीम का एक वस्फ़ यानी खूबी येह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मन को ख़ुद अल्लाह पाक जवाब देता है, हालाँकि अल्लाह पाक की आदत येह थी कि अगर पहले की कौमें अपने नबी पर ऐतिराज़ करती थीं, तो अल्लाह पाक पैग़ंबर से जवाब दिलवाता था, रब ख़ुद जवाब नहीं देता था चुनांचे:

क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते नूह का जवाब

(1) नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने जब हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से कहा:

اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۰﴾ (پ۸،الاعراف:۶۰)

तर्जमा: बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।

उनका जवाब ख़ुद हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने दिया, और फ़रमाया:

قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۸،الاعراف:۶۱)

तर्जमा:ऐ मेरी क़ौम! मुझ में गुमराही कुछ नहीं, मैं तो रब्बुल आलमीन का रसूल हूँ

क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते हूद का जवाब

(2) हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम ने हज़रते हूद अलैहिस्सलाम से कहा:

اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۶۶﴾ (پ۸،الاعراف:۶۶)

तर्जमा: बेशक हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं।

इस पर हज़रते हूद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۷﴾ (پ۸،الاعراف:۶۷)

तर्जमा:ऐ मेरी क़ौम मुझे बेवक़ूफ़ी से क्या तअल्लुक मैं तो रब्बुल आलमीन का रसूल हूँ।

फ़िरऔन का ऐतिराज़ हज़रते मूसा का जवाब

(3) फ़िरऔन ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था:

اِنِّیۡ لَاَظُنُّکَ یٰمُوۡسٰی مَسۡحُوۡرًا ﴿۱۰۱﴾ (پ۱۵، بنی اسراءیل:۱۰۱)

तर्जमा: ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो तुम पर जादू हुआ है।

इस पर हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

وَ اِنِّیۡ لَاَظُنُّکَ یٰفِرۡعَوۡنُ مَثۡبُوۡرًا ﴿۱۰۲﴾ (پ۱۵، بنی اسراءیل:۱۰۲)

तर्जमा:और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है।

क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते शुऐब का जवाब

(4) शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम ने हज़रते शुऐब अलैहिस्सलाम से कहा:

اِنَّا لَنَرٰىکَ فِیۡنَا ضَعِیۡفًا ۚ وَ لَوۡ لَا رَہۡطُکَ لَرَجَمۡنٰکَ ۫ وَ مَاۤ اَنۡتَ عَلَیۡنَا بِعَزِیۡزٍ ﴿۹۱﴾ (پ۱۲، ہود:۹۱)

तर्जमा:बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं और अगर तुम्हारा कुम्बा ना होता तो हमने तुम्हें पथराओ कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इज़्ज़त नहीं।

हज़रते शुऐब अलैहिस्सलाम उस का जवाब यूं देते हैं:

یٰقَوۡمِ اَرَہۡطِیۡۤ اَعَزُّ عَلَیۡکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ ؕ وَ اتَّخَذۡتُمُوۡہُ وَرَآءَکُمۡ ظِہۡرِیًّا ؕ اِنَّ رَبِّیۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ مُحِیۡطٌ ﴿۹۲﴾ (پ۱۲، ہود:۹۲)

तर्जमा: ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाओ अल्लाह से ज़्यादा है, और उसे तुमने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा, बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के बस में है।

क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते ईसा का जवाब

(5) क़ौम ने हज़रते मरयम से कहा:

یٰۤاُخۡتَ ہٰرُوۡنَ مَا کَانَ اَبُوۡکِ امۡرَاَ سَوۡءٍ وَّ مَا کَانَتۡ اُمُّکِ بَغِیًّا ﴿۲۸﴾ (پ۱۶ مریم۲۸)

तर्जमा: ऐ हारून की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी ना था और ना तेरी माँ बदकार।

हज़रते मरयम का क़ौम को जवाब:

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿۲۹﴾ (پ۱۶ مریم ۲۹)

तर्जमा: इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया, वो बोले हम कैसे बात करें उस से जो पालने में बच्चा है।

इस पर हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का जवाब:

قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِىْ نَبِيًّا ﴿۳۰﴾ (پ۱۶ مریم ۳۰)

तर्जमा: बच्चे ने फ़रमाया: मैं हूँ अल्लाह का बंदा उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला(नबी) किया

وَّ جَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿۳۱﴾ (پ۱۶ مریم ۳۱)

तर्जमा:और उसने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूँ, और मुझे नमाज़ो ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूँ।

وَّ بَرًّا بِوَالِدَتِىْ ۫ وَ لَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿۳۲﴾ (پ۱۶ مریم ۳۲)

तर्जमा: और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त ना किया।

وَ السَّلٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَ يَوْمَ اَمُوْتُ وَ يَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿۳۳﴾ (پ۱۶ مریم ۳۳)

तर्जमा:और सलामती मुझ पर जिस दिन में पैदा हुआ और जिस दिन मरूँगा और जिस दिन ज़िंदा उठाया जाऊँगा।

येह अंदाज़ था अंबियाए किराम के मुताअल्लिक़

तो आपने देखा कि क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते शुऐब अलैहिस्सलाम का जवाब। क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम का जवाब। क़ौम का ऐतिराज़ हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का जवाब। क़ुरआन ने दोनों को बयान किया।

येह अंदाज़ था दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के मुताअल्लिक़, मगर जब बारी आती है हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, तो अंदाज़ बदल गया, कुफ़्फ़ार ने हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत जो तानो तन्क़ीस की,

अल्लाह पाक ने ब ज़ाते ख़ुद उस का जवाब दिया जिससे हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शाने महबूबियत ज़ाहिर होती है। चुनांचे:

पहला ऐतिराज़ः तुम रसूल नहीं

एक मौक़े पर काफ़िरों ने कहा: तुम रसूल नहीं ।(प13,अलराद:43) यानी ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम रसूल नहीं हो, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का इन्कार किया।

अल्लाह पाक ने यासीन शरीफ़ में फ़रमाया:

يٰسٓ ﴿١﴾ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾

तर्जमा:मुझे हिक्मत वाले क़ुरआन की क़सम बेशक ज़रूर तू रसूलों में से है, सीधी राह पर भेजे गए हो।

ऐ आशिकाने रसूल! रब कस्मों का मुहताज नहीं है लेकिन आज बात आई है महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, उंगली उठी है महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, दिल दुखाया गया है महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का, झुठलाया गया है महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, तो अल्लाह पाक ने भी अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दिल जोई के लिए, काफिरों के ताने की वजह से जो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रन्ज हुआ था, उस रन्ज को ग़लत करने के लिए, महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ढारस देने के लिए, कुफ़्फ़ार को ज़र्बे शदीद लगाने के लिए अल्लाह पाक नरम गोशा थोड़े ही इख्तियार फ़रमाएगा, बल्कि बड़ी शद्दो मद के साथ और कसम के साथ फ़रमाता है: प्यारे मुझे क़सम है इस क़ुरआन की जिस में कोई शक की गुंजाइश नहीं, महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम ज़रूर रसूलों में से हो।

येह शान है मेरे मुस्तफ़ाﷺ की

येह शान है मेरे और आप के नबी, आख़िरी नबी, मक्की मदनी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, कि ऐतिराज़ कुफ़्फ़ार करें जवाब रब्बे कायनात दे, तभी तो शायर लिखता है:

सारे नबियों के ओहदे बड़े हैं लेकिन आक़ा का मन्सब जुदा है
वो इमामे सफ़े अंबिया हैं उन का रुतबा बड़ों से बड़ा है

दूसरा ऐतिराज़ तुम मजनून हो

एक मर्तबा मक्का के काफिरों ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मजनून यानी पागल कहा, और उन की येह बात मज़ाक के तौर पर थी चुनांचे क़ुरआन बयान करता है कि उन बद बख़्तों ने कहा:

يَاَيُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿۶﴾ (پ۱۴، الحجر:۶)

तर्जमा:ऐ वो जिन पर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून यानी पागल हो।

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब

अल्लाह पाक ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिब से उन बद बख़्तों के इस ऐतिराज़ पर क़ुरआन की आयात नाज़िल फ़रमा दिया:

نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا یَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾ مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾

وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿۴﴾ (پ۲۹، القلم:۲)

तर्जमा: नून और क़लम और उस के लिखे की क़सम।

ऐ आशिकाने रसूल! ज़रा ग़ौर करो रब के कलाम के लफ़्ज़ों में, अल्लाह ने फ़रमाया: मुझे क़लम की भी क़सम है, और क़लम ने जो कुछ लिखा उस की भी क़सम है, तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून यानी पागल नहीं हो, मुझे क़सम है क़लम और उस के लिखे हुए की, तुम पर तो अल्लाह का फ़ज़्ल है, तुम मजनून नहीं हो, बल्कि तुम्हारे लिए बेहद व बे हिसाब अज्र है, और बेशक तुम्हारा अख़्लाक़ बड़ा आला है।

अल्लाह ने महबूब ﷺ की खूबियाँ बयान की

ऐ आशिक़ाने रसूल! यहां पर ज़रा ग़ौर करो, कुफ़्फ़ार ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मजनून यानी पागल कहा, और मजनून के अंदर अक़्ल नहीं होती,उस के अंदर कोई फ़ज़ीलत वाली बात, कमाल वाली खूबियाँ नहीं होतीं, उस

का हर काम बे तरतीब और बे ढंग होता है, उस के अंदर कोई हिक्मतो दानाई नहीं होती, अल्लाह पाक ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात से पागल पन का इन्कार किया और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खूबियाँ भी बयान फ़रमाई, और फ़रमाया: महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे रब का लुत्फ़ो करम तेरे शामिले हाल है, उसने तुम पर इन्आमो एहसान फ़रमाया, नुबूव्वत और हिक्मत अता की, फ़साहते ताम्मा, अक्ले कामिल, पाकीज़ा ख़साइल, पसंदीदा अख्लाक़ अता किए, मख्लूक़ के लिए जिस क़दर कमालात मुम्किन हैं सब कमालात अता फ़रमाए, हर ऐब से नबी की ज़ात को पाक रखा।

अल्लाहु अकबर! महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अख्लाक़ कैसा? ऐसा कि काफ़िरों बद बख़्तों की गालियों के जवाब में मुस्कुरा के गुज़र जाना येह तेरी ही अदा है, येह तेरी ही शान है उसी ख़ुल्के अज़ीम का सदक़ा है कि अपने तो अपने ग़ैरों को भी इस दर से मिलता है और तलब से सवा मिलता है।

कोई आ जाये तलब से भी सिवा देते हैं
आए बीमार तो हर दुख की दवा देते हैं
गालियां देता है कोई तो दुआ देते हैं
दुश्मन आ जाए तो चादर भी बिछा देते हैं

तीसरा ऐतिराज़: तुम को तुम्हारे रब ने छोड़ दिया

एक मर्तबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि चंद रोज़ वही ना आई तो मक्का के काफिरों ने ताना देते हुए कहा: कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन के रब ने छोड़ दिया और तुम्हारे रब ने तुम्हें नापसंद जान कर छोड़ दिया है, तुम उस को अच्छे नहीं लगे इसलिए छोड़ दिया, तुम हमारे माबूदों को बुरा कहते थे इसलिए उस ने तुम्हें छोड़ दिया।

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब

जब येह ऐतिराज़ हुआ तो अल्लाह पाक की जानिब से जवाब आया:

وَالضُّحٰى ۝١ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣ (پ٣٠، الضحیٰ:١-٣)

तर्जमा: चाश्त की क़सम और रात की जब पर्दा डाले कि तुम्हें तुम्हारे रब ने ना छोड़ा और ना मकरूह जाना।

अल्लाह पाक ने कसम के साथ फ़रमाया: प्यारे तुम्हारे रुख़े रौशन की क़सम, तुम्हारी ज़ुल्फ़ों की क़सम, नहीं छोड़ा तुम्हारे रब ने और ना ही मकरूह जाना।

इन आयात में मक्के के काफिरों का रद्द फ़रमाया और साथ में महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ो तौसीफ़ भी बयान फ़रमाई: कि प्यारे तुम्हारी तो हर आने वाली घड़ी पिछली घड़ी से बेहतर है, और अन्क़रीब तुम्हारा रब तुम्हें इतना अता करेगा कि प्यारे हबीब तुम राज़ी हो जाओगे, **अल्लाहु अकबर!** पूरी नाअते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान फ़रमा दिया।

चौथा ऐतिराज़ तुम्हारा हाथ टूट जाये

एक मौक़े पर अबू लहब ने कहा कि ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारा हाथ टूटे।

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब

इस के जवाब में अल्लाह ने फ़रमाया

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ﴿۱﴾

तर्जमा: तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वो तबाह हो ही गया।

ऐ अबू लहब! मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक हाथ की बात करता है, तेरे दोनों हाथ टूट जाएं, और अल्लाह पाक ने फ़रमाया: और टूट भी गए। अल्लाहु अकबर!

तुम समझते क्या हो अपने आप को? मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर चले उंगली उठाने, मेरा महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश है, तो येह ना समझो कि वो अकेले हैं, बल्कि उन के लिए तो मेरी सारी ख़ुदाई है।

पांचवां ऐतिराज़: तुम शायर हो

मक्का के काफिरों से जब ईमान लाने की बात की गई तो उन्होंने कहा कि क्या हम एक दीवाने शायर के कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें?

اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۳۶)

तर्जमा: क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शायर के कहने से।

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब

मक्का के काफिरों ने इस बार महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीवाना शायर कहा तो अल्लाह पाक की जानिब से जवाब आया:

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَ صَدَّقَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳۷﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۳۷)

तर्जमा: बल्कि वो तो हक़ लाए हैं और उन्होंने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई।

وَ مَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ مَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗ (پ۲۳، یٰسٓ:۶۹)

तर्जमा: और हमने उन को शेअर कहना ना सिखाया और ना वो उनकी शान के लाइक़ है।

छटा ऐतिराज़ : तुम अबतर हो

एक रोज़ हुज़ूर मस्जिदे हराम से निकल रहे थे कि बाबे बनी सहम में आस बिन वाइल सहमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिला और बात किया। जब वो मस्जिद में दाख़िल हुआ तो क़ुरैश के बदबख्तों ने पूछा कि तुम किस से बातें कर रहे थे आस बिन वाइल बोला कि अबतर (यानी बे नस्ल) से, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहिब ज़ादे जो हज़रते ख़दीजा के पेट मुबारक से पैदा हुए थे इंतिक़ाल कर चुके थे इसलिए आस बिन वाइल ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को येह ताना दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल कट गई, अब उन का ज़िक्र मिट जाएगा। (مدارج النبوت، قسم پنجم، باب اول، ذکر اولاد کرام انحضرت صلی اللہ علیہ وسلم، ج۲، ص۵۱۵)

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब

अल्लाह पाक की जानिब से जवाब आया:

اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَ انْحَرْ ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿۳﴾

तर्जमा:ऐ महबूब!बेशक हम ने तुम्हें बेशुमार खूबियाँ अता फरमाईं, तो तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो, बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर खैर यानी भलाई से महरूम है।

इकलौते बेटे के इंतिक़ाल पर बाप की कैफ़ीयत

ऐ आशिक़ाने रसूल! ज़रा आप अंदाज़ा लगाइये! कि एक तो बेटे की वफ़ात का ग़म अभी पुराना हुआ नहीं, और ऊपर से अबतर का ताना, उस बाप से पूछो जिसकी इकलौती औलाद का इंतिक़ाल हो जाये, ऐसे आलम में उस पर क्या बीत रही होती है, भूको प्यास सब ख़त्म हो चुकी होती है, ऐसा लगता है जैसे दुनिया अपनी तमाम तर ज़ेबो ज़ेबाइश के बावजूद वीरान हो गई है, अपनी तमाम वुसअतों के बावजूद तंग है, और उस बाप को ऐसा क्यों लगता है? इस लिए कि उस के दिल के चमन की इकलौती कली मुरझा गई है।

तो अभी बेटे की जुदाई का ग़म ख़त्म भी ना हुआ था कि बदबख्त आस बिन वाइल ने जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अबतर कहा होगा, तो क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ ना हुई होगी? दिल ना दिखा होगा? कि बदबख्त मुझे अबतर कह रहा है, मुझे दुम बुरीदा कह रहा है, जिसके लिए ज़मीन का बिछौना बिछाया गया, आसमान का शामियाना ताना गया, जिसके दम क़दम से दुनिया की बाग़ो बहार है।

है उन्हीं के दम क़दम की बागे आलम में बहार
वो ना थे आलम ना था गर वो ना हों आलम नहीं

वो जो ना थे तो कुछ ना था वो जो ना हों तो कुछ ना हो
जान हैं वो जहान की जान है तो जहान है

पहले महबूबﷺ की दिलजोई फिर दुश्मन को जवाब

जिस के दम से दुनिया की बहार है उस को कह रहा है कि तुम्हारी नस्ल ख़त्म हो गई, तकलीफ़ तो क्लबे अतहर व अक़्दस में हुई होगी, मगर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो सब्र करने वालों के सरदार हैं, मगर उन का रब तो अह्कमुल हाकिमीन है वो जवाब देगा।

और अल्लाह पाक ने भी बराहे रास्त उस दुश्मन को जवाब ना दिया, बल्कि पहले महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दिलजोई फ़रमाई, महबूब की तारीफ़ो तौसीफ़ बयान फ़रमाई, अपनी अताओं का तज़्किरा किया, ताकि जो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर रन्ज और दुख का असर है पहले वो जाता रहे, इसी लिए अल्लाह पाक ने फ़रमाया:

إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ۝١

ऐ महबूब!ﷺ हम ने आप को बेशुमार खूबियां अता फ़रमाईं;फिर फ़रमाया:

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ ۝٣

बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही अबतर है।

हर ख़ैर से महरूम तेरा दुश्मन

मैं क़ुर्बान आला हज़रत अलैहि रहमा के इश्क़े रसूल पर, आपने अबतर का मअना वो ना किया जिस मअना का इरादा आस बिन वाइल ने किया था, यानी नस्ल खत्म होना, बल्कि आला हज़रत ने अबतर का तर्जमा किया: बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर ख़ैर यानी भलाई से महरूम है। यानी आला हज़रत अलैहि रहमा ने उस दुश्मन को कहीं का छोड़ा ही नहीं, हर ख़ैर यानी भलाई से महरूम क़रार दिया।

चुनांचे ऐसा ही हुआ कि आस बिन वाइल का नाम मिट गया मगर हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम क़ियामत तक रौशन है और रहेगा और आप की औलाद क़ियामत तक रहेगी।

कौसर का मअना क्या है

अल्लाह पाक ने फ़रमाया: ऐ महबूब! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमने आपको कौसर का मालिक बनाया, और आप लफ़्ज़े कौसर की तशरीह तफ़सीर की किताबों में देखें कि लफ़्ज़व कौसर का मअना क्या है?

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास की तफ़सीर, तफ़सीरे इब्ने अब्बास, तफ़सीरे ख़ाज़िन, तफ़सीरे मदारिक, तफ़सीरे बैज़ावी, तफ़सीरे मज़हरी, तफ़सीरे रूहुल

मानी, तफ़सीरे रूहुल बयान, तफ़सीरे सिरातुल जिनान, तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तफ़सीरे नूरुल इरफ़ान, सारी तफ़ासीर में लफ्ज़े कौसर के मुख़्तलिफ़ मआनी आपको मिलेंगे, किसी ने पाँच मअना बयान किए, किसी ने दस, किसी ने पंद्रह, तो किसी ने बीस, मगर हद कर दी इमामे राज़ी ने कि उन्होंने अपनी तफ़सीर, तफ़सीरे कबीर में कौसर के चालीस मआनी बयान किए हैं, और लिखा:

कौसर से मुराद (1)नूरे क़ल्बे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, (2)कौसर से मुराद औलाद रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, (3)कौसर से मुराद उम्मत की कसरत भी है, (4)कौसर से मुराद जन्नत भी है, (5)कौसर से मुराद मक़ामे महमूद भी है, (6)कौसर से मुराद हौज़े कौसर भी है, (7)कौसर से मुराद शफ़ाअत भी है, (8)कौसर से मुराद मोजज़ात भी हैं, (9)कौसर से मुराद किताब भी है, (10)कौसर से मुराद इल्म भी है, (11)कौसर से मुराद मुस्तफ़ा की फ़ुतूहात भी हैं।

साहिबे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का क़ौल

और तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के अंदर लफ़्ज़े कौसर के बारे में सदरुल अफ़ाज़िल नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहि रहमा ने लिखा:

(12)कि कौसर का मअना येह है कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमने आपको फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़ज़ल किया, हुस्ने ज़ाहिर भी दिया, हुस्ने बातिन भी, नस्बे आली भी, नुबूव्वत भी, किताब भी, हिक्मत भी, इल्म भी, शफ़ाअत भी, हौज़े कौसर भी, मक़ामे महमूद भी, कसरते उम्मत भी, दुश्मने दीन पर ग़लबा भी, कसरते फ़ुतूहात भी और बेशुमार नेअमतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत यानी खत्म नहीं। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम येह आस बिन वाइल तुझे अबतर कह रहा है, येह जानता नहीं कि तेरी शान क्या:

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलुव क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फ़रेरा तेरा
आसमां ख्वान ज़मीं ख्वान ज़माना मेहमान
साहिबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

ऐसी फ़ज़ीलतें अता की जिन की हद ही नहीं

प्यारे इतनी नेअमतें और फ़ज़ीलतें हमने अता की हैं कि जिन की हद ही कोई नहीं, जिस की इंतिहा ही कोई नहीं, अल्लाह ने तुम्हें ऐसी प्यारी नेअमतों का मालिक बना दिया है कि:

तेरा मसनदे नाज़ है अर्शे बरीं तेरा महरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो जहाँ है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम
वो ख़ुदा ने है मर्तबा तुझको दिया ना किसी को मिले ना किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम

जहां गिन्तियाँ ख़त्म हो जाएं, जहां इन्सान के शुमार का अंदाज़ा ख़त्म हो जाये, उस से भी मा वरा नेअमतें अता की हैं और रब फ़रमाता है: तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनना चाहो तो अल्लाह की नेअमतों को गिन नहीं सकते।

नेअमतुल्लाह से कौन सी नेअमतें मुराद हैं?

क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाह अलैहि ने पारा 13 सूरह इब्राहीम की आयत नंबर 34 के तहत लिखा है कि येह कौन सी नेअमतें हैं जिनका अल्लाह ने ज़िक्र किया, कि तुम शुमार नहीं कर सकते (यानी गिन) नहीं सकते ? फिर ख़ुद ही फ़रमाते हैं: इस से मुराद वो नेअमतें हैं जो अल्लाह पाक ने कौसर की सूरत में अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अता फ़रमाई हैं। अल्लाहु अकबर! इमामे अहले सुन्नत की सुनो:

तेरे तो वस्फ़ ऐब तनाही से हैं बरी
हैराँ हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे
कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वाँ की ख़ामोशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूं तुझे
लेकिन रज़ा ने ख़त्मे सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बंदा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

अबतर तू नहीं बल्कि तेरा दुश्मन

आस बिन वाइल ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अबतर कहा, अल्लाह ने फ़रमाया: महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबतर तुम नहीं हो, तुम्हारा दुश्मन अबतर है, जड़ कटा तेरा दुश्मन, कटी नस्ल वाला तेरा दुश्मन, चर्चा मिटेगा तेरे दुश्मन का, ज़िक्र मिटेगा तेरे दुश्मन का , नाम ख़त्म होगा तेरे दुश्मन का, नस्ल ख़त्म होगी तेरे दुश्मन की, प्यारे तेरा नाम मिटने के लिए नहीं बनाया, तेरा ज़िक्र ख़त्म होने के लिए नहीं बनाया, येह दुनिया दारी में होता कि बेटे ना रहें तो नस्ल ख़त्म हो जाती है, और वह कुफ़्फ़ार समझते थे, बेटा नहीं रहा, औलाद नहीं रही, तो नस्ल नहीं चलेगी, लेकिन रब ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद बेटी से चला के दुनिया भर में सय्यदों का फ़ैज़ान जारी फ़रमा दिया।

महबूबﷺ के ज़िक्र को बुलंद ख़ुद अल्लाह करता है

येह दुनिया दारी में होता होगा कि किसी का चर्चा उस के बाप की वजह से, किसी का चर्चा उस के बेटे की वजह से, किसी का चर्चा उस का पीर करे, किसी का चर्चा मुरीद करे, किसी का चर्चा उस के उस्ताद की वजह से, किसी का चर्चा उस के शागिर्द की वजह से, किसी का चर्चा उस का लीडर करे, किसी का चर्चा उस का नौकर करे, किसी का चर्चा उस का मुलाज़िम करे, किसी का चर्चा उस का वज़ीरो मुशीर करे।

लेकिन रब्बे कायनात ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र को ना उस्तादों का मोहताज रखा, ना शागिर्दों का मोहताज रखा, ना पीरों का मोहताज रखा, ना मुरीदों का मोहताज रखा, ना आलिमों का मोहताज रखा, ना वाइज़ों का मोहताज रखा, ना अदीबों का मोहताज रखा, ना ख़तीबों का मोहताज रखा, ना शायरों का मोहताज रखा, ना वज़ीरों का मोहताज रखा, ना अमीरों का मोहताज रखा, ना सियासतदानों का मोहताज रखा, ना लीडरों का मोहताज रखा, ना नौकरों का मोहताज रखा, ना किसी मुलाज़िमों का मोहताज रखा।

प्यारे कोई तेरा ज़िक्र करे, या ना करे, अल्लाह ने तेरे चर्चे को बुलंद कर दिया है, इरशाद हुआ:

وَ رَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ﴿۴﴾ (پ۳۰الشرح ۴)

तर्जमा: और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया।

तू घटाए से किसी के ना घटा है ना घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा
वराफ़अना लका ज़िकरक का है साया तुझ पर
बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा
मिट गए मिटते हैं मिट जाएंगे अअदा तेरे
ना मिटा है ना मिटेगा कभी चर्चा तेरा

और ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल कौसर अता किया है।

कसीर, अक्सर, या किसार नहीं बल्कि अल कौसर फ़रमाया

यहां पर एक एक चीज़ तवज्जो करने के काबिल है कि अल्लाह पाक ने यहां कसीर नहीं, अक्सर नहीं किसार नहीं बल्कि कौसर फ़रमाया है, और कौसर नकरा के साथ नहीं बल्कि अल कौसर मारिफ़ा के साथ फ़रमाया है। जिसका मतलब येह है कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़्यादा नहीं, बहुत ज़्यादा भी नहीं, बहुत ही ज़्यादा भी नहीं, बल्कि बेहद ज़्यादा, बेहदो बेशुमार अता फ़रमाया।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेअमतें हैं उनके खाली हाथ में

कौसर का आलम क्या होगा

ऐ आशिक़ाने रसूल! क़ुराने पाक में आपने पढ़ा होगा। अल्लाह पाक फ़रमाता है: ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप फ़रमा दीजिए कि येह दुनिया की मताअ यानी चीजें क़लील हैं, येह सब कुछ, सब बड़े बड़े शहर, बड़े बड़े मुल्क, येह करोड़ों, अरबों, खरबों चीज़ें, तमाम उलूमो फ़ुनून, सरमाया, सोना, चांदी, हीरे जवाहरात, पैसा, हर चीज़ जो भी दुनिया में है, उनके मुताअल्लिक़ अल्लाह पाक फ़रमाता है दुनिया क़लील है, हालाँकि येह दुनिया कितनी बड़ी है, इस में कितनी

बड़ी बड़ी चीज़ें हैं, इस की करोड़ों अरबों खरबों चीज़ों को क़ुरआन कहता है येह क़लील हैं

लिहाज़ा जिस बारगाह में क़लील का पैमाना इतना बड़ा है, तो प्यारो बताओ वहां कसीर का पैमाना कितना बड़ा होगा? वहां अक्सर का कितना बड़ा पैमाना होगा? फिर वहां किसार का पैमाना कितना बड़ा होगा? और जब कसीर और अक्सर और किसार के पैमाने का अंदाज़ा मैं और आप नहीं कर सकते तो बताओ अल्लाह के दिए हुए अल कौसर का अंदाज़ा कैसे लगा सकते हैं?

महबूबﷺजैसा रब ने किसी को बनाया ही नहीं

येह वो वुजूहात हैं जिसकी वजह से हम कहते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह पाक ने बनाया ही ऐसा है कि इन जैसा कोई है ही नहीं, कौसर का मालिक, कोई है ही नहीं, ख़ैरे कसीर का मालिक, है ही कोई नहीं, महबूबे ख़ुदा है ही कोई नहीं, मेराज का दूल्हा कोई नहीं, कौनैन में इन सा कोई नहीं, हुस्ने सरापा कोई नहीं।

ऐ खत्मे रुसुल मक्की मदनी कौनैन में तुम सा कोई नहीं
ऐ नूरे मुजस्सम तेरे सिवा महबूब ख़ुदा का कोई नहीं
औसाफ़ तो सब ने पाए हैं पर हुस्ने सरापा कोई नहीं
आदम से जनाबे ईसा तक सरकार के जैसा कोई नहीं
येह शान तुम्हारी है आक़ा तुम अर्शे बरीं पर पहुंचे हो
ज़ीशान नबी हैं सब लेकिन मेअराज का दूल्हा कोई नहीं

महबूबﷺ की ज़ात ऐबदार कैसे हो सकती है?

ऐ आशिक़ाने रसूल! महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात ऐबदार हो भी कैसे सकती है कि अल्लाह पाक ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी दलील जो बनाया है, चुनांचे पारा 6 सूरह अन्निसा की आयत नंबर 174 में इरशादे बारी तआला है:

يَاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۴﴾

तर्जमा: ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से वाज़ेह दलील आई और हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन नूर उतारा।

अल्लाह पाक ने अपनी ज़ात पर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दलील बनाया, और दलील जितनी मज़बूत होती है दावा भी उतना निखर के सामने आता है, कमज़ोर दलील दावे को कमज़ोर कर देती है, मैं दावा करूँ कि इस वक़्त रात है, और येह कह कर मैं कमरे के सारे बल्ब बंद कर दूं और कहूं कि देखो चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा है, और अंधेरा होना रात होने की दलील होती है, लिहाज़ा रात होने का मेरा दावा सच्चा है, आप मेरा हाथ पकड़ें और मुझे बाहर ले जा कर कहें: देखो दिन है, क्योंकि चारों तरफ़ उजाला ही उजाला है, सूरज निकला हुआ है।

महबूबﷺ को दलील नहीं बल्कि बुरहान फ़रमाया

तो मेरी दलील का आपने दलील से रद्द कर दिया, और मेरे दावे को ग़लत साबित कर दिया, अब अगर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात में नक़्स होता, कोई कमी होती दलील कमज़ोर होती, तो अल्लाह पाक के वुजूद का दावा कमज़ोर होता, और अल्लाह ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए दलील का लफ़्ज़ भी इस्तिमाल नहीं किया, बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए फ़रमाया बुरहान बना के भेजा है, और बुरहान ऐसी दलील होती है जिसको किसी दलील से रद्द किया ही नहीं जा सकता।

हसीना जमीला दा मुँह मोड़ देता
मुहम्मद बना के क़लम तोड़ देता

और अल्लाह ने अपने रुबूबियत यानी रब होने की दलील उनको बनाया है, ज़रूरी था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात पे कोई ऐब ना हो, कोई नुक़्स ना हो, कोई ख़ामी ना हो, क्योंकि अगर दलील कमज़ोर होती तो रुबूबियत का दावा कमज़ोर हो जाता, तौहीद का दावा मज़बूत है क्योंकि रिसालत की दलील मज़बूत है:

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक्स जहां नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्आ है कि धूवां नहीं

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते गिरामी वुजूदे बारी तआला की मज़बूत और रौशन दलील है, इसलिए अल्लाह ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ज़ात का मज़हर बनाया।

सर से लेकर पांव तक तनवीर ही तनवीर है
गुफ़्तुगू सरकार की क़ुरआन की तफ़सीर है
सोचती तो होगी दुनिया मुस्तफ़ा को देख कर
वो मुसव्विर कैसा होगा जिस की येह तस्वीर है

और मेरे इमाम लिखते हैं:

तेरा मस्नदे नाज़ है अर्शे बरीं तेरा महरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो जहाँ है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम
उस को तौल रहा है जिसको तौला नहीं जा सकता

येह तो आज मौलवी का दिमाग़ ख़राब हो गया है, जो मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तौलने चला है, अगर इतना शौक़ है तो आप मुझ को तौल लें, और मैं आपको तौल लूं, येह बताओ सोनार के छोटे से तराज़ू में रत्ती तोले का हिसाब तो हो जाएगा, क्या मनों टनों का भी हिसाब हो सकता है? सोनार का तराज़ू टूट जाएगा। उस को तौल रहा है जिसको तौला नहीं जा सकता। **अल्लाहु अकबर!**

सुनो हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनो और ख़ुद रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बानी सुनो:

येह सब पर भारी होंगे

हज़रते अबूज़र ग़िफ़ारी से रिवायत है फ़रमाते हैं: मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपने कैसे जाना कि आप अल्लाह पाक के नबी हैं हत्ताकि आपने यक़ीन कर लिया, फ़रमाया: ऐ अबूज़र! मेरे पास दो फ़रिश्ते आए जब कि मैं मक्का के बाज़ पथरीले इलाक़ा में था, उनमें से एक तो ज़मीन की तरफ़ आ गया और दूसरा आसमान और ज़मीन के दर्मियान रहा तो उनमें से एक ने अपने साथी से कहा क्या येह वो ही हैं? उसने कहा हाँ, उसने कहा कि उन्हें एक

शख़्स से तौलो, मैं उस से तौला गया तो मैं वज़नी हुआ, फिर उसने कहा कि इन्हें दस से तौलो, तो मैं उनसे तौला गया मैं उन पर वज़नी हुआ, फिर उसने कहा कि इन्हें सौ से तौलो मैं उनसे तौला गया मैं उन पर भारी हुआ, वो बोला इन्हें हज़ार से तौलो मैं उनसे तौला गया तो मैं उन पर भारी हो गया, गोया मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वो पल्ला हल्का होने की वजह से मुझ पर गिरे पड़ते हैं, तो उनमें से एक ने अपने साथी से कहा कि अगर तुम इन्हें इनकी पूरी उम्मत से तौलो तो भी येह सब पर भारी होंगे।

(مشکوۃ المصابیح، باب فضائل سید المرسلین، فصل ثالث ص ۵۱۵ مطبوعہ مجلس برکات)

वो रब अपनी शान में कैसा होगा?

अल्लाहु अकबर! प्यारो ज़रा ग़ौर तो करो! कि रब ने ऐसा प्यारा हबीब बनाया जिसका कोई मुक़ाबिल नहीं, जिसका कोई मुमासिल नहीं, जिसका कोई सानी नहीं, तो वो रब अपनी शान में कैसा होगा? ख़ुद कैसी शान का मालिक होगा? वो ख़ुद कितनी अज़्मतों, रिफ़अतों, बरकतों का मालिक होगा?

हमने अपने बड़ों से सुना है
एक अल्लाह ही उनसे बड़ा है

ऐ आशिक़ाने रसूल! हर मोमिन के दिल में अपने रब को देखने की चाहत होनी चाहिए और रब का दीदार कैसे होगा? उस के बारे में ख़ुद अल्लाह पाक ने पारा 16, सूरहए कहफ़ की आयत नंबर110 में इरशाद फ़रमाया:

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

तर्जमा: तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बंदगी में किसी को शरीक ना करे।

इख़्तितामी गुफ़्तगु येह है कि

ऐ आशिकाने रसूल! देखा आप ने कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम में कितने राज़ पोशीदा हैं, यकीनन इन राज़ों को जानने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और बढ़ जाती है लिहाज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इश्क़ को मज़ीद बढ़ाने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को पढ़ें, और

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से ले कर इमामे हुसैन की शहादत तक की पूरी इस्लामी हिस्ट्री पढ़ने के लिए **आसान खुत्बाते मुहर्रम** के नाम से किताब लिख दिया हूँ जो उर्दू और हिन्दी दोनों ज़बानों में है लिहाज़ा इस किताब को हासिल कर के पढ़े इंशा अल्लाह इस की बरकतें आप खुद महसूस करेंगे।

अल्लाह पाक की बारगाह मे दुआ है कि हमें हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के 1500 सालह जशने मिलाद के फ़ैज़ान से माला माल फरमाए आमीन।

मीलाद नामा

ऐ आशिकाने मीलाद! रबीउल अव्वल शरीफ तो क्या आता है हर तरफ़ गोया मौसमे बहार आ जाता है। अल्लाह करीम के प्यारे प्यारे आखिरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीवानों में खुशी की लहर दौड़ जाती है, बूढ़ा हो या जवान हर हक़ीकी आशिके रसूल मुसल्मान गोया दिल की ज़बान से बोल उठता है :

निसार तेरी चहल पहल पर, हज़ार ईदें रबीउल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में, सभी तो खुशियां मना रहे हैं

जब दुन्या में हर तरफ़ कुफ़्रो शिर्क और ज़ुल्मो ज़ियादती का घुप अंधेरा छाया हुवा था, 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ को मक्कए पाक में हज़रते बीबी आमिना के मुबारक मकान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आलम को जगमग जगमग कर दिया। रोती हुई इन्सानियत की आंख जिन की तरफ़ लगी हुई थी, वह अल्लाह पाक के आखिरी नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम जहानों के लिये रहमत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाए।

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रहमतुल्लिल आलमी तशरीफ़ ले आए

सुब्हे बहारां

रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ को सुब्ह सादिक के वक़्त दुन्या में तशरीफ़ ला कर बे सहारों, गम के मारों, दुख्यारों और दर दर की ठोकरें खाने वाले बेचारों की शामे गरीबां को "सुब्हे बहारां" बना दिया।

मुसल्मानो! सुब्हे बहारां मुबारक!
वह बरसाते अन्वार सरकार आए

12 रबीउल अव्वल शरीफ़ को नूर वाले आका सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुन्या में जल्वा गरी होते ही कुफ़्रो ज़ुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान "किसरा" के महल पर ज़ल्ज़ला आया और महल के चौदह कंगुरे (या 'नी वह ताक्चे जो महल

की खूबसूरती के लिये बनाए गए थे वह) गिर गए। ईरान के आतश कदे (यानी वह मकान जहां आग की पूजा की जाती थी) की आग बुझ गई जो एक हज़ार साल से (जल रही थी और) कभी न बुझी थी, "दरियाए सावह" खुश्क हो गया, बुत सर के बल गिर पड़े और का'बे को वज्द आ गया।

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहाँ में फ़ज़्लो रहमत बन कर तशरीफ़ लाए और यक़ीनन अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होने (या'नी उतरने) का दिन खुशी व मसर्रत का दिन होता है। चुनान्चे अल्लाह करीम पारह 11 सूरहए यूनुस की आयत 58 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रहमत और इसी पर चाहिये कि खुशी करें। वह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

अल्लाहु अक्बर ! फ़ज़्लो रहमते खुदावन्दी पर खुशी मनाने का खुद कुरआने करीम हुक्म दे रहा है, और क्या रहमते आलम से बढ़ कर भी कोई अल्लाह पाक की रहमत है ? देखिये मुक़द्दस कुरआन के पारा 17 सूरतुल अम्बियाअ आयत 107 में साफ़ साफ़ एलान है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۱۰۷)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान: और हम ने तुम्हें ना भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये।

सहाबे रहमते बारी है बारहवीं तारीख़
करम का चश्मए जारी है बारहवीं तारीख़

शबे क़द्र से भी अफ़ज़ल रात

हज़रते शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं: "बेशक नबिय्ये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत की रात शबे क़द्र से भी अफ़ज़ल है क्यूँ कि शबे विलादत सरकारे काएनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस दुन्या में जल्वा गर होने

(या 'नी आने) की रात है जबकि लैलतुल क़द्र ताजदारे अरब, महबूबे रब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अता की हुई शब है और जो रात अल्लाह पाक के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत (BIRTH) की वजह से इज़्ज़त वाली बनी हो वह उस रात से ज़्यादा इज्ज़तो एहतराम वाली है जिस ने फ़िरिश्तों के उतरने की वजह से इज़्ज़त पाई है।"

ईदों की ईद

अल्लाह पाक के करम से 12 रबीउल अव्वल मुसल्मानों के लिये ईदों की भी ईद है, यकीनन हुज़ूरे अन्वर जहाँ में शाहे बहरो बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (या'नी ज़मीन और समुन्दर के बादशाह) बन कर जल्वा गर (यानी ज़ाहिर) न होते तो कोई ईद, ईद होती, न कोई शब, शबे बराअत। बल्कि कौनो मकान (यानी दुन्या) की सारी रौनको शान उस जाने जहान, रहमते आलमिय्यान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों की धूल का सदका है।

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

मीलाद और अबू लहब

जब अबू लहब मर गया तो उस के बा'ज़ घर वालों ने उसे ख़्वाब में बुरे हाल में देखा। पूछा : (मरने के बाद) क्या मिला ? बोला : तुम से जुदा हो कर (यानी मर कर) मुझे कोई भलाई नसीब न हुई। फिर अपने अंगूठे के नीचे मौजूद सूराख़ की तरफ इशारा करते हुए कहने लगा : सिवाए इस के, कि इस में से मुझे पानी पिला दिया जाता है क्यूं कि मैंने सुवैबा लौंडी को आज़ाद किया था।

(مُصنّف عَبدُ الرزّاق ج۹ ص۹ حدیث۱۶۶۶۱ و عُمدۃ القاری ج۱۴ ص۴۴ تحت الحدیث ۵۱۰۱)

सुवैबा ने इस्लाम कुबूल किया और सहाबिया बनीं। हज़रते अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी फ़रमाते हैं: इस इशारे का मतलब येह है कि मुझे थोड़ा सा पानी दिया जाता है।

मीलाद और मुसल्मान

हज़रते शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी अलैहि रहमा इस रिवायत के तअल्लुक़ से फ़रमाते हैं : इस हिकायत में मीलाद शरीफ़ मनाने वालों के लिये बड़ी दलील है जो ताजदारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शबे विलादत में खुशियां मनाते और माल खर्च करते हैं, यानी अबू लहब जो कि काफ़िर था जब वह ताजदारे नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत की ख़बर पा कर खुश होने और अपनी लौंडी (सुवैबा) को दूध पिलाने की खातिर आज़ाद करने पर बदला दिया गया तो उस मुसल्मान का क्या हाल होगा जो मुहब्बत व खुशी से भरा हुवा है और माल खर्च कर रहा है। लेकिन येह ज़रूरी है कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ गाने बजे वगैरा से पाक हो । (مدارِجُ النُّبُوَّت ج۲ص۱۹)

जशने विलादत की धूम मचाइये

ऐ आशिकाने मीलाद ! धूमधाम से ईदे मीलाद मनाइये कि जब अबू लहब जैसे काफ़िर को भी विलादत की खुशी करने पर फाएदा पहुंचा तो हम तो मुसल्मान हैं। अबू लहब ने अल्लाह पाक के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निय्यत से नहीं बल्कि सिर्फ अपने भतीजे की विलादत (BIRTH) की खुशी मनाई और अपनी लौंडी सुवैबा को दूध पिलाने के लिये आज़ाद किया इस पर उस को बदला मिला तो हम अगर अल्लाह करीम की रिज़ा के लिये अपने आका व मौला मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत (BIRTH) की खुशी मनाएंगे तो क्यूंकर महरूम रहेंगे ।

शबे विलादत में सब मुसल्मां, न क्यूं करें जानो माल कुरबां
अबू लहब जैसे सख़्त काफ़िर, खुशी में जब फ़ैज़ पा रहे हैं

मीलाद मनाने वालों से सरकार ख़ुश होते हैं

एक आलिम साहिब फ़रमाते हैं:मुझे ख़्वाब में अल्लाह पाक के प्यारे नबी की ज़ियारत हुई, मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या आप को मुसल्मानों का हर साल आप की विलादते मुबारक की खुशियां मनाना पसन्द आता है? इर्शाद फ़रमाया "जो हम से खुश होता है हम भी उस से खुश होते हैं। "

(फतावा रज़्विय्या, जि. 23, स. 754)

विलादत की ख़ुशी में झन्डे

हज़रते बीबी आमिना फ़रमाती हैं : मैंने देखा कि तीन झन्डे नस्ब किये (यानी लगाए) गए। एक मशरिक़ (या 'नी EAST) में, दूसरा मग़रिब (यानी WEST) में, तीसरा का 'बे की छत पर और हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत (BIRTH) हो गई ।(دلائل النبوة لابي نعيم ص ٣٦٣، رقم ٥٥٥ مختصراً)

रूल अमीं ने गाड़ा का'बे की छत पे झन्डा
ता अर्श उड़ा फरेरा सुब्हे शबे विलादत

ऐ आशिकाने मिलाद ! अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस 1500 सालह मिलाद पर खूब खुशियाँ मनाईए और हो सके तो रबीउल अव्वल का चाँद नज़र आते ही अपने अपने घरों में 15 झंडे लगाइए, लाइटिंग कीजिए और सब को बता दीजिए कि हमारे नबी का मिलाद आ गया।

महबूबे रब्बे अक्बर, तशरीफ़ ला रहे हैं
आज अम्बिया के सरवर, तशरीफ़ ला रहे हैं
क्यूं है फ़ज़ा मुअत्तर! क्यूं रोशनी है घर घर
अच्छा ! हबीबे दावर, तशरीफ़ ला रहे हैं
ईदों की ईद आई, रहमत ख़ुदा की लाई
जूदो सखा के पैकर, तशरीफ़ ला रहे हैं
हूरें लगीं तराने, नातों के गुनगुनाने
हूरो मलक के अफ़सर, तशरीफ़ ला रहे हैं
आलम में जो हैं यक्ता, बे मिस्ल हैं जो आक़ा
वह आमिना तेरे घर, तशरीफ़ ला रहे हैं
अत्तार अब खुशी से फूला नहीं समाता
दुन्या में इस के सरवर, तशरीफ़ ला रहे हैं

अल्लाह पाक से दुआ है कि वह हम सब मुसलमानों को मिलाद की बरकतों से मालामाल करे और हर साल मिलाद मनाने की तौफीक़ नसीब करे।

तारीख़ तकमील: 22 october 2021,बरोज़ जुमा

उस्ताद जामिअतुल मदीना फ़ैज़ान सिद्दीक़े अकबर आगरा उत्तर प्रदेश इंडिया

येह जशन है पंद्रह सौ सालह

(वसीम बेख़ुद इंडिया)

आओ सब को बताते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

एक नया सा जोश उभर कर, दुनिया पर छा जाता है
चाँद महे मीलाद का यारो, हम को नज़र जब आता है
फिर फूलें न समाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

इस उम्मत पर रब्बे अकबर, ने ऐसा एहसान किया
इस आलम में पैदा उस ने, नबियों का सुलतान किया
शुक्र बजा हम लाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बुलबुल, कोयल, चिड़िया, मैना, अपनी अपनी रागों में
गीत खुशी के चहक चहक कर, गाते रहते बागों में
फूल भी हँसते जाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

आमिना बीबी के घर से, वह शान के साथ निकलती है
दाई हलीमा गोद में ले के, प्यारे नबी को चलती है
याद वही दिन आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बेखुद अपनी क़िस्मत देखो, उस दिन वह एअजाज़ मिला
हम को हादी, हामी, रहबर, और रब का हमराज़ मिला
तभी तो हम भी मनाते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह

कलाम व सलाम

शायर नुरुल हसन

येह कहती थी घर घर में जा कर हलीमा
मेरे घर में ख़ैरुल वरा आ गए हैं
बड़े औज पर है मेरा अब मुक़द्दर
मेरे घर हबीबे ख़ुदा आ गए हैं

उठी चार सू रहमतों की घटाएँ
मुअत्तर मुअत्तर हैं सारी फ़ज़ाएँ
ख़ुशी में ये जिब्रील नग्मे सुनाएँ
वह शाफ़ेए रोज़े जज़ा आ गए हैं

येह ज़ुल्मत से कह दो कि डेरे उठा ले
कि हैं हर तरफ़ अब उजाले उजाले
कहा जिन को हक़ ने सिराजम्मुनीरा
मेरे घर वह नूरे ख़ुदा आ गए हैं

मुक़र्रब हैं बेशक ख़लीलो नजी भी
बड़ी शान वाले कलीमो मसीह भी
लिए अर्श ने जिन के क़दमों के बोसे
वह उम्मी लक़ब मुस्तफ़ा आ गए हैं

है सुन कर सखी आप का आस्ताना
है दामन पसारे हुए सब ज़माना
नवासों का सदक़ा निगाहे करम हो
तेरे दर पे तेरे गदा आ गए हैं

ख़ुदा के करम से नकीरैन आ कर
कहेंगे ज़ियारत का मुज़्दा सुना कर
उठो बहरे ताज़ीम नूरुल हसन! अब
लहद में रसूले ख़ुदा आ गए हैं

फ़लक की नज़ारो ज़मीं की बहारो

शायर मुहम्मद अली ज़हूरी

फ़लक की नज़ारो ज़मीं की बहारो
सब ईदें मनाओ हुज़ूर आ गए हैं
उठो बे सहारो चलो ग़म के मारो
ख़बर येह सुनाओ हुज़ूर आ गए हैं

अनोखा निराला वह ज़ीशान आया
वह सारे रसूलों का सुल्तान आया
अरे कज कुलाहो अरे बादशाहो
निगाहें झुकाओ हुज़ूर आ गए हैं

हुआ चार सू रहमतों का बसेरा
उजाला उजाला सवेरा सवेरा
हलीमा को पहुँची ख़बर आमिना की
मेरे घर में आओ हुज़ूर आ गए हैं

हवाओं में जज़्बात हैं मरहबा के
फ़ज़ाओं में नग्मात सल्ले अला के
दुरूदों के गजरे सलामों के तोहफ़े
गुलामों सजाओ हुज़ूर आ गए हैं

समाँ है सनाए हबीबे खुदा का
येह मिलाद है सरवरे अंबिया का
नबी के गदाओ सब एक दूसरे को
मुबारक सुनाओ हुज़ूर आ गए हैं

कहाँ मैं ज़हूरी कहाँ उनकी बातें
करम ही करम है येह दिन और रातें
जहाँ पर भी जाओ दिलों को जगाओ
यही कहते जाओ हुज़ूर आ गए हैं

दोनों आलम के सरकार आ जाइए

शायर अल्लामा अर्शदुल क़ादरी

बहरे दीदार मुश्ताक़ है हर नज़र
दोनों आलम के सरकार आ जाइए
चाँदनी रात है और पिछला पहर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

सिदरतुल मुन्तहा अर्शो बागे इरम
हर जगह पड़ चुके हैं निशाने क़दम
अब तो इक बार अपने गुलामों के घर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

शामे उम्मीद का सवेरा हुआ
शहरे तैबा निगाहों का डेरा हुआ
बिछ गए राह में फ़रशे क़ल्बों नज़र
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

सामने जलवा गर पैकरे नूर हो
मुन्किरों का भी सरकार शक दूर हो
कर के तब्दील इक दिन लिबासे बशर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

दिल का टूटा हुआ आबगीना लिए
जज़्बए इश्तियाके मदीना लिए
कितने घाइल खड़े हैं सरे रह गुज़र
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

मेरे गुलशन को इक बार महकाइए
अपने जलवों की बारिश में नहलाइए
दीदए शौक़ को कीजिए बहरा वर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

ता अबद अपनी क़िस्मत पे नाज़ाँ रहें
खाक हो जाएं फिर भी फ़रोज़ाँ रहें
दिल की बज़्में तमन्ना में इक बार गर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

आखिरी वक़्त है एक बीमार का
दिल मचलने लगा शौक़े दीदार का
बुझ ना जाए कहीं येह चरागे सहर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

शामे गुर्बत है और शहर खामोश है
एक अरशद अकेला कफ़न पोश है
खौफ की है घड़ी वक़्त है पुर खतर
दोनों आलम के सरकार आ जाइए

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

इमाम अहमद रज़ा खान (رحمۃاللہعلیہ)

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफाअत पे लाखों सलाम

हम गरीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फकीरों की सर्वत पे लाखों सलाम

जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठा गनी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश ! महशर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौक़त पे लाखों सलाम

डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखों सलाम

मुझ से खिदमत की कुदसी कहें हाँ रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

या नबी सलाम अलैका

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलावा तुल्ला अलैका

आप का तशरीफ़ लाना वक़्त भी कितना सुहाना
जगमगा उठा ज़माना हूरें गाती थीं तराना
या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलावा तुल्ला अलैका

सुब्ह लूँगा शाम लूँगा, तेरा प्यारा नाम लूँगा
क़ब्र से उठते ही आक़ा, तेरा दामन थाम लूँगा
या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलावा तुल्ला अलैका

अस्सलातु वस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह
अस्सलातु वस्सलामु अलैक या हबीबल्लाह
अस्सलातु वस्सलामु अलैक या नबीयल्लाह
व अला आलिका व अस्हाबिका या नूरल्लाह



MAKTABA DARUSSUNNA
Near faizan e madina
block F-1 Tajnagri Phase 2
Taj Ganj Agra 282001
+91 8808693818
shafiqmadani26@gmail.com

₹:50/-

आला हज़रत (रहमतुल्ला अलैह) के इल्मे तक़वीम के शहंशाह होने पर मुँह बोलता सबूत फतावा रज़विया की 26 वीं जिल्द में मौजूद इमामे अहले सुन्नत का इल्मे तक़वीम पर मुश्तमिल रिसाला "नुत्कुल हिलाल बारिखु विलादिलहबीब वल विसाल" का आसान अंदाज़

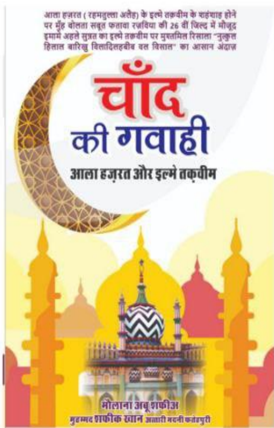
चाँद की गवाही

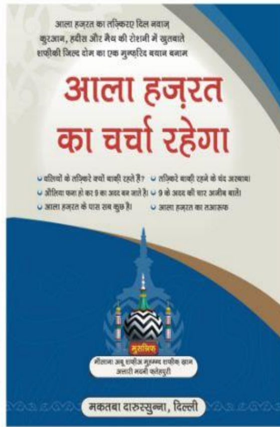
आला हज़रत और इल्मे तक़्वीम

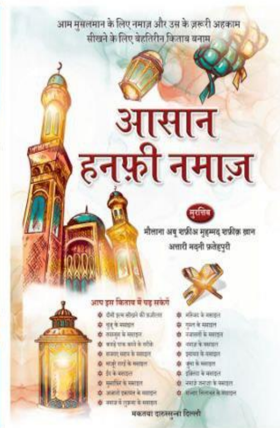


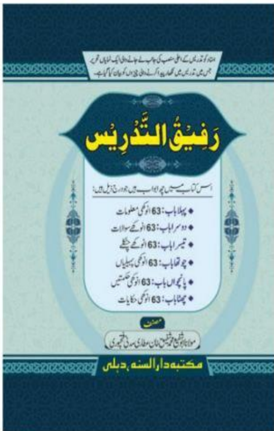
मौलाना अबू शफ़ीअ
मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

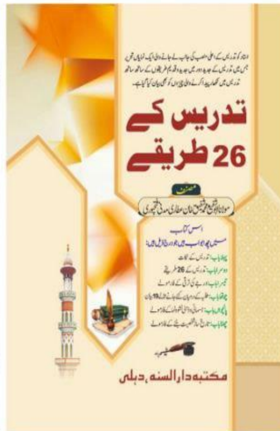
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली


चाँद
की गवाही
आला हज़रत और इल्मे तक़वीम


आला हज़रत
का चर्चा रहेगा
मकतबा दारुस्सुन्ना, दिल्ली

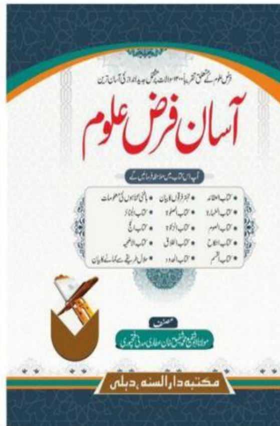

आम मुसलमान के लिए नमाज़ और उस के ज़रूरी अहकाम
सीखने के लिए बेहतरीन किताब बनाम
आसान
हनफ़ी नमाज़
मुरत्तिब
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

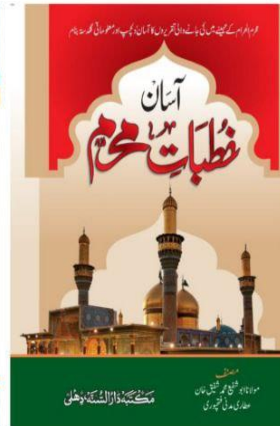

رفیق التدریس
مکتبہ دار السنہ، دہلی


تدریس کے
26 طریقے
مکتبہ دار السنہ، دہلی


कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं "इस औरत को तलाक़ दे दो" आख़िर लड़कियों की पैदाइश में
कुसूर किस का
मर्द का या औरत का
इस्लाम और साइंस की रोशनी में
आप इस किताब में पढ़ सकेंगे
मुरत्तिब
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली


خطبات مصطفائی
و
خطبات شفیقی


آسان فرض علوم
مکتبہ دار السنہ، دہلی


آسان
خطبات محرم
مکتبۂ دار السنۃ دہلی

न.	उनवान	पेज न.
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		


चाँद की गवाही
आला हज़रत का चर्चा रहेगा
आसान हनफ़ी नमाज़
رفیق التدریس
تدریس کے 26 طریقے
कुसूर किस का
آسان فرض علوم
آسان خطبات محرم